गीताञ्जली धारा - २

प्रौढ़ आध्यात्मिक गीताञ्जली

(भारतीय संस्कृति - आध्यात्मिक की महानता एवं व्यापकता)

सृजनकारः कविवर आचार्य श्री कनकनन्दीजी

द्रव्यदाता

श्रीमती लक्ष्मीदेवी गुरुचरणजी जैन, मुम्बई हाईकोर्ट वकील

पंकज-गीत, अम्बुज-लोचन, सन्दीप-पल्लवी, राजीव-सीमा

(पुत्र एवं पुत्रवधू)/बेटी ऋतु जैन - विशाल जैन

ग्रन्थांक - 200 संस्करण - 2011

प्रतियाँ - 1000 मूल्य - 51 रु.

- प्राप्ति स्थान -

धर्म दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा - **श्री छोटूलालजी चित्तौड़ा,**

चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास

उदयपुर (राज.) - 313001, मो. 9783216418

- सम्पर्क सूत्र -

डॉ. नारायणलाल कछारा (सचिव)

55, रवीन्द्रनगर, उदयपुर (राज.) - 313001

फोन नं. (0294) 2491422, मो. 9214460622

E-mail : nlkachhara@yahoo.com

गीताञ्जली रचनाकार - कविवर आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

इन रचनाओं की आवश्यकता - पीड़ा/प्रेरणा

मैं (आचार्य कनकनन्दी) बाल्य विद्यार्थी अवस्था से ही विभिन्न भाषाओं की देश-विदेशों की प्राचीन से लेकर आधुनिक आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, प्राकृतिक, क्रान्तिकारी, कविताओं को पढ़ता-सुनता आ रहा हूँ जिसमें से श्रेष्ठ कविताओं का प्रभाव मेरे जीवन में प्रेरणास्पद है। कुछ वर्षों से हिन्दी सिनेमा के कुप्रभाव तथा कुछ कुकवियों के कारण विशेषतः हिन्दी कविता के स्तर में गिरावट हुई है और हो रही है। ऐसा ही प्रादेशिक भाषाओं की कविताओं में भी कुछ गिरावट हो रही है। जिसका कुप्रभाव भारतीयों के ऊपर पड़ रहा है, इससे भी मुझे पीड़ा हो रही है और श्रेष्ठ कविताओं की आवश्यकता को अनुभव कर रहा हूँ। वैसे तो मैं विद्यार्थी जीवन से ही विदेशी साहित्य आदि का अध्ययन कर रहा हूँ परन्तु 2000 से विदेशी वैज्ञानिक चैनलों का विशेष अध्ययन कर रहा हूँ। इससे विदेशी वैज्ञानिकों की उदारता, व्यापकता, प्रगतिशीलता, अहिंसा, शान्ति, पर्यावरण सुरक्षा, निष्पक्षता, निडरता, नम्रता, जिज्ञासा, सहज-सरलता आदि से मुझे प्रेरणा मिल रही है। 2010 को हमारा ससंघ का चातुर्मास सीपुर अतिशय क्षेत्र में हुआ। वहाँ के एकान्त, शान्त, स्वच्छ, शुद्ध वातावरण में मेरी उपरोक्त आवश्यकता पीड़ा-प्रेरणा ने मूर्तरूप लेकर इन कविताओं को रचा है। कविताओं के रागों को सही रूप देने में संघस्थ साधु-साध्वी, ब्रह्मचारिणियों का महत्वपूर्ण सहयोग मिल रहा है। इन सबको, अर्थ सहयोगियों को मेरा यथायोग्य प्रतिनमोऽस्तु, आशीर्वाद है। प्रस्तुत कृति में कुछ कविताओं का प्रकाशन हो रहा है। शेष कविताओं का प्रकाशन आगामी कृतियों में शीघ्र होगा। इन सब कविताओं के माध्यम से स्व-पर-विश्व में आध्यात्मिक क्रान्ति-शान्ति हो, ऐसी शुभ मंगल कामनाओं के साथ-

विशेष सूचनाः- किसी भी कविता में राग सम्बन्धी तृटियाँ हो तो सदाशयता से राग विशेषज्ञ उसे संशोधित करते हुए गायेंगे एवं हमें सूचित करेंगे।

आचार्य कनकनन्दी

विषायानुक्रमणिका

1. मैं मूक-बधिर-एकान्तवासी क्यों बनता जा रहा हूँ ?
(स्व-पर-विश्वकल्याण के न्यूनतम प्रयास से अधिकतम सफलता के सूत्र)

2. आध्यात्मिक सार-आचार्य कनकनन्दी

परिच्छेद - 1

संस्कृति (भारतीय संस्कृति से प्राप्त शिक्षाएँ)

अ.क्र.	विषय व गीत क्रमांक	पृ.क्र.
१.	भारतीय संस्कृति में सबका सम्मान एवं सम्बोधन !	18
2.	आर्य संस्कृति जननी	21
3.	मेरे देश की संस्कृति	22
4.	विद्या तेरी धारा अमृत	23
5.	हमारी संस्कृति की दशा-दिशा-आशा (जागरण गीत-मातृ वन्दन)	24
6.	हे भारतीय ! पुनः जागो-स्वगौरव प्राप्त करो ! (राष्ट्रीय आह्वान गीत-प्रबोधन गीत)	25
7.	ग्रामीण प्रकृति एवं संस्कृति	26
8.	भो इण्डियन इडियट को त्यागकर विश्वगुरु बनो !	27
9.	अपनी महत्ता हे मानव ! तुम तो मानो	29
10.	मानव तेरा रूप है अनेक !	31
11.	शिक्षा-संस्कृति-ज्ञान-विज्ञान के आदि प्रवर्तक:भगवान् आदिनाथ	32
12.	आर्य भाषा की जननी की गरिमा एवं अवहेलना	33
13.	राष्ट्रीय झण्डा/प्रतीक हमें सिखाता है !	35
14.	राष्ट्रीय प्रतीक हमें सिखाये !	36

15.	आदर्श जीवन-चर्या	37
16.	हो भारतीय संस्कृति युक्त जापानी कार्य पद्धति	38
17.	स्वास्थ्य एवं शान्ति प्राप्ति के उपाय	38
18.	महापुरुष की महानता, उनका विरोध तथा आराधना	39
19.	पर्व से पवित्र बने न कि पतित (पालनीय एवं त्यजनीय पर्व)	41
20.	पूजा < सेवा-दान < त्याग की महिमा	42
21.	गृहस्थाश्रम (परिवार संस्था)	43
22.	एकता में शक्ति	44
23.	मेवाड़-बागड़ संस्कृति की विशेषता	45
24.	पावन व पतिता नारी	46
25.	स्व पवित्र भाव ही स्वधर्म तथा स्व अपवित्र भाव ही विधर्म (स्वधर्म से शान्ति-विधर्म से अशान्ति)	47
26.	यदि यह न कर सको तो वह करो	48
27.	सुभाव से जीवन निर्माण एवं निर्वाण	49
28.	विश्व शान्ति पाठ पढ़ाते हैं-भारतीय सूत्र (संस्मरण गीत) (वैश्विक ज्ञान-विज्ञान है भारतीय ज्ञान)	50

परिच्छेद - 2

आध्यात्मिक (आध्यात्मिक की महानता से प्राप्त शिक्षाएँ)

29.	अन्तर मम विकसित करो (आध्यात्मिक प्रार्थना)	53
30.	स्वात्म स्मरण:अध्यात्म रमण	54
31.	आध्यात्म वन्दना	55
32.	मेरा विश्वरूप	56
33.	वन्दे आत्म आनन्दम् (अपूर्वकरण का स्वागत)	57
34.	धन्य हमारे भाग्य जगे हैं (मेरी (आचार्य कनकनन्दी की) भावना एवं कार्य पद्धति)	58

35. मन विजयी सो विश्वजयी (सूत्रात्मक आध्यात्मिक रहस्यवादी कविता) 59
36. स्वात्म चिन्तन 60
37. मेरा अन्तिम लक्ष्य : सच्चिदानन्द 61
38. मेरा लक्ष्य : सत्य शिव सुन्दर 62
39. आत्म द्रव्य है मेरा - सत्य धर्म है मेरा 63
40. स्वात्मा ही सुख का भण्डार 64
41. पवित्र चाहूँ हे देव ! मम अन्तर 64
42. मेरा स्वभाव एवं विभाव 66
43. अपना-पराया व आत्मीय 67
44. भाव से भाग्य एवं भविष्यत् 68
45. गति-आगति-निर्गति (मुक्ति) (मेरा संसार परिभ्रमण एवं निर्वाण) 69
46. वह भाव है सच्चा महान् 69
47. मेरी बड़ी दिव्य कहानी 70
48. मेरा मन आत्म चिन्तने सुख पावे 71
49. कभी है मेरा लक्ष्य पूरण होगा 72
50. कब आदर्श जीवन होगा 73
51. मधुरं-मधुराति-मधुरम् 74
52. व्यवहार एवं निश्चय मोक्षमार्ग 74
53. ओ हो मेरी भावना (मैं आगे-पीछे शून्य हो जाऊँ) 76
54. हम अनन्त आकाश के पंछी (रहस्यवादी आध्यात्मिक कविता) 77
55. सुध्यान के लिए स्व-प्रेरणा 78
56. ध्यान पद्धति एवं फल 79
57. आत्मिक धर्म मुझे प्राण से भी प्यारा 80

58. दूसरों से प्रभावी हुआ न करो (दूसरों से अप्रभावी रहने की कला) 81
59. वह शुद्ध भाव है मेरा (आध्यात्मिक चिन्तन) 82
60. क्रिया की प्रतिक्रिया के बिना विकास (विकास के आध्यात्मिक नियम) 83
61. परपीड़क का विनाश एवं साम्यभावी का विकास (साम्यभाव की महिमा) 85
62. ध्यान-सूत्र (नित्य स्मरणीय-आचरणीय स्तोत्र-संकीर्तन) 88
63. कुध्यान के कुफल तथा सुध्यान के सुफल 89
64. शुभ भाव से अशुभ त्याग एवं शुद्ध की प्राप्ति (भाव-गीत) 90
65. सार्वभौम नैतिक-आध्यात्मिक सूत्र 91
66. दुनियाँ के दबाव से परे (आध्यात्मिक-दार्शनिक-वैज्ञानिक रहस्यवादी कविता) 94
67. विकास के हेतु मुझसे ही मेरी प्रतिस्पर्धा 97
68. सत्य व साम्य हमें प्राणों से प्यारा 99
69. उत्थान-पतन तथा शाश्वतिक उत्थान 100
70. मेरा ही मुझसे महासंग्राम 102
71. भाव ही भाग्य एवं भावी निर्माता (भाव-गीत) 103
72. स्व का विश्वदर्शन (भाव भाग्य एवं भावी) (आध्यात्म रहस्यवादी कविता) 104
73. प्रसिद्धि से अशन्ति तो सिद्धि से शान्ति 106
74. सम्पूर्ण विकास के सूत्र 107

राग संशोधन में विशेष सहयोगी - 1. मुनि सुविज्ञसागर 2. मुनि आध्यात्मनंदी 3. आर्यिका क्षमाश्री माताजी 4. ब्र. फाल्गुनी दीदी 5. ब्र. विधि दीदी

❑

मैं मूक-बधिर-एकान्तवासी क्यों बनता जा रहा हूँ ?

(स्व-पर-विश्वकल्याण के न्यूनतम प्रयास से अधिकतम सफलता के सूत्र)

- आचार्य कनकनन्दी

(1) मेरा मूक होने के कारण-

प्रथमतः शुद्ध स्वरूप से मैं सच्चिदानन्द स्वरूप अनादि-अनन्त-शाश्वतिक चैतन्य स्वरूप अमूर्तिक तत्त्व हूँ। मैं अनन्त ज्ञान, दर्शन, सुख-शान्ति-आनन्द, शक्ति का अखण्ड-निर्विकार-निष्कम्प-निःशब्द चैतन्य घन स्वरूप हूँ, अतः मेरा निज स्व रूप ही अनिर्वचनीय अनुभव गम्य है। अतः निश्चयतः मैं न बोल सकता हूँ, न ही मुझे कोई सुन सकता है। मेरे अनादि प्रवाहमान अविद्या, अज्ञान, मोह, राग-द्वेषात्मक भाव-व्यवहार-कम्पन से पौद्गलिक-भौतिक कर्म सम्बन्ध से मैं विभिन्न भौतिक शरीर से आबद्ध होकर भाषा पर्याप्ति तथा तदनुकूल शारीरिक आङ्गोपाङ्ग को प्राप्त करके अनात्म रूप भाषा प्रयोग कर रहा हूँ। इस भाषा प्रयोग से जो संकल्प विकल्प कम्पन होता है उससे पुनः कर्म बन्ध होता है। ऐसे कर्मबन्ध रहित होने के लिए भी मैं मूक (मौन, भाषा समिति, वचन गुप्ति) बनता जा रहा हूँ।

द्वितीयतः प्रायः सब कोई स्वयं को ज्ञानी, निर्दोष, श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, आदर्श मानते हैं तथा दूसरों को अज्ञानी, दोषी. निकृष्ट, नीच, अनादर्श मानकर दूसरों को अच्छा बनाने के लिए सलाह-उपदेश-निर्देश देते रहते हैं। इसके साथ-साथ सब कोई पढ़ाई, व्यापार, नौकरी, कृषि, घर-गृहस्थी के कार्य, भोग-उपभोग, फैशन-व्यसन आदि कार्य में इतने अस्त-व्यस्त-मस्त हैं कि किसी के पास समय ही नहीं है। ऐसी परिस्थिति में मुझे दूसरों के समय नष्ट न करके मौन रहकर ही सबके उपदेश का लाभ उठाकर स्वयं के कल्याण करने में व्यस्त-मस्त-स्वस्थ्य रहना सर्वोत्तम है। विशेष जिज्ञासु मेरी ''मौन रहो या सत्य (हित-मित-प्रिय) कहो'' कृति का अध्ययन करें।

(2) मेरा बधिर होने के कारण -

प्रथमतः पूर्वोक्त कारणों के साथ-साथ मेरा शुद्ध स्वरूप कहने-सुनने से परे है, अनुभवगम्य है। अतः मैं मौन रहकर बधिर होकर अनुभव करने का प्रयास कर रहा हूँ। द्वितीयतः प्रायः सब लोग संकीर्ण, स्वार्थपूर्ण, असत्य, मोह-माया-राग-द्वेष-अज्ञानता से युक्त, अनुभव शून्य, परनिन्दा, गर्वोक्ति, विकथा, संक्लेशकारी, रूढ़िवादी, असन्दर्भित, अनुपयुक्त, सार रहित, अहित, अप्रिय, कठोर, कर्कश, मर्मभेदी अतिकथन करते हैं जो कि मेरे लिए बाल्यकाल से ही सुनने योग्य नहीं रहा है। जब मैं बाल्यकाल से ही नहीं सुनता तो फिर अभी मेरे जैसे स्व-पर-विश्व-कल्याण के साधक जिसे बहुत कार्य करना अवशेष है वह ऐसे स्व-पर-विश्वकल्याण के लिए अनुपयुक्त-अहितकारी वचन कैसे सुनेगा? अतः मैं 'बधिर' जैसी प्रवृत्ति को वृद्धि कर रहा हूँ। विशेष परिज्ञान के लिए मेरी ''तत्त्वानुचिन्तन, सर्वधर्म समता से विश्वशान्ति'' कृति का अध्ययन करें।

(3) मेरा एकान्तवासी होने के कारण-

प्रथमतः पूर्वोक्त कारणों के साथ-साथ मेरा शुद्ध स्वरूप समस्त सचित्त (समस्त जीवों के प्रति मोहासक्ति) अचित्त (समस्त भौतिक वस्तु के प्रति मोहासक्ति) सम्बन्ध से रहित एक मौलिक-शुद्ध-बुद्ध-आनन्दकन्द रूप चैतन्य तत्त्व है, द्वितीयतः प्रत्येक जीव स्व-स्वभाव-कर्म-उद्देश्य के अनुसार स्वतः रूप से परिणमन/प्रवर्तन/कार्य करने में लीन है। मेरा भाव-कर्म-उद्देश्य प्रायः दूसरों से भिन्न, विपरीत भी है। ऐसी परिस्थिति में मेरा एकान्तवास ही स्व-पर विश्व कल्याण के लिए केवल आवश्यक या विधेय ही नहीं अपितु अनिवार्य है इसलिए तो सत्ता-सम्पत्ति-प्रसिद्धि-प्रजा-सुन्दरता-शक्ति से युक्त शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ आदि तीर्थंकर भी सर्वसंन्यास लेकर एकान्तवनादि प्रदेशों में जाकर स्व-पर-विश्व कल्याण करने में समर्थ हो पाये। उन्होंने भी मूक (मौन), बधिर एवं एकान्तवासी होकर ही ऐसा महान् कार्य कर पाये, अन्यथा सत्ता-सम्पत्ति-प्रजा आदि से युक्त होकर भी नहीं कर पाते। यथार्थ से कहें तो ऐसा करने की समर्थता ही नहीं थी। यह समर्थता तो उपर्युक्त साधन से ही प्रगट हुई भले वह समर्थता पहले भी सुप्त-गुप्त रूप में स्वयं में ही निहित थी।

भीड़ में भेड़चाल (अन्धानुकरण), भेड़ियाचाल (शोषण प्रवृत्ति) होने से एकलाचाल (सत्य-समता-शान्ति-सद्भाव-सद्व्यवहार की प्रवृत्ति) नहीं होती है। इसलिए तो देश-विदेशों के प्रायः हर प्रकार के महापुरुष महान् कार्य के पथ में स्वयं ही एकला ही चलते हैं भले बाद में दूसरों के लिए अनुकरणीय मार्ग बन जाता है। एकला चलने से आकर्षण-विकर्षण, राग-द्वेष, भेद-भाव, अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा आदि में समय-शक्ति-बुद्धि आदि का अपव्यय या दुरुपयोग नहीं होता है जिससे महान् कार्य करने में सफलता शीघ्रता से, सहजता से प्राप्त होती है। यह है स्व-पर-विश्वकल्याण के न्यूनतम प्रयास से अधिकतम सफलता के सूत्र। विशेष परिज्ञान के लिए मेरी ''एकला चलो रे'' कृति तथा ''अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा से रहित विकास'' आलेख का अध्ययन करें।

संक्षिप्ततः कहें तो मेरा सर्वोच्च परम लक्ष्य है स्व-आध्यात्मिक विकास के माध्यम से स्वयं को पूर्णतः सत्य-समता-शान्तिमय बनाना है। इसके साथ-साथ आनुसङ्गिक रूप से विश्व भी ऐसा बने ऐसी पवित्र भावना है। परन्तु देश-विदेशों के प्राचीन से आधुनिक साहित्य-लेख-समाचार के साथ-साथ मेरा दीर्घकालीन लाखों-करोड़ों व्यक्तियों का अनुभव है कि प्रायः अधिकांश व्यक्तियों के भाव-उद्देश्य-व्यवहार उपर्युक्त मेरे भाव-उद्देश्य-व्यवहार से प्रायः विपरीत हैं भले वे किसी भी जाति-धर्म-क्षेत्र-वय के क्यों न हो। इतना ही नहीं लौकिक या धार्मिक शिक्षा-दीक्षादि सहित या रहित प्रायः अधिकांश व्यक्तियों से भी मेरा उद्देश्य आदि भिन्न या विपरीत है। अतः मेरा परम कर्त्तव्य है-मेरे उद्देश्यादि को प्राप्त करने के लिए मूक-बधिर-एकान्तवासी होकर सतत प्रबल पुरुषार्थ करना है। इसके बिना और कोई **''न्युनतम प्रयास से अधिकतम सफलता प्राप्त करने के सूत्र''** सम्भवतः सम्भव नहीं है।

आत्मस्वरूप एवं परस्वरूप

एकोऽहं निर्ममः शुद्धो ज्ञानी योगीन्द्रगोचरः।
बाह्यः संयोगजा भावा मत्तः सर्वेऽपि सर्वथा।। (27)

द्रव्यार्थिक नय से मैं एक हूँ, मैं ही पूर्व परावस्थाओं में अनुश्रुत रूप में रहने के कारण मैं एक हूँ, यह मेरा है, मैं इसका हूँ इसी प्रकार अभिप्राय से शून्य होने के कारण निर्मम हूँ। शुद्ध नय की अपेक्षा द्रव्य कर्म, भावकर्म से निर्मुक्त होने के कारण मैं शुद्ध हूँ। स्व-पर प्रकाश होने के कारण मैं ज्ञानी हूँ। अनन्त पर्यायों को युगपत् जाननेवाले केवलज्ञानी और श्रुतकेवली के शुद्धोपयोग स्वरूप ज्ञान का विषय हूँ। मैं स्वसंवेद्य के द्वारा जानने योग्य हूँ। जो द्रव्यकर्म के सम्बन्ध से प्राप्त भाव तथा देह आदि हैं वे सर्व मेरे से सर्वथा सर्व प्रकार से बाह्य हैं, भिन्न है।

समीक्षा :- इस श्लोक में आचार्य श्री ने स्वयं को अनुभव करने के/ध्यान करने के/प्राप्त करने के कुछ उपाय बताये हैं। भले व्यवहार नय से द्रव्य कर्म आदि के संयोग से जीव में विभिन्न वैभाविक भाव तथा शरीर आदि पाये जाते हैं तथापि शुद्ध द्रव्यार्थिक नय से यह आत्मा के स्वभाव नहीं है। ये सब पर संयोगज अशुद्ध भाव है। आचार्य कुन्दकुन्द देव ने समयसार में कहा भी है-

अहमिक्को खलु सुद्धो णिम्मओ णाणदंसणमग्गो।
तह्मि ठिओ तच्चित्तो सेस सव्वे खय णेमि।।73।।

टीका-यह मैं आता हूँ सो प्रत्यक्ष अखंड, अनंत, चैतन्य मात्र ज्योति हूँ। अनादि, अनंत, नित्य उदयरूप, विज्ञानघनस्वरूप से तो एक हूँ और समस्त कर्त्ता, कर्म, कारण, सम्प्रदान, आदान, अधिकरण स्वरूप जो कारकों का समूह उसकी प्रक्रिया से पार उतरा दूरवर्ती निर्मल, चैतन्य अनुभूति रूप से शुद्ध हैं। जिनका द्रव्य स्वामी है ऐसे जो क्रोधादि भाव उनकी विश्व रूपता (समस्तरूपता) उनका स्वामित्व से ... ही अपने नहीं परिणमने के कारण उनसे ममता रहित हूँ वस्तु का स्वभाव सामान्य विशेष स्वरूप है इसीलिए चैतन्यमात्र तेज पुंज भी वस्तु है इस कारण सामान्यविशेष स्वरूप है इसीलिए चैतन्य मात्र तेज पुंज भी वस्तु है इस कारण सामान्यविशेष स्वरूप जो ज्ञानदर्शन उनसे पूर्ण हूँ। आकाशादि द्रव्य की तरह परमार्थ स्वरूप वस्तु विशेष हूँ। इसलिए मैं इसी आत्मस्वभाव में समस्त पर द्रव्य से प्रवृत्ति की निवृत्ति करके निश्चल स्थित हुआ समस्त परद्रव्य के निमित्त से जो विशेष रूप

चैतन्य में चंचल कल्लोलें होती.. भी, उनके विरोध से इस चैतन्य स्वरूप को ही अनुभव करता हुआ अपने ही अज्ञान से आत्मा में उत्पन्न क्रोधादि भावों का क्षय करता हूँ ऐसा आत्मा में निश्चय कर तथा जैसे बहुत काल का ग्रहण किया जो जहाज या वह जिसने.. छोड़ दिया है, ऐसे समुद्र के भँवर की तरह ही शीघ्र ही दूर.. किये हैं समस्त विकल्प जिसने, ऐसा निर्विकल्प, अचलित निर्मल आत्मा को अवलम्बन करता विज्ञानघन होता हुआ यह आत्मा आस्रवों से निवृत्त होता है।

आध्यात्मिक सार

– आचार्य कनकनन्दी

(1) भोजन से पानी, पानी से प्राणवायु का महत्त्व जिस प्रकार जीवन जीने के लिए उत्तरोत्तर महत्वपूर्ण है उसी प्रकार सफलता–विकास–शान्ति के लिए भौतिकता (धन, शिक्षा, साधन, सत्ता, प्रसिद्धि) से नैतिकता, नैतिकता से आध्यात्मिकता का स्थान उत्तरोत्तर महत्त्वपूर्ण है। भले प्राणवायु के समान आध्यात्मिकता सरल–सहज–प्राकृतिक–प्रचुर उपलब्ध है।

(2) चश्मा से देखने वाला भी जिस प्रकार कि न ही केवल चश्मा से देखता है अपितु आँख की शक्तिभूत चेतना से देखता है उसी प्रकार यन्त्र, शरीर, इन्द्रिय, मन से ज्ञान या सुखानुभव होता है वह भी मूलभूत चेतना शक्ति (आत्मा) की ही अभिव्यक्ति है। अन्यथा शव को भी ज्ञान, सुखानुभव हो जाता।

(3) आध्यात्मिकता केवल ग्रन्थ, मत, पन्थ, भाषण, सम्भाषण, तर्क–वितर्क, धार्मिक क्रियाकाण्डों में नहीं होती है किन्तु आत्मा की पवित्रता, समता, समीपता, लीनता, एकाग्रता, वीतरागता, सहज–सरलता, क्षमा, मृदुता, नम्रता, निस्पृहता, तृप्ति, सन्तुष्टि आदि में है क्योंकि यह सब ही आत्मा के गुणधर्म है। अधिक आत्मिकता=आत्मा के समीप/आत्मा के स्वरूप हैं।

(4) अनन्त आकाश में जिस प्रकार अणु से लेकर ब्रह्माण्ड तक समाहित है

उसी प्रकार आध्यात्मिकता में नीति, नियम, न्याय, सदाचार, सद्विचार, रत्नत्रय 10 धर्म, 12 अनुप्रेक्षायें, 12 तप, विश्वमैत्री, विश्वशान्ति, स्व–पर–विश्व कल्याण आदि गर्भित हैं, अतः जो आत्मा से पवित्र है उसके उपर्युक्त गुण स्वयमेव सध जाते हैं उन्हें अलग–अलग से साधना नहीं करनी पड़ती है।

(5) आत्मा की पवित्रता ही आध्यात्मिकता है। आत्मा की पवित्रता से भाव में पवित्रता आती है जिससे व्यवहार, भोजन, वचन आदि में भी पवित्रता आती है जिससे स्वयं को शान्ति मिलती है जिससे वह दूसरों को भी शान्ति बाँटता है।

(6) आध्यात्मिकता का प्रमुख अन्तरंग पक्ष है आध्यात्मिक ज्ञानानन्द, इसका गौण पक्ष बहिरंग पक्ष है इसे प्राप्त करने के लिए राजा–महाराज–चक्रवर्ती तक सम्पूर्ण सत्ता–सम्पत्ति–प्रसिद्धि–परिवार तक को त्याग करते हैं तथा सत्तादि सम्पन्न राजादि आध्यात्मिक महापुरुष को अपना आदर्श/लक्ष्य/गुरु मानव उनकी सेवा–प्रार्थना करते हैं। इससे स्वतः सिद्ध होता है कि भौतिकता से आध्यात्मिकता श्रेष्ठ–ज्येष्ठ–प्राप्य है। क्योंकि अधिक शक्तिशाली चुम्बक कम शक्तिशाली चुम्बक को खींचता है। इससे सिद्ध होता है कि जो भौतिकता से शिखर पुरुषों के पास (ज्ञानानन्द) नहीं है वह आध्यात्मिक सत्पुरुषों के पास होता है। किसी भी देश, धर्म में जितने आध्यात्मिक पुरुष पूजे जाते हैं उतने सत्ता आदि सम्पन्न व्यक्ति नहीं।

(7) आध्यात्मिक विकास क्रम से ही दानव से मानव, मानव से महामानव, महामानव से महात्मा, महात्मा से परमात्मा बनते हैं तो आध्यात्मिक पतन से नर से नरासुर, नरासुर से नारकी बनते हैं।

(8) आत्मा की पवित्रता (आध्यात्मिकता) से मन पवित्र होता है जिससे व्यवहार, वचन, भोजन आदि पवित्र होते हैं जिससे तन–मन–आत्मा स्वस्थ, सबल, सक्रिय, कार्यक्षम होते हैं जिससे सम्पूर्ण विकास सहज साध्य है।

(9) आत्मा अभौतिक होने से आध्यात्मिकता का ज्ञान, पहचान, लक्षण, साक्ष्य, प्रमाण, उदाहरण, मूल्य, शोध–बोध–खोज–आविष्कार–नवनिर्माण आदि

पूर्णतः किसी भी प्रकार के प्राकृतिक भौतिक तत्त्व, यन्त्र, उपकरण, मुद्रा, शरीर, इन्द्रिय आदि से असम्भव है चेतना की जागृति के अतिरिक्त। इसलिए तो आध्यात्मिकता (भले प्रत्येक जीव ही आत्मा है) की उपलब्धि दुर्लभ है क्योंकि चेतना (भले चेतना प्रत्येक जीव का स्वभाव है) की जागृति दुर्लभ है। जैसा कि पत्थर, मिट्टी, कोयला, हीरा आदि सब भौतिक तत्त्व होने पर भी कोहिनूर हीरा दुर्लभ है।

(10) आध्यात्मिकता में धनी-गरीब, शत्रु-मित्र, उच्च-नीच, जन्म-मरण, भौतिक लाभ-अलाभ, प्रसिद्धि-अप्रसिद्धि में कोई अन्तर नहीं होता है। क्योंकि यह सब भौतिक परिस्थितियाँ है किन्तु आध्यात्मिक परिस्थितियाँ नहीं है। जैसा कि बादल के विभिन्न आकार-प्रकार से आकाश अप्रभावी होता है।

(11) अनादि अनन्त काल में ब्रह्माण्ड के प्रत्येक जीव भौतिकता से संश्लेषित होकर जन्म, जीवन, प्रजनन, भोजन, मरण, सुख-दुःख, जानना, मानना, अनुभव करना आदि करने से अधिकांश धर्म, दर्शन, विज्ञान, नीति, नियम, कानून, परम्परा, लेन-देन, मूल्यांकन, उदाहरण तथा उसे मानने-प्रयोग करने वाले भी भौतिक प्रधान होते हैं। इसलिए तो सूक्ष्म जीवाणु-रोगाणु से लेकर चतुरिन्द्रिय जीव तथा पञ्चेन्द्रिय में उन्नत प्रजाति के प्राणी मानव में भी अधिकांश मानव भौतिकवादी, भौतिकप्रेमी, भौतिक तृष्णा वाले, भौतिकता के लिए अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, चोरी, मिलावट, शोषण, आक्रमण, हत्या, युद्ध करने वाले हैं। भारतीय दर्शन में चार्वाक दर्शन, पाश्चात्य दर्शन, आधुनिक विज्ञान ही भौतिकवादी नहीं है परन्तु आध्यात्मवाद का ढोंग करने वाले भी चार्वाक आदि के समान भौतिकवादी हैं। इतना ही नहीं कुछ ढोंगी आध्यात्मवादी तो भौतिकवादी वैज्ञानिकों से भी अधिक अनैतिक भाव-व्यवहार करते हैं।

(12) कुछ आध्यात्मिक साधकों के आहार, व्यवहार भौतिकवादी के समान हो सकते हैं तथापि दोनों में महान् अन्तर है। यथा-भौतिकवादी खाने के लिए-भोग करने के लिए या जीने के लिए खाता है परन्तु आध्यात्मिक साधक आध्यात्मिक साधना के लिए खाता है। जैसा कि दयालु डॉक्टर रोगी को निरोग करने के लिए छुरादि का प्रयोग करता है तथा एक क्रूर आतन्कवादी भी छुरादि का प्रयोग करता

है। उपकरण एकसा होने पर भी लक्ष्य, भावना, पद्धति में अन्तर होने से दोनों के प्रयोग में महान् अन्तर हो जाता है।

(13) यथार्थ आध्यात्मिक साधक अन्याय, अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार, कुकृत्य, कुविचार, अहितकर वचन, मांसाहार, नशीली वस्तु प्रयोग, ईर्ष्या-द्वेष, कूट-कपट, मोहासक्त, भोगविलासी, दूसरों को कष्ट देने वाला, प्रसिद्धि चाहने वाला, भेद-भाव करने वाला नहीं होता है।

(14) आध्यात्मिक साधक वित्तरागी नहीं वीतरागी होता है, भेद-विज्ञानी होता है किन्तु भेद-भाव करने वाला नहीं, आध्यात्मिक सुख का आकांक्षी होता है भोगाकांक्षी नहीं, आत्मगौरवशाली होता है अहंकारी नहीं, सरल-सहज-समता-सहिष्णु-क्षमा-विनम्र-गुणग्राही होता है न कि भोंदू-जड़-आलसी-भीरू-कायर-चापलूस, सांसारिक बन्धन से दूर होते हैं न कि पलायनवादी, पाप से डरते हैं न कि डरपोक, पाप से निवृत्त होते हैं किन्तु पापी से भी घृणा नहीं करते हैं।

(15) आध्यात्मिक चेतना रूपी ज्योति के प्रज्ज्वलित होने पर बिना पुस्तकीय जानकारी से भी हित-अहित, करणीय-अकरणीय, हेय-उपादेय, ग्रहणीय-त्यजनीय का ज्ञान हो जाता है परन्तु इस ज्योति के बिना पुस्तकीय जानकारी, शिक्षा, सलाह, धार्मिक क्रियाकाण्ड से भी उपर्युक्त ज्ञान नहीं हो पाता है। जैसा कि बुझे हुए दीपक या दीपक के चित्र अथवा प्रकाश की चर्चा आदि से भी प्रकाश प्राप्त नहीं होता है।

(16) भौतिक सम्पत्ति, भाषा, परम्परा, ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा दूसरों से प्राप्त कर सकते हैं, शरीर भी माता-पिता के रज-वीर्य से मिलता है परन्तु आध्यात्मिकता को स्वयं ही प्राप्त करना पड़ता है।

(17) आध्यात्मिकता ज्योति की जागृति के पहले स्वकृत कुभाव-व्यवहार-वचन आदि को जान पाता है, मान पाता है, त्याग कर पाता है जो कि अन्य किसी भी उपाय से पूर्णतः सम्भव नहीं हो पाता है। ऐसे व्यक्ति अन्य के कुकृत्य को दूर करने के लिए यथायोग्य पुरुषार्थ करता है परन्तु उन्हें कष्ट देने का कुभाव-व्यवहार-

वचन नहीं करता है। जो धर्म के नाम पर दूसरे धर्मावलम्बियों से कुभाव-व्यवहार करता है वह यथार्थ से अधर्मी है।

(18) आध्यात्म आकाश के समान अनन्त, सबको स्थान देने वाला होने पर भी निर्लिप्त होता है अतः आध्यात्मिक के साधक भी आध्यात्मिक के गुणों को ग्रहण कराता जाता है जिससे आकाश के जैसे उदार, निर्लिप्त होता जाता है।

(19) $E=MC^2$ के अनुसार जब Mass (स्कन्ध) ऊर्जा में परिणमन (सूक्ष्मता, शुद्धता, शक्ति) कर लेता है तब उसकी शक्ति-गति अधिक हो जाती है उसी प्रकार जब जीव अनैतिकता से नैतिक, नैतिकता से धार्मिक तथा धार्मिकता से आध्यात्मिक बन जाता है तो उसकी शक्ति-गति (ज्ञान, आनन्द, शान्ति, प्रभाव) बढ़ जाते हैं।

(20) योग्य बीज जिस प्रकार कि योग्य वातावरण को प्राप्त करके विशाल वृक्ष बन जाता है उसी प्रकार जीव अन्तरंग-बहिरंग कारणों से आध्यात्मिक बन करके परमात्मा बन जाता है। ('अहं ब्रह्मोस्मि' 'सव्वे सुद्धा हु सुद्धणया' आदि आध्यात्मिक महासूत्र यह ही बता रहे हैं।

(21) चेतना से युक्त जीव इन्द्रिय, मन के द्वारा प्रकाश, चश्मा, यंत्र आदि से जानता है परन्तु चेतना रहित मृत जीव चर्म, आँख, कान, शरीर मन (द्रव्यमन) के द्वारा प्रकाश, चश्मा, यन्त्रादि से भी नहीं जान पाता है इससे सिद्ध होता है कि चेतना (आत्मा) ही यथार्थ से जीव है जो कि जानता है। इसलिए प्रत्येक जीव के स्व-स्व आत्मा ही प्रत्यक्ष/साक्षी/निकटतम/आत्मीय/अनुभव करने वाला है। तथापि आध्यात्मिक चेतना की जागृति बिना (मोह सहित) जीव स्वयं को भी नहीं जान पाता है जैसा कि आँख स्व को देख नहीं पाती है। ऐसा जीव स्वयं से अनजान होकर स्व-उपकार के परिवर्तन से स्व-पर अपकार करते हुए भी स्वयं को महान् मानकर घमण्ड करता है।

(22) जिस प्रकार कि टी.वी., कम्प्यूटर, मोबाइल आदि विद्युत शक्ति से युक्त होने पर काम करते हैं उसी प्रकार शरीर, इन्द्रियाँ, मन, मस्तिष्क, D. N.A.,

R.N.A. आदि चेतना (जीव, आत्मा, soul, life, ज्ञान) शक्ति से युक्त होने पर ही कार्य करते हैं।

(23) किसी भी धर्म के बाह्य धार्मिक नीति-नियम, व्रत, उपवास, पूजा, आराधना, प्रार्थना, स्वाध्याय, ध्यान आदि यदि आध्यात्मिक विकास के लिए उपकारी है तो वे सब करणीय-निमित्त-साधन है अन्यथा त्यजनीय-बाधक-विध्वंसक है। जैसा कि जो भोजन स्वास्थ्य, ...अहिंसादि धर्म आदि के सहयोगी है वह भोजन ग्राह्य है अन्यथा अग्राह्य है।

(24) जैसा कि प्राण सहित शरीर की सुरक्षा आदि की जाती है, शव की नहीं वैसा ही आध्यात्म युक्त धर्मादि की आराधना विधेय है अन्यथा नहीं।

(25) आध्यात्मिकता को अधिकांश जीव न जानते हैं, न ही मानते हैं, न ही अपनाते हैं इसलिए आध्यात्मिक मूल्यहीन-हेय-नहीं है अपितु अमूल्य-सबसे अधिक उपादेय है जैसा कोहिनूर हीरा सबको प्राप्त नहीं होने पर भी मूल्यहीन नहीं अपितु दुर्लभ, बहुमूल्य होने से प्राप्त करना दुर्लभ है।

(26) आत्मा/आध्यात्म को छोड़कर संसार के समस्त विकास, उपलब्धि, सत्ता, सम्पत्ति, प्रसिद्धि, भोग-उपभोग, मनोरंजन, शिक्षा, फैशन, व्यसन आदि आयात है, नकल है, पर है, भौतिक है, बन्धन है, दुःखदायी है। क्योंकि यह सब आत्मा के शुद्ध स्वभाव नहीं है। इसलिए तो आध्यात्मिकता के बिना सत्तादि से सम्पूर्ण शान्ति नहीं मिलती है।

(27) जिस प्रकार कि प्रकाश के बिना अन्धकार को तलवार, लाठी, पत्थर आदि के प्रहार से या आदेश, निर्देश, निन्दा, प्रशंसा आदि से मिटा नहीं सकते हैं उसी प्रकार आध्यात्मिकता बिना अज्ञानता, दुःख, समस्या, युद्ध, भेद-भाव आदि पूर्णतः दूर नहीं हो सकते हैं।

(28) जैसा कि कस्तूरी मृग की नाभि में सुगन्धित कस्तूरी होने पर भी वह कस्तूरी का सदुपयोग नहीं कर पाता है परन्तु उस कस्तूरी के कारण मानव-शिकारी से भी मारा जाता है जैसा ही जीव स्वज्ञानानन्द स्वयं में होने पर भी भ्रम से भौतिक

सुख-सुविधा के मोह में भटकता हुआ कर्मरूपी शिकारी के द्वारा मारा जाता है।

(29) लवणाक्त समुद्र का पानी पीने से जैसे प्यास और भी बढ़ जाती है वैसा ही सांसारिक सुख की तृष्णा शान्ति के लिए जितना भी भौतिक साधनों का प्रयोग किया जाता है उतनी ही तृष्णा बढ़ती है। क्योंकि जैसा कि लवणाक्त पानी पीने से शरीर के पानी को लवणाक्त पानी शोषण कर लेता है वैसा ही भौतिक-सुख-सुविधा की तृष्णा से आत्मा की शान्ति का शोषण हो जाता है। इसलिए तो तृष्णावान् सबसे दरिद्र, दुःखी है। यथा-

दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णावश धनवान।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान।।
गोधन, गजधन, बाजधन और रतनधन खान।
जब न आवे सन्तोषधन, सब धन धूरी समान।।
गोधन गजधन, बाजधन और रतनधन खान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरी समान।।

यावत्सतृष्ण पुरुषो हि लोके तावत्समृद्धोऽपि सदा दरिद्रः। (अश्वघोष) जब तक मनुष्य तृष्णा से युक्त रहता है, तब तक समृद्धिशाली होने पर भी दरिद्र ही रहता है।

(30) निष्पृहता, सन्तोष, स्थितप्रज्ञता, समता, इच्छा निरोध तपः, अपरिग्रह, आकिञ्चन्य धर्म, वीतरागता, मुमुक्षुपना तथा महात्मा बुद्ध के 4 आर्यसत्य अष्टांग मार्ग, महर्षि पतञ्जलि के अष्टांग योग, जैन धर्म के द्रव्यानुयोग, वैदिक धर्म के उपनिषद्, अष्टावक्र गीता आदि के प्रतिपाद्य विषय आध्यात्मिक ज्ञानानन्द सम्बन्धी हैं।

❑

परिच्छेद -1

संस्कृति (भारतीय संस्कृति से प्राप्त शिक्षाएँ)

भारतीय संस्कृति में सबका सम्मान एवं सम्बोधन !

(तर्ज- सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों....)

सुनो भारतीय ! तुम्हारी संस्कृति कितनी महिमा वाली।
उसे सुनकर उसे अपनाओ, नहीं तो जीवन खाली।। स्थायी।।...
भारतीय मान सम्मान आदि है सब से निराला होय
भारतीय शान आदर सत्कार सबसे विशेष होय
संस्कृति संयुक्त स्वागत सत्कार आत्मीयता लिए होय
सम्बोधन प्रथा भारतीयों में सबसे विशेष होय
संस्कार संस्कृति नामकरण भी आध्यात्मिक युत होय
ज्ञान विज्ञान व परम्परा भी महानता लिए होय
रीति रिवाज व वेशभूषा आदि खान-पान पर्व होय
तीर्थयात्रा व नियमव्रत भी संस्कृति युक्त होय....सुनो भारतीय (1)
सम्बोधन में माता-पिता व भ्राता श्री भगिनी सुता होय
चाचा-चाची, काका-काकी, दादा-दादी नाना होय
अनजान को भी बोला जाता है मामा मौसी चाचा कोय
भगिनी दीदी व भैया बोलकर सम्बोधन जहाँ होय
पशु पक्षी को भी आदर भाव से मानव सम सम्बोधा जाय
बन्दर मामा बिल्ली मौसी हाथी दादा जहाँ होय
कौआ मामा लोमड़ी मौसी गाय जहाँ माता होय
वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव इससे प्रगट होय.... सुनो भारतीय (2)

आदर की परम सीमा है जड़ भी सम्बोधा जाय रे
गंगा मैया, धरती माता मातृभूमि जहाँ होय
अतिथि देवो भवः की परम्परा जहाँ पर पावन होय
मानव ही नहीं पशु-पक्षी को खिलाया पिलाया जाय
शत्रु भी जब घर पे आवे मित्रवत् मान/(आदर) होय
मृत्यु के बाद नरक भी जावे तो भी स्वर्गीय होय.. सुनो भारतीय (3)
प्रणाम स्वागत परम्परा भी आदर्श युक्त से होय
नमोऽस्तु जुहार भन्ते तथागत जय जिनेन्द्र भी होय
नमो नारायण जय सियाराम सत् श्री अकाल होय
इच्छामि भन्ते जय नमस्ते पधारो साहब होय
हस्त जोड़कर हृदये छूकर(लगाकर) शिर से नमोऽस्तु होय
पग पकड़कर गुण को गाकर चरण में माथा होय...सुनो भारतीय (4)
ऐसा भी जहाँ परम्परा कहाँ पावन है हरकण
मन वच काय कृत कारित व अनुमत से पावन
गर्भ संस्कार से शव दाह तक होती है आध्यात्म दृष्टि
हर प्राणी को ही आत्म मानकर अथ से इति संस्कृति
नामकरण भी इसी संस्कृति से होता है जाज्वल्यमान
महापुरुषों के नामों से संयुक्त पवित्र कर्त्तव्यवान
पर्व महोत्सवे आत्मिय भाव से नवीन फल मिष्ठान्न
परस्पर को भेंट में अर्पण होता है सह सन्मान.... सुनो भारतीय. (5)
अतिथिजन या वृद्ध गुरुजन देव सम पूज्यनीय
उनके भोजन सत्कार के बाद अन्य कार्य करणीय/(भजनीय)
गरीब भिखारी रोगी दुखियारी पशु पक्षी विकलांग

करुणा भाव से सेवा योग्य हैं विपन्न समाज अंग
इन्हीं कारणों से भारत है कभी हुआ था विश्व गुरु
विश्व के भरण पोषण से युक्त वैश्विक संस्कृति गुरु
इन्हीं कारणों से आर्य भारत के देव भी गाते थे गुण
भारत में जन्म लेने वालों को वे मानते थे पुण्यवान...सुनो भारतीय..(6)
हाय रे दुर्भाग्य ! अभी क्या हुआ कहाँ गया है सन्मान
देवों को छोड़ पड़ोसी देश भी नहीं देते हैं सन्मान
पड़ोसी क्यों दे जब पुत्र पुत्री बोलते मम्मी व डेड
जीवन्त ही माता-पिता को भी जब बोलते हैं मृतदेह
गुरु गुणी जन सम्मानीयजन पाते नहीं है सत्कार
उन्हें बोला जाता अँकल आँटी व मेडम डेडी मेम
वृद्ध माता पिता रोगी वृद्ध जन असहाय विकलांग
उपेक्षित जब कुटुम्ब जन से क्यों न हो मान भंग..सुनो भारतीय (7)
पाश्चात्य देशों के कुत्ते व बिल्ली के समान इण्डिया वाले
चिन्टू पिन्टू किन्टू कुत्ता बिल्ली नाम है इण्डिया वाले
वीर महावीर राम कृष्ण बुद्ध सीता सावित्री गायत्री
पवित्र नाम के बदले में अभी रखते हैं कुत्ता बिल्ली
नमोऽस्तु प्रणाम जयजिनेन्द्र व राम राम भन्ते जय
सन्मान जुहार बदल में अभी बोलते हैं हैलो हाय
अकल के बिना नकल हेतु से भारत बना इण्डिया
इसलिए तो भ्रष्टतम देश बना है सोने की चिड़िया...सुनो भारतीय (8)
गोबर पूजे गोमाता को हने ग्रीष्म में भी सूट बूट/(टाई सूट) (काला सूट)
साक्षर बदले राक्षस बने हैं बन के अप टू डेट/(बनकर इडियेट)

विज्ञान से सिद्ध होता जा रहा है श्रेष्ठ भारतीय ज्ञान
इसलिए तो पाश्चात्य के लोग करते इसे सन्मान
अभी तुम जागो भारत के लोग स्वयं की जड़ को सींचो
इससे तुम्हारा विकास निश्चित दृढ़ता से यह सोचो
भारत को पुनः विश्व गुरुत्व दिलाओ हे भारतीय
'कनकनन्दी' की भावना है सदा जागृत हो भारतीय....सुनो भारतीय (9)

सेमारी (राज.) दि. 5-4-2011 रात्रि 1.13

आर्य संस्कृति जननी (2)

(तर्ज- बंगला राग..., नरेन्द्र छन्द.., जन-गण-मन आदि)

जननी जननी जननी वन्दे ! भारत जननी....2
तुम हो आर्य संस्कृति जननी...3 ।।टेक।।

वन उपवन नदी तरंगा, उच्च हिमालय सिन्धु तरंगा.... जननी...3
गंगा यमुना धृत शरीरा, शस्य श्यामला भारत माता .... जननी...3
तीर्थेश गणधर गुणी जननी, ज्ञानी विज्ञानी ऋषि जननी .... जननी...3
चक्री नृप सम्राट दात्री, विश्व गुरु है भारत माता .... जननी...3
ज्ञान विज्ञान सभ्यता दात्री, भाषा व्याकरण कला पदात्री... जननी...3
नृत्य संगीत नाटक दात्री, शिल्प राजनीति कानून दात्री.... जननी...3
दर्शन तर्क आध्यात्म दात्री, मोक्ष प्रदायिनी भूमि जननी ... जननी...3
विदेशी आक्रान्ता भी आए, तेरी महिमा से अभिभूत हुए .. जननी...3
जो तेरी संस्कृति पालन करे, वे ही सच्चे तेरे दुलारे.... जननी...3
अन्य हैं सब कुपूत समाना, तेरी महिमा को नहीं माना.... जननी...3

मेरे देश की संस्कृति (3)

(तर्ज - मेरे देश की धरती....)

मेरे देश की संस्कृति ज्ञान दात्री, ज्ञानी गुणी जननी...मेरे देश।।टेक।।
यहाँ पूजा पाठ रीति-रिवाज ज्ञान ध्यान सिखाते हैं...2
पाप दूर हुए पुण्य प्रकाशे आत्मज्ञान जगाते हैं...2
यहाँ के महापुरुष ज्ञानी विज्ञानी ध्यानी होते हैं...2
जिसके कारण हमारी संस्कृति, श्रेष्ठ संस्कृति कहलाती है...2
मेरे देश की संस्कृति...।।1।।
इसी संस्कृति से जन्म लिए, गणित विज्ञान शिल्पों ने...2
आत्मज्ञान की अमृत वर्षा, इसके ही अवदान है...2
संगीत नाट्य भाषा-विज्ञान, इसका ही योगदान है...2
इसीलिए तो देश हमारा, विश्व गुरु कहलाता था...2
विश्व बन्धुत्व का पाठ पढ़ाकर, विश्व में शान्ति लाता था...
मेरे देश की संस्कृति...।।2।।
हमारे भोजन वेश-भूषा भी, संस्कृति ऋतु से अभिप्रेरित हैं...2
सभ्यता व परम्परा भी, इससे ही खूब प्रभावित है...2
इससे ही हमारी संस्कृति से मानव से भगवान् हुए...2
दानव भी मानव बनकर के, परम्परा से मोक्ष गये...2
इस हेतु ही स्वर्ग के देव भी, इस संस्कृति धरा को चाहे हैं
मेरे देश की संस्कृति...।।3।।
ऐसी संस्कृति को हे भारतीय, तुम क्यों भूलते जाते हो...2
मूल से रहित क्या वृक्षकभी, फूलते फलते जाते हैं...2
पानी से रहित सरिता क्या कभी, भक्तों से पूजी जाती है...2

प्राण से विहीन शरीर क्या, कभी उपयोगी होता है...2
समग्र विकास के हेतु अपनी संस्कृति है उपयोगी...
मेरे देश की संस्कृति...।।4।।

विद्या तेरी धारा अमृत (4)

(तर्ज - गंगा तेरा पानी अमृत....)

विद्या तेरी धारा अमृत, झर झर बहती जाए
युगों युगों से भारत जनता तुझसे अमृत पाए...विद्या तेरी धारा...(टेक)
तीर्थेश हिमालय से तू निकसी, गणधर प्रवाहित धारा
ऋषि मुनि पाठक सूरी सेवित निर्मल धाराऽऽऽ
ज्ञानी-विज्ञानी-प्रजाजन भी तुझसे जीवन पाए...विद्या तेरी धारा..(1)
अध्यात्म तेरी मुख्य धारा, नद प्रवाहित मंदाकिनी
भिन्न भिन्न नदी प्रवाहित धारा, भाषा व गणितमयी ऽऽऽ
विज्ञान शिल्पी आयुर्वेदमयी संगीत विभिन्न धारा...विद्या तेरी धारा...(2)
संस्कार संस्कृति दया उदारता पवित्र बहती धारा
अनन्त हुए संतृप्त तेरे द्वारा, पावन हुए अनन्ता ऽऽऽ
तुझसे भारत हुआ विश्वगुरु, पूजित सभ्य संसार....विद्या तेरी धारा...(3)
तेरी पवित्र धारा में अब, बहती विकृति धारा
संकीर्ण स्वार्थ व भौतिकता की बहती गटर धारा ऽऽऽ
परस्पर भेद विद्वेष बान्ध से, रुकी तुम्हारी धारा....विद्या तेरी धारा...(4)
पुण्य पुरुषार्थी भागीरथी जागो, करो हो विकृति दूर
स्वयं तृप्त हो, तृप्त भी कराओ, भारत सन्तान सारा ऽऽऽ
विश्व सन्तान को तृप्त हेतु तुम, विस्तार पवित्र धारा....विद्या तेरी धारा...(5)

जागरण गीत - मातृ वन्दन (5)

हमारी संस्कृति की दशा-दिशा-आशा

(तर्ज- छोटी-छोटी गैया, छोटे-छोटे ग्वाल.....)

हमारी संस्कृति हमारी जान, परम्परा की है हमारी शान.....
वन्दे मातरम्..... वन्दे मातरम्..... वन्दे मातरम्....
।।स्थायी/टेक।।
हमारी ये परम्परा हमारी ये शान, विश्व कीर्तिमान है हमारी ये जान।
जान गई रहे नहीं शरीर में शान, परम्परा बिना नहीं राष्ट्र का मान।।
हमारी संस्कृति हमारी जान..... (1)
संस्कृति ही जननी है परम्परा की, आत्मकल्याण की, शिक्षा-दीक्षा की।
हमारी ही संस्कृति है विश्वगान की, वसुधैव कुटुम्ब की, दिव्य वाणी (ध्वनि) की
हमारी संस्कृति हमारी जान..... (2)
भारत ने दिया है विश्व को ज्ञान, भाषा व ब्राह्मी लिपि का है अवदान।
गणित व आयुर्वेद कला भी जान, सबसे महाविद्या आध्यात्म ज्ञान।।
हमारी संस्कृति हमारी जान..... (3)
अन्य राष्ट्र जब म्लेच्छ के देश थे, हमारे देश में पुष्प विमान थे।
अनेकान्त सापेक्ष व अणु के सूत्र थे, विश्व विज्ञानी हमारे ऋषि ज्ञानी थे।।
हमारी संस्कृति हमारी जान..... (4)
अभी तो मुरझाई हमारी संस्कृति, ज्ञान की परम्परा हो गई गन्दी।
अन्धों की दौड़ में है जनता लगी, भेड़िया चाल और भेड़ों की जिन्दगी।।
हमारी संस्कृति हमारी जान..... (5)
जनता में चेतना जब है जगेगी, अपसंस्कृति की धारणा नशेगी।
चैतन्य ज्योति जब उदय होगी, हमारी सुसंस्कृति जागृत होगी।।
हमारी संस्कृति हमारी जान..... (6)

हे भारतीय ! पुनः जागो स्वगौरव प्राप्त करो (6)

(राष्ट्रीय आह्वान गीत, प्रबोधन गीत)

आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज– 1. करो कल्याण आतम का..... 2. हे वीर तुम्हारे..... 3. आओ बच्चो..... 4. दुःख से घबराओ..... श्रीपाल चरित्र।)

हे भारतीय ! तेरे नाम पर, एक शुभ संदेशा लाया हूँ।
तेरे पूर्वज तेरे कर्त्तव्य क्या, ये तुझे बताने आया हूँ।।(टेक)
तुम्हारे पूर्वज न थे बन्दर, वे तो थे आर्य ऋषिवर।
अरबों खरबों वर्ष पूर्व से ये, यहाँ के आर्य कुलकर (1)।। हे.....
तेरे पूर्वज न थे अनार्य न ही, विदेश से आने वाले।
अनादिकाल से भारत भूमि, रहा आर्यों का निवास स्थल (2)।। हे.....
तुम्हारे पूर्वज हुये तीर्थंकर, चक्रवर्ती नारायण हलधर।
ऋषि मुनि वैज्ञानिक लेखक, आयुर्वेद गणितज्ञ कलाधर।। (3)।। हे.....
इसलिये तो भारत देश रहा, विश्व का श्रेष्ठ गुरुवर।
विश्व का किया भरण पोषण, ताकर हुआ भारतवर्षवर।।4।। हे.....
दिया विश्व को ज्ञान विज्ञान, गणित कला आयुर्वेद ज्ञान।
युद्धकला राजनीतिज्ञान, न्याय तर्क दर्शन सुज्ञान।।5।। हे.....
सबसे महाविज्ञान दिया, जिसका नाम है आध्यात्मज्ञान।
जिस ज्ञान को लेने आते हैं, विदेशों से ज्ञानी महान्।।6।। हे.....
भारत से ही गणित फैला, सर्वोच्चज्ञान व आत्मविज्ञान।
जिस कारण से अन्य देश भी, बनते गये सुसभ्य सुजान।।7।। हे.....
अन्तर्कलह फूट के कारण, भारत का हुआ दीर्घ पतन।

राजनैतिक पराधीनता से, सभ्यता संस्कृति का हुआ पतन।।8।। हे.....
अभी स्वतंत्रता के बाद भी, देश में नहीं हुआ पूर्ण उत्थान।
भ्रष्टाचार फैशन व्यसन से, देश का हो रहा पुनः पतन।।9।। हे.....
जागो उठो हे आर्यवीरवर !, करो देश का पुनः उत्थान।
तुम्हारे आत्मिक उत्थान से ही, राष्ट्र का होगा पुनः उत्थान।।10।। हे.....
''कनकनन्दी'' तो जगा रहे हैं, ज्ञान–विज्ञान आह्वान द्वारा।
आर्यवीर देर न करो, राष्ट्रहित हेतु करो उत्थान।। 11।। हे.....

सेमारी 20–4–2011 दोपहर – 3 : 00

ग्रामीण प्रकृति एवं संस्कृति (7)

(तर्ज– पूछ मेरा क्या नाम रे, नदी किनारे गाँव रे.....)

छोटा मेरा गाँव रे, प्रकृति की छाँव रे
भूगोल पोथी इतिहास में, नाहीं तेरा नाम रे....।। टेक/स्थायी
नींव समान तुम पत्थर, देखा सुना न जाए रे
भोजन रस दूध से, खिलाना पिलाना काम रे..... छोटा मेरा..... (1)
भोला भाला भद्र मानव, रहते तेरे गेह में
नंग–धडंगे बाल गोपाल, खेले तेरे नेह में..... छोटा मेरा..... (2)
बाग–बगीचे भूषण तेरा, शस्य व खेती वसन तेरा
संस्कृति तेरी पावन धारा, शीतल प्रेम बहाती सारा..... छोटा मेरा..... (3)
तू ही पोषक पशु–पक्षी के, तू ही पोषक धनी–मानी के
तू ही रक्षक पेड़–पौध के, तू ही सेवक साधु–सन्त के..... छोटा मेरा..... (4)
तू ही अभी उपेक्षित है, शिक्षित शहरी जन से रे

गँवार पिछड़ा तुम को माने, कृतघ्न शोषणकारी रे..... छोटा मेरा..... (5)
उपेक्षित से उपेक्षित है, आर्यों की शान-मान रे
जड़ के बिन वृक्ष सम है, फल न फूल न जान रे..... छोटा मेरा..... (6)
तेरे बिन न बचे नगर, न बचे सरकार भी
समाज संस्कार सरोकार है, बचे न प्रेम विचार भी..... छोटा मेरा..... (7)
भौतिकता की चकाचौंध के, त्यागो बन्धन सारे
प्रेम शान्ति प्राप्ति के हेतु, गाँव में आओ प्यारे..... छोटा मेरा..... (8)

भो इंडियन! इडियट को त्यागकर विश्वगुरु बनो! (8)

(तर्ज- 1. सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ..... 2. रात कली इक.... 3. जीवन में कुछ करना.... 4. नगरी-नगरी.....)

- आचार्य कनकनन्दी

सुनो इंडियन सुनो हिंग्लिस्थानी, तुम्हारे ढोल की पोल कहानी।
जिसे सुनने की इच्छा न करते, स्वर्ग के देव क्या तिर्यंच प्राणी।।(टेक)
शिक्षा के नाम पे रटन्त तोता, संस्कार संस्कृति चारित्र बिना।
नम्बर आधारित प्रयोग शून्य, जड़-फल रहित वृक्ष है यथा।। सुनो.....
सादा जीवन उच्च-विचार, आध्यात्मभाव विश्वबन्धुत्व।
इससे रहित आडम्बरपूर्ण, फैशन-व्यसन भ्रष्ट चारित्र।। सुनो.....
परोपकार व नीति रहित, शोषण मिलावट युक्त व्यापार।
भ्रष्टाचार ही तेरा आचार, धर्म नियम सबसे है दूर।। सुनो.....
महान् भारतीय भाषा भोजन, वेश-भूषा रहित तेरा फैशन।

इसी काम में विश्व चैम्पियन, नीली लोमड़ी न तेरे समान।। सुनो.....
अकल बिना नकल में तुझसे, बन्दर तोता गिरगिट हारे।
मौलिक श्रेष्ठ उपकारक शोध, बोध खोज आदि में कोरे।। सुनो.....
गप्पे लड़ाने डिंग हांकने, आलस्य प्रमाद मल फैलाने।
इसके लिये विश्वगुरुत्व, नोबेल प्राप्त योग्यता माने।। सुनो.....
आधुनिकता का नशा तुम्हारा, सब नशा में सबसे प्यारा।
इसके लिये सभी वर्जनीय, धन, मान, स्वास्थ्य धर्म भी सारा।। सुनो.....
जिस संस्कृति को पाश्चात्य ज्ञानी, श्रेष्ठ मानकर ग्रहण करे।
उस संस्कृति को त्याग करके, अपसंस्कृति पालो क्यों प्यारे।। सुनो.....
धर्म अर्थ काम मोक्ष मध्य में, अर्थ काम ही तुमको प्यारे।
गीद्ध पक्षी सम तुम्हारी दृष्टि, भौतिक भोग को सदा निहारे।। सुनो.....
धर्म भी करो उत्सव पालो, पवित्र उदार भावना बिना।
धन मान जन प्रसिद्धि हेतु, धर्म क्यों ओढ़ो भावना बिना।। सुनो.....
गुरु कुंभार कुंभ शिष्य सम, गढ़ गढ़ काढूँ मैं तेरा खोट।
सुन्दर सुडौल पात्रता हेतु, पवित्र भाव से मारुँ मैं चोट।। सुनो.....
तुम आर्यपुत्र अमृत हेतु, करो पुरुषार्थ सत्य निष्ठा से।
''कनकनन्दी'' की भावना सदा, विश्वगुरुत्व को पाओ शीघ्र से।। सुनो.....

झाडोल (स.) 18-5-2011 मध्यान्ह 3:09

अपनी महत्ता हे मानव ! तुम तो मानो (9)

– आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज– 1. दे दी हमें आज़ादी बिना..... 2. ओ दीनबन्धु श्रीपती..... 3. जय जय श्री अरहन्त देव.....)

अपनी महत्ता हे मानव ! तुम तो जानो,
अपनी उपलब्धि का उपयोग करना भी जानो
अनन्त जन्म बाद मिले मानव जन्म है,
मोक्ष के साधनभूत यह उत्तम/(श्रेष्ठ) जन्म है..... (टेक)
यदि आत्म विकास न किया इस जन्म में,
अधोपतन निश्चय जानो इस जन्म में
अनन्त भव भ्रमण होगा नीच गति/(योनि) में,
नरक निगोद पशु तिर्यञ्च नीच गति/(योनि) में..... (1)
मानव के आयु गति शरीर ज्ञान को जानो,
अत्यन्त विशिष्ट है संसार में जानो
इसके सदुपयोग से परम विकास है,
यदि किया दुरुपयोग तो पतन अवश्य है..... (2)
आयु का सदुपयोग जन्म नाश निमित्ते,
गति का सदुपयोग पञ्चम गति/(निर्वाण) निमित्ते
देह/(शरीर) का उपयोग विदेही होने के हेतु,
ज्ञान का उपयोग सर्वज्ञ होने के हेतु.....(3)
तेरा शिर है महान् उन्नति का है निशान,
आत्म गौरव की ऊँचाई का प्रतीक है महान्
देव शास्त्र गुरु गुण गुणी प्रति यदि न झुका है,
अहंकार का प्रतीक निश्चय से मान है.....(4)

विशाल मस्तिष्क तेरी ज्ञानवृद्धि निमित्ते,
हिताहित विवेक की प्राप्ति के निमित्ते
सीधा मेरुदण्ड तेरा सीधा विकास हेतु है
उन्नत हाथ तेरा महान् कर्त्तव्य/(कार्य) हेतु है.....(5)
कर्ण का सदुपयोग तत्त्व श्रवण द्वारा रे,
चक्षु का सदुपयोग प्रभु दर्शन द्वारा रे
जिह्वा का सदुपयोग तत्त्वचर्चा होने से,
कण्ठ का सदुपयोग प्रभु गुणगान से.....(6)
पैर का सदुपयोग तीर्थयात्रा के द्वारा,
पेट का सदुपयोग सात्त्विक अन्न के द्वारा
अन्न का सदुपयोग सच्चा कार्य होने से,
जीने का सदुपयोग दिव्यज्ञान प्राप्ति से.....(7)
धन का सदुपयोग चतुर्विध दान के द्वारा,
समय का सदुपयोग परोपकार के द्वारा
साधनों का सदुपयोग है सिद्धि के द्वारा,
उपलब्धि का उपयोग सदुपयोग के द्वारा.....(8)
'कनकनन्दी' तुम सदा सदुपयोग ही करो,
दुरुपयोग कभी भूलकर किसी का न करो
तेरा उपयोग है तेरा भाग्य निर्माता,
कर्त्ता धर्त्ता हर्त्ता भोक्ता अथवा ज्ञाता.....(9)
अपनी महत्ता हे मानव ! तुम तो जानो,
अपनी उपलब्धि का उपयोग करना भी जानो
अनन्त जन्म बाद मिले मानव जन्म है,
मोक्ष के साधनभूत यह श्रेष्ठ/महान् जन्म है।

सेमारी (राज.) दि.– 2–4–2011, रात्रि 10 बजे

मानव तेरा रूप है अनेक (10)

– आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज– गंगा तेरा पानी अमृत.....)

मानव तेरे रूप अनेक, वचने कहा न जाय ऽऽ

कभी है मानव कभी है दानव, कभी सुर ईश भी होय.....(टेक/स्थायी)

तुमसे ही बने तीर्थेश बुद्ध, ऋषि मुनि ज्ञानी सारे ऽऽ

तुमसे ही बने कंस व रावण, जरासंध हिटलर सारे..... कभी है मानव.....(1)

तुमसे जन्में हैं सभ्यता संस्कृति, भाषा गणित है सारे ऽऽ

तुमसे जन्में पंथ संकीर्णता, राष्ट्रीय भेद भाव सारे..... कभी है मानव..... (2)

तुमसे है जन्मा विश्वबन्धुत्व व 'जियो व जीने दो' नारा ऽऽ

तुमसे जन्में हैं कट्टर क्रूरता, युद्ध महायुद्ध सारा.... कभी है मानव..... (3)

तुमने खोले हैं विश्व रहस्य, आत्म विकास के द्वारा ऽऽ

तुमसे खुले हैं विश्व के विनाश, आत्म पतन के द्वारा.... कभी है मानव..... (4)

अभी तो तुम दानवता त्यागो, पाओ है अमृत धारा ऽऽ

सत्य अहिंसा के मार्ग पे चलके, पाओ है मोक्ष के द्वारा.... कभी है मानव..... (5)

'कनकनन्दी' की सदा भावना, मानव बने महान्/पावन ऽऽ

सदाचार/(पवित्रता) व शान्ति के बल पर, बने है सच्चा महान्.... कभी है मानव..... (6)

शिक्षा संस्कृति ज्ञान विज्ञान के आदि प्रवर्तकः भगवान् आदिनाथ (11)

(भारत का प्राचीनतम इतिहास)

रचयिता– आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज– आदि ब्रह्मा आदिश्वर.....)

आदि ब्रह्मा आदीश्वर श्री आदिनाथ महान् हो।

आदिराज आदिगुरु वृषध्वज नमो नमः।। (टेक)

भोगभूमि का जब अन्त आया, कल्पवृक्ष सब नष्ट हुये।

क्षुधित प्रजा को प्रभु ने सिखाया, कृषि के द्वारा जीवन बचाया – 2

आत्मरक्षार्थे असि सिखाया, लेखन पठनार्थे मसि बताया।। आदिराज.....

भौतिक विनिमय हेतु वाणिज्य, गृहोपकरण शिल्प बताये।

परस्पर सहयोग सेवा बताया, इसलिये आदिब्रह्मा कहलाये –2

आपने ब्राह्मी लिपि भी सिखायी, जिसका नाम ब्राह्मी लिपि हुआ।। आदिराज.....

सुन्दरी पुत्री को अंक सिखाया, इसलिये आदिगुरु भी कहलाये।

राजा बनकर शासन किया, राजनीति न्याय आप सिखाये – 2

तुम्हारा पुत्र भरत हुआ, प्रथम चक्री विख्यात हुआ।। आदिराज.....

उनसे आर्य देश हुआ भारत, शस्यश्यामला हमारा देश।

तुम्हारा पुत्र बाहुबली हुआ, प्रथम कामदेव शक्तिशाली हुआ –2

अर्ककीर्ति अन्य पुत्र भी हुये, सबको विभिन्न विद्या सिखाये।। आदिराज.....

आपको जब वैराग्य हुआ, सब पुत्रों को राज्य दिया।

जिससे देशों का उदय हुआ, पुत्रों के नाम से वंश चला – 2

इक्षुरस प्रयोग तुमने सिखाया, इसलिये इक्ष्वाकु वंश कहाया।। आदिराज.....

सूर्य चन्द्रादि वंश पुत्रों से, वंशों का प्रारम्भ इनसे हुआ।
दीक्षा प्रयाण से प्रयाग हुआ, अक्षयवट दीक्षावृक्ष बना - 2
आत्मध्यान में लीन होने से, जटाजूट से भूषित हुये।। आदिराज.....
पुरिमताल में हुआ केवलज्ञान, अशोक है बोधी वृक्ष का नाम।
देवों ने समवशरण बनवाया, गन्धकुटी मध्य में बनवाया - 2
सर्वभाषामयी दिव्यध्वनि से, प्रभु ने ज्ञान विज्ञान संबोधा।। आदिराज.....
आत्म विकास का मार्ग बताया, वैश्विक तत्त्व का रहस्य बताया।
कैलाश से मोक्षधाम पधारे, सच्चिदानन्द हैं रूप तिहारे...2
सत्यशिवसुन्दर अविकारी बन, अनंत वैभव अविनाशी हुये।। आदिराज.....
आदि अणु प्रकृति ज्ञानी, शिक्षा संस्कृति के आदि विज्ञानी।
सापेक्ष सिद्धान्तके आदि ज्ञाता, न्याय राजनीति के आद्य प्रणेता....2
आधुनिक या प्राचीन ज्ञान, देश-विदेशों के सम्पूर्ण ज्ञाता।। आदिराज....
रीति रिवाज समाज ज्ञान, समस्त ज्ञाता आदि भगवान्।
''कनकनन्दी'' है भक्त तुम्हारा, तुम्हारा आदर्श हमको प्यारा.....2
तुम्हारी भक्ति से तुम सम बनूँ, इसी हेतु से भक्ति मैं करूँ।। आदिराज....
आदि ब्रह्मा.....

आर्यभाषा की जननी की गरिमा एवं अवहेलना (12)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - 1. दूर हटो ऐ दुनिया वालो.... 2. आओ बच्चों....)

जननी जननी जननी जय हो, आर्यभाषा की जननी।
प्रबोधिनी हो आर्य संस्कृति, गीर्वाणमयी जननी।। (टेक)

संस्कृत भाषा जननी सबकी, भारतीय मातृ भाषा की।
संस्कृत भाषा परिष्कृत भाषा, व्याकरण युक्त वाणी की।। (1) जननी....
व्युत्पत्ति युक्त अन्वय सहित, लिखित पठित सब सम हैं।
ह्रस्व दीर्घ प्लुत उच्चारण युक्त, सन्धि समास सहित है।। (2) जननी....
संस्कृत भाषा लिखित साहित्य, व्याकरण निर्युक्ति छन्द हैं।
काव्य महाकाव्य नाटक एकांकी, प्रार्थना पूजा विधान हैं।। (3) जननी...
तर्क न्याय ग्रंथ दर्शन साहित्य, आयुर्वेद व गणित है।
धर्म मीमांसा अनुवाद युक्त, भाष्य महाभाष्य आदि हैं।। (4) जननी....
वाद-विवाद समीक्षा साहित्य, संहिता स्वप्न शकुन भी हैं।
शिल्प-कला सामुद्रिक शास्त्र, विज्ञान संगीत आदि भी है।। (5) जननी...
ललित मधुर सुलालित्य भाषा, गीर्वाण व आर्यभाषा है।
संस्कृति सभ्यता वाहक गीर्वाणी, वैज्ञानिक शुद्ध भाषा है।। (6) जननी...
गंभीर औदार्य सर्वरसमयी, प्रबोधिनी दिव्यभाषा है।
मनीषी वाग्मी ऋषि गुरुभाषा, महाभाषा शुद्धभाषा है।। (7) जननी...
तत्सम्, तद्भव शब्दावली सर्व, संस्कृत से जायमान है।
भारतीय आर्यभाषा व विदेशी, संस्कृत से युक्त जान है।। (8) जननी...
भारतीय भाषा संस्कृत से युक्त, ओजस्वीनी तेजस्वीनी है।
संस्कृत रहित भारतीय भाषा, निस्तेज गरिमाहीन है।। (9) जननी...
विदेशों में मान्य हैं संस्कृत भाषा, स्वदेश में उपेक्षिणी है।
गुलाम की भाषा भारत शासिका, आर्यभाषा निष्कासिनी है।। (10) जननी...
संस्कृत रहित हमारी संस्कृति, संस्कार व सदाचार है।
ज्ञान-विज्ञान पर्व परम्परा, कला व आदर्शाचार है।। (11) जननी...
माता विरहित अबोध के सम, दिशाहीन मार्गच्युत है।

इस ही कारण भारतीय जन, भ्रष्टाचारी दीन-हीन हैं।।(12) जननी...

विश्वगुरुत्व पुनः प्राप्त हेतु, स्वीकारो हे आर्यभाषा।

'कनकनन्दी' का आह्वान मानो, पूर्ण करो मम अभिलाषा।। (13) जननी...

सेमारी 13-04-2011 मध्याह्न 2:22

राष्ट्रीय झण्डा/प्रतीक हमें सिखाता है! (13)

(तर्ज - 1. दुनियाँ में रहना है तो काम करो प्यारे... 2. अच्छा सिला दिया तूने...)

तिरंगा हमें सिखाता है राष्ट्रभक्त बन, राष्ट्रीय गौरवों की रक्षा करते चलऽऽ

केशरिया सिखाता है स्वार्थ त्यागी बन, राष्ट्रीय हित हेतु बलिदान कर... (टेक)

शुक्ल वर्ण सिखाता है पावन भी बन, शुचिता के भाव से राष्ट्र हित कर ऽऽ

हरा वर्ण सिखाता है खुशहाल बन, जय जवान जय किसान जय विज्ञानी बन (1)

अशोक चक्र सिखाता है प्रगति भी करना, प्रगति से देश का शोक दूर करना ऽऽ

चौबीस आरे तीर्थेशों (तीर्थंकरों) की याद दिलाते, पंचशील व्रतों को भी याद कराते. (2)

सिंह हमे सिखाता है धैर्यशाली बनना, सत्साहस के बल पर कर्त्तव्य है करना ऽऽ

बैल हमें सिखाता है भद्रशील बनना, शाकाहारी बनकर जीव रक्षा करना.. (3)

घोड़ा हमें सिखाता है श्रमशील बनना, अप्रमादी बनकर वफादार रहनाऽऽ

हाथी हमें सिखाता है बुद्धिमान बनना, राष्ट्रीय हित हेतु सचेत भी रहना... (4)

'सत्यमेव जयते' सत्यनिष्ठ प्यारा, 'सर्व सत्ये प्रतिष्ठित' वैश्विक नाराऽऽ

इसी आदर्श से हमें झण्डा को है मानना, केवल वस्त्र को ही ध्वज/(पताका) नहीं मानना (5)

इन आदर्शों को जो पालन करे हैं, वे ही राष्ट्रभक्त अन्य राष्ट्रद्रोही हैं ऽऽ

राष्ट्रीय चिह्नों को जो केवल माने हैं, इन आदर्शों का जो हनन करे हैं... (6)

वे ही राष्ट्रद्रोही भले नेता या प्रजा हो, राष्ट्रीय संस्कृति नाशक कोई भी जन हो ऽऽ

'कनकनन्दी' कहे भारतीयों जागो (है), भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाओ (है)....(7)

राष्ट्रीय प्रतीक हमें सिखाये ! (14)

(तर्ज - 1. अच्छा सिला दिया तूने... 2. दुनियाँ में रहना है तो काम करो प्यारे...)

आचार्य कनकनन्दी

राष्ट्रध्वज सिखाता है... स्वार्थ त्याग कर ऽ

पावनता के बल पर प्रसन्नता वर ऽऽ

पवित्रता के बल पर खुशहाली वर ऽऽ

पवित्रता के बल पर खुशहाली वर ऽऽऽ (टेक)

अशोक चक्र सिखाता है प्रगति कर, दुःख शोक दारिद्र को विनाश भी कर ऽऽ

'सत्यमेव जयते' सिखाता है हमको, सत्य के बल पर जयकर सबको...(1)

कमल हमें सिखाता है निर्लिप्त बन, निर्मल भाव से सर्वहितकर/(राष्ट्रहित कर) ऽऽ

आम हमें सिखाता है सुमधुर बन, राष्ट्र के हित हेतु मधुभावी बन....(2)

बाघ हमें सिखाता है बलशाली बन, बल का उपयोग राष्ट्र हिते कर ऽऽ

मयूर हमें सिखाता है गुणप्रेमी बन, राष्ट्र के विकास में गाया नाचा कर...(3)

जन गण से हम सीखे राष्ट्र की अखण्डता, राष्ट्र गीत सिखाये देश की महानता ऽऽ

स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, वन्दे मातरम् की यही ललकार है...(4)

राष्ट्रपिता की है सीख सत्य पथ चलना, अन्याय अत्याचार का सर्वनाश करना ऽऽ

नाथूराम तो किया था मेरा देह नाश, गुलाम मुक्त इण्डिया, मेरा ही करे नाश...(5)

प्रतीक से शिक्षा ले करो हे प्रगति, प्रतीक पुकार कर कहे दिन रात्रि ऽऽ

अन्यथा प्रतीक तेरे वृथा ही रहेंगे, प्रतीक भोजन से क्या भूख शमन होंगे...(6)

सेमारी (राज.) दि. 3/4/2011

आदर्श जीवन-चर्या (15)

(तर्ज - 1. सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे...2. वन्दे वन्दे वन्दे, वन्दे मातरम्...3. अच्छा सिला दिया तूने... 4. लकड़ी की काठी)

प्रातः काले हम सदा शीघ्र उठेंगे, प्रभु नाम सदा हम ध्यान करेंगे।
बड़ों को सदा प्रणाम करेंगे, छोटों को सदा हम प्यार करेंगे।।(1)

सुस्वागतम् हो सुप्रभातम्... ऽऽऽ ।टेक।।

शौच क्रिया दन्तधावन नित्य करेंगे, प्रासुक जल से स्नान करेंगे।
योगासन प्राणायाम व्यायाम करेंगे, आत्मा की शुद्धि हेतु मन्दिर जायेंगे।। (2)

हम सब स्वाध्याय नित्य करेंगे, भक्ति से सन्तों को आहार देंगे।
करुणादान भी सदा करेंगे, साधना हेतु शुद्ध भोजन करेंगे।। (3)

व्यापार कृषि सेवा शिल्प करेंगे, न्याय के मार्ग पर कार्य करेंगे।
भ्रष्टाचार, हिंसा, चोरी नहीं करेंगे, फैशन-व्यसनों से दूर रहेंगे।। (4)

क्रोध मान माया लोभ नहीं करेंगे, क्षमा व शौच धर्म हम पालेंगे।
माता-पिता गुरु की सेवा करेंगे, राष्ट्र के हित का ध्यान रखेंगे।। (5)

मद्य मांस धूम्रपान नहीं करेंगे, क्षमा व शौच धर्म हम पालेंगे।
स्व-पर-विश्व हेतु काम करेंगे, आत्मा की शुद्धि हेतु ध्यान करेंगे।। (6)

निशा भोजन कभी नहीं करेंगे, अश्लील सिनेमा नहीं देखेंगे।
लड़ाई-झगड़ा-संक्लेश नहीं करेंगे, व्यर्थ वार्तालाप नहीं करेंगे।। (7)

सन्ध्याकालीन क्रिया हम करेंगे, स्वाध्याय आरती नित्य करेंगे।
साधु की वैयावृत्ति सदा करेंगे, प्रभु नाम लेकर शयन करेंगे।। (8)

कनकनन्दी की यही भावना, मैं भी करूँ निशिनित/(नित) आत्मसाधना।
सर्वजीव सुख शान्ति वरण करें,स्वकल्याण हो मेरी शुभ भावना।। (9)

हो भारतीय संस्कृति युक्त जापानी कार्य पद्धति (16)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज- 1. इक परदेशी मेरा दिल ले गया... 2. जमुना किनारे श्याम जाया...)

जीवन में भ्रष्टाचार किया न करो, कर्त्तव्य को पूजा मान किया ही करो
तन मन समय में कर्त्तव्य करो, स्व-पर-राष्ट्र हिते दिल से करो.. (टेक)
जापानियों के समान कर्त्तव्य करो रे, भारतीय संस्कृति हृदये धरो रे ऽऽ
भूकम्प व सुनामी में जापानी से सीखो हे, शान्ति व धैर्य से कर्त्तव्य करो हे
आत्म सम्मान सहित काम सदा करो, छीना झपटी कभी किया न करो..... (1)
क्षमता से हर कार्य उत्तम करो रे, जमाखोरी दगाबाजी किया न करो रे ऽऽ
व्यवस्था से हर काम किया ही करो रे, लूटपाट उद्दण्डता किया न करो रे
राष्ट्र स्व-पर-विश्व हिते कुर्बानी करो, संकीर्ण स्वार्थ को त्याग ही करो..... (2)
दूसरों की विपत्ति में सहाय बनो रे, अनैतिक लाभ कभी उठाया न करो रे ऽऽ
अफवाह निन्दा द्वेष किया न करो, तिल को ताड़ सम किया न करो
समाचार माध्यम अफवाह न फैलाये, सत्य तथ्य का ही प्रसार करो रे..... (3)
भारतीय संस्कृति का ध्यान भी रखो रे, 'कनकनन्दी' कहे विकास करो रे
दूसरों से अच्छी शिक्षा पाया ही करो, विकास के कारणों को स्वीकार करो..... (4)

स्वास्थ्य एवं शान्ति प्राप्ति के उपाय (17)

(तर्ज - केवल रवि किरणों.....)

शरीर स्वस्थ्य हो मन स्वस्थ्य निमित्ते, मन स्वस्थ्य हो आतम के हित में,
आत्म स्वस्थ्य हो मन भी स्वस्थ्य, स्वस्थ्य मन हो सबके हित में।। (टेक)
परस्पर होते हैं आश्रित तीनों, तन-मन और आत्मा भी जानो।

उत्तरोत्तर बलवान् है तीनों, आत्मा की शक्ति अनन्त जानो।। (1) शरीर....
मन की शक्ति असंख्यात मानों, तन की शक्ति संख्यात प्रमाण।
तीनों स्वस्थ्य से इन्द्रियाँ स्वस्थ्य, अस्वस्थ्य इन्द्रियाँ घातक मानो।। (2) शरीर....
इसके लिये हो शुद्ध विचार, व्यायाम-प्राणायाम शाकाहार।
आत्म शोधन व सदाचार, परोपकार उदार विचार।। (3) शरीर....
मन वश से इन्द्रियाँ भी वश हो, इससे भी होते तन आतम वश।
इससे जो शक्ति उत्पन्न होती, सभी कार्यों को वश में करती।। (4) शरीर....
जो आत्म जयी वो विश्व जयी, अन्य सभी जन होते हैं पराजयी।
राजा-महाराजा व सम्राट, आत्म पराजयी होते क्षयी।। (5) शरीर....
धनी-गरीब तो भौतिक जानो, शान्ति के स्रोत ही आतम मानो।
आत्मा की शुद्धि शान्ति पैमाना, शान्ति की सीमा अनन्त जानो।। (6) शरीर....
बाह्य धर्माचार, शिक्षा कानून, साधन है नहीं साध्य निदान।
सत्यनिष्ठा और समता भाव, साध्य साधना दोनों ही मानो।। (7) शरीर...
इसी हेतु है राजा व रंक, शान्ति प्राप्ति से हुये महंत।
सर्वत्यागी हुये आतम साधक, तीर्थेश सूरी गण पाठक।। (8) शरीर...
है 'कनकनन्दी' की यही भावना, मैं भी करूँ नित आत्म साधना।
संसार सत्य मारग पे चले, स्वस्थ्य, सत्य, शान्ति को वरें।। (9) शरीर..

महापुरुष की महानता, उनका विरोध तथा आराधना (18)

- आचार्य कनकनन्दी

(रागः जय हनुमान ज्ञान...)

जय जय महापुरुष महान्, सरल सहज व्यक्तित्ववान्।
सनम्र सत्यग्राही युग प्रधान, सादा जीवन उच्चविचारवान्।। (टेक)

पराया अपना भेद विहीन, ऊँचनीच पक्षपात हीन।
धनी गरीब में भेद विहीन, संकीर्ण भाव से तुम हो हीन।। (1)
समदर्शी हो नीतिवान्, सदय हृदय विवेकवान्।
धैर्य में हो तुम वज्र समान, दिल में हो नवनीत समान।। (2)
बालकवत् है तेरा जीवन, भोला भाला उदारवान्।
आकाश सम व्यापकवान् सूर्य सम तू तेजवान्।। (3)
हानि वृद्धि में चन्द्र समान, दीन हीन न अहंवान्।
समुद्र सम गंभीरवान्, सुमेरू सम हो अचलवान्।। (4)
कमल सम निर्लिप्तवान्, शिरीष कुसुम सा मृदुवान।
मन्दबयार सम वचनवान्, तेरा वचन हित मित प्रियवान् (5)
संकीर्ण परम्परा से तू हो ऊपर, वर्गविहीन है तेरा विचार।
सत्ता सम्पत्ति/(शक्ति) को करो नकार, सत्य तथ्य से तेरा सरोकार (6)
तू हो अलौकिक प्रवृत्तिवान्, रागद्वेष से विरक्तवान्।
इसलिए लोक से तू अनजान विरोध करे वे हैं अनजान।। (7)
तुझे वे माने विक्षुब्धवान्, अज्ञानी असभ्य विवेक हीन।
तुझे मानकर असामाजिकजन, विविध प्रकार करे अपमान। (8)
प्रताड़न मारन व अपमान, गाली अपशब्द कहे मूढ़जन।
बहिष्कार व छेदन भेदन, हत्या तक तेरी करे अज्ञजन।। (9)
तथापि तू रहे क्षमावान्, अविचल निर्विकारी धैर्यवान्।
स्वपरविश्वहिते ध्यानवान्, विवेकदया से युक्तवान्।। (10)
तेरी मृत्यु बाद सब गुण गाये, पूजा अर्चना करे शीश नाये।
मन्दिर मजार चर्च बनाये, मूर्तिस्थापना करे स्तुति गाये।। (11)
इससे वे स्वार्थसिद्धि करे हैं, स्वख्याति पूजा लाभ वरे हैं।
पंथमत की संकीर्णता बढ़ाये, मानव में भेद भाव बढ़ाये।। (12)

तेरा आदर्श (को) माने अल्प जन, अनुकरण करे न्यून प्रमाण।

जो अनुकरण करे वे हैं महान्, आदर्श को माने वे हैं सज्जन। (13)

विरोध न करे वे भद्रजन, विरोध करे वे सब दुष्ट जन।

संसार में नानाविध विचारवान्, सरस निरस व विष समान।। (14)

विश्व इतिहास तेरा साक्षी जान, आधुनिक में भी प्रवाहमान्।

'कनकनन्दी' करें गुण बखान, विश्व मानव करे गुणी पहचान।। (15)

सेमारी - 17-4-2011 मध्याह्न - 2 :28

वैष्णव राग - दीनदयाल विरद सम्हारी...

पर्व से पवित्र बने न कि पतित (19)

(पालनीय एवं त्यजनीय पर्व)

- आचार्य कनकनन्दी

पवित्र भाव से पर्व मनाओ, होली दीवाली पर्युषण जानो।

सत्य प्रेम व दया अपनाओ, विश्वमैत्री का गाना गाओ।।

तन मन वाचा करो पवित्र, स्वच्छता शान्ति फैले सर्वत्र।

पर्व के उच्च आदर्श मानो, उत्साह सहित उत्सव मानो।।

वैर विरोध व्यसन भी त्यागो, ज्ञान ज्योति से जगाओ जागो।

शील सदाचार शृंगार करो,फैशन अश्लीलता परिहारो।।

पर्व के उत्स गुण व गुणी से,करो आदर बहुमान से।

शोध-बोध से प्रचार करो, कर विस्तार स्वयं स्वीकारो।।

पर्व के नाम से करो न हिंसा, मिथ्या बढ़ाने न करो प्रशंसा।

फैशन-व्यसनों से न हो पतित, प्रदूषण जनक न कर कृत्य।।

सादा जीवन उच्च विचार शिक्षा, पर्व में न हो कभी उपेक्षा।

पर्व से जुड़े सब सुगुण सज्जन, इसीलिए पर्व का हुआ है सर्जन।।

पर्व से जुड़े हैं समाज या धर्म, पर्व से प्रभावित ये भी दोनों।

इसलिए दोनों के हित निमित्त, पर्व में औचित्य होना उचित।।

औचित्य शिक्षा आदर्श बिना, पर्व मनाना पतित ही माना।

ऐसे पर्व को करो परिष्कार, अन्यथा करो उसे बहिष्कार।।

रोमन पर्व या ग्लेडिएटर युद्ध, परस्पर दासों का होता था युद्ध।

संभ्रान्त वर्ग वहाँ आनन्द लेते, क्रूर युद्ध से दास ही मरते।।

मय सभ्यता के नरबलि पर्व, पशुबलि आदि बर्बर पर्व।

दास हत्या के रोमन पर्व, मानव जाति के कलंक पर्व।।

दास प्रथा सम त्यजनीय सर्व, धर्म या राष्ट्र के यदि हो पर्व।

पवित्र करें सो सेवनीय पर्व, त्यजनीय है सर्व पतित पर्व।।

मांस भक्षण या सुरापान, द्यूत व्यसन या वेश्यागमन।

भ्रष्टाचार या जीव हनन, पर्व में न हो कुमनोरंजन।।

जन्म, मृत्यु या विवाह, खेल में, ये कुकृत्य न हो कभी विश्व में।

'कनकनन्दी' की भावना सदा, विश्व में हो पवित्र उत्सव सदा।।

पूजा-सेवा-दान-त्याग की महिमा (20)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो....)

पूज्य के प्रति भक्ति सन्मान, सो होती है पूजा विधान।

प्रणाम आरती अभिषेक वन्दन, प्रार्थना स्मरणादि होता है पूजन।। टेक/धत्ता।।

इससे पूजक होता लाभान्वित, पूज्य को नहीं होता है लाभ।

पूज्य यदि है होता सगर्वित, होता है वह अपूज्यवान्।। पूज्य के प्रति..।।1।।

सेवा-दान से उभय लाभान्वित, दाता व पात्र दोनों भी जान।
दाता को संतुष्टि पुण्य की प्राप्ति, कीर्ति की प्राप्ति होती है जान।। पूज्य के..।।2।।
आहार औषधि निवास शास्त्र से, पात्र का होता कल्याण जान।
स्व-पर उद्धार करने के योग्य, होता है सुपात्र जन महान्।। पूज्य के प्रति।।(3)
इस हेतु है पूजा से महान्, सेवा दान भी दोनों ही जान।
तीर्थंकर की पदवी पावे, ऐसा महान् है सेवा व दान।। पूज्य के प्रति।।(4)
त्याग में होता है सर्वस्व त्याग, संकल्प विकल्प आसक्ति त्याग।
स्व-आत्म भिन्न सर्व उत्सर्ग, आकिञ्चन्यत्व सर्वोच्च भाव।। पूज्य के।। (5)
इसे कहते हैं सर्व संन्यास, इससे बनते हैं साधु तीर्थेश।
गणधर पाठक आचार्य महान्, केवली सिद्ध बने भगवान्।। पूज्य के प्रति।। (6)
इस अपेक्षा से त्याग महान्, साक्षात् मोक्ष के कारण जान।
सर्व से पूजनीय होता है त्यागी, पूजक सेवक दानीराजन।। पूज्य के प्रति।। (7)
वन्दे तद्गुण लब्धये पूजा के भाव, अरिहन्त सिद्ध या स्वर्गीय जीव।
पूजनीय वे होते हैं विशेषतः, जीवन्त पूज्य होते उपेक्षित।। पूज्य के प्रति।। (8)
जीवन्त पूज्य की पूजा आरती से, अधिक करणीय सेवा दान है।
इससे त्याग की प्रवृत्ति जागे, त्याग से निर्वाण पदवी पावे।। पूज्य के प्रति।। (9)

गृहस्थाश्रम (परिवार संस्था) (21)

(तर्ज - धार लिया जिनने....)

परिवार न होता है हे भव्य ! धन जन जमीन योग से।
परिवार तो होता है धर्म, अर्थ, काम योग से।। (टेक) धर्म...
घर में तो पशु-पक्षी रहते, चोर-वेश्या भी रहे
ईंट पत्थर से घर बनते, तो भी गृहस्थाश्रम न बने
जिस गृह में रहते हैं सज्जन, संस्कार युक्त सभी परिजन

चारों आश्रम के मूल आश्रम, धर्म अर्थ काम मोक्ष से।। (1) परिवार...
गर्भ संस्कार से प्रारंभ जान, प्रथम वय में विद्या अर्जन
ब्रह्मचर्य युक्त सादा जीवन, रंक से राव सभी सम जन
यतिव्रत के धारणे अयोग्य, शील सहित पाणिग्रहण
धर्म अर्थ काम मोक्ष निमित्त, सन्तान उत्पत्ति मर्यादा से।। (2) परिवार...
दान पूजा व व्रत उपवास, अतिथि सेवा करे विशेष
मात-पिता की सेवा करके, परिवार की व्यवस्था करें
न्याय सहित धन कमायें, दयादत्ति क्लिष्टों की करें
अणुव्रतों का पालन करके, सप्त व्यसन अष्ट मद त्यागे।। (3) परिवार..
समाज राष्ट्र के हित निमित्त, विविध कार्य करें रुचि से
तृतीय वय के प्रारंभ काले, गृहत्याग करें व्रतों को पालें
साधुसंतों की सेवा भी करें, चतुर्थ वय सन्यास वरें
इस विधि होता गृहस्थाश्रम, स्वपर हित में श्रम जो करें।। (4) परिवार...
'कनकनंदी' की भावना यह, मोक्ष पुरुषार्थ प्रधान हो
जो पुरुषार्थ करे मानव, स्व-पर-विश्वकल्याण हो
भोग से बने परिवार, स्वार्थ प्रधान भी न होता
परस्पर स्नेह सहयोग से, परिवार है बनता सच्चा।। (5) परिवार...

एकता में शक्ति (22)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज- यमुना किनारे श्याम.....)

संगठन का काम किया ही करो, अच्छे अच्छे काम सब किया ही करो।
संघे शक्ति कलियुगे कहा जाता है, एकता से बड़ा काम शीघ्र होता है।
बिन्दु बिन्दु मिलकर सिन्धु बना है, ईंट ईंट मिलकर घर बना है।। टेक।।

धागे धागे मिलकर वस्त्र बना है, पद पद मिलकर शास्त्र बना है।
अणु अणु मिलकर विश्व बना है, सेल सेल मिलकर देह बना है।
एकता की शक्ति है अपरम्पार, चींटी की एकता से मारा जाता विषधर।। (1)
मानव की एकता से समाज बना है, समाज से राष्ट्र का निर्माण हुआ है।
एकता रहित समाज भीड़ होती है, भीड़ में न सिद्धान्त न शक्ति होती है।
भेड़ की भीड़ में शक्ति नहीं है, अकेले गीदड़ से मारे जाते हैं।। (2)
एकता रहित विश्वगुरु बना गुलाम, गुलाम वंश के भी बना गुलाम।
एकता के बल पर अस्त्रहीन देशवासी, आजादी को प्राप्त हुए भागे साम्राज्यवादी।
रेशों की एकता से बनती रस्सी, जिससे बन्धता है विशाल हस्ती।। (3)
एकता की शक्ति को माने मानव, भेद-भाव की दीवारें तोड़े मानव।
मानव समाज बने विश्व मानव, सच्चे अच्छे काम को करे सम्भव।
'कनकनन्दी' सदा एकता प्रेमी, प्रेम जो करे सो होता है स्वामी।। (4)

सेमारी (राज.) दि. 21-4-2011 प्रातः 5:53

मेवाड़-बागड़ संस्कृति की विशेषता! (23)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज- चन्दा मामा दूर के.....)

मेवाड़ संस्कृति सबसे प्यारी, बागड़ संस्कृति सबसे न्यारी
सहज-सरल वात्सल्य वाली, अतिथि सत्कार करने वाली.... (टेक).....
यहाँ की धरती पहाड़ वाली, डूंगर थूअर नीम नीमोली
मयूर तोता कोयल वाली, तले तलैया पथरीली वाली.... मेवाड़. .... (1)
जंगल मैदान खेत निराले, ग्राम ढाणी व शहर वाली
प्राकृतिक प्रकोप रहित वाली, प्रदूषणों से रहित वाली.... मेवाड़ ..... (2)
भोली-भाली है प्रजा निराली, वात्सल्य प्रेम सेवा वाली
एकता-शान्ति से रहने वाली, धार्मिक सौहार्द पालने वाली.... मेवाड़ ..... (3)
जैन हिन्दु व मुस्लिम भाई, मीणा बोहरा सिक्ख ईसाई

सब में सौहार्द मित्रता होई, सुःख-दुःख में साथ निभाई.... मेवाड़ ..... (4)
जैन सन्तों का सन्मान करे, भक्ति-भाव से सभी निहारे
प्रवचन आशीष सब कोई पाये, मन हरषाये तन पुलकाये.... मेवाड़ ..... (5)
ग्राम शहरों में साधु विचरें, जैन सन्त यहाँ विहार करें
जीवन्त संस्कृति दर्शन होता, मानस हंस भी पुलकित होता.... मेवाड़ ..... (6)
राणा प्रताप से महान् हुए, भामाशाह से दानी हुए
पन्नाधाय का त्याग भी महा, चेतक जैसा अश्व भी यहाँ.... मेवाड़ ..... (7)
'कनकनन्दी' यह भावना भाये, पूर्ण भारत ऐसा बन जाये
शान-मान-दान शान्ति से जीये, संस्कृति पाले मोक्ष को जाये.. मेवाड़ ..... (8)

झाड़ोल (स.) दि. 21-5-2011 रात्रि 1:48

पावन व पतिता नारी (24)

(तर्ज- हे अम्बे जिनवाणी..... 2. बंगला राग .....)

जननी जननी हे जननी, जय हो मानव की जननी। जय..... (टेक)
तीर्थेश गणेश की तुम जननी, ऋषि मुनि की श्रेष्ठ जननी
सम्राट चक्री की तुम जननी, मनु आर्य की महति जननी।। (1) जननी.....
ब्राह्मी सुन्दरी सीता चन्दना, गार्गी लीलावती तुम प्रसिद्धा,
जीजाबाई व मदरटेरेसा, लक्ष्मीबाई व मीरा माता।। (2) जननी.....
जग प्रसिद्धा अनेक माता, कला ममता वात्सल्य दाता,
कोमल करुणा सेवा शुचिता, तुमारे गुण अनेक माता ।। (3) जननी.....
गृहणी तुम हो गृह स्वामी की, माता तुम हो सब सन्तान की,
भगिनी तुम हो सब भाई की, पुत्री तुम हो मात पिता की।। (4) जननी.....
गृह प्रबन्धिनी पाक कलाज्ञी, संस्कार दात्री सेवा की धात्री,
पर्व उपवास वहन कर्त्री, त्रिवर्ग सहयोगिनी पात्री, ।। (5) जननी.....
साधु संत की आहार दात्री, श्राविका ब्रह्मचारिणी पात्री

क्षुल्लिका आर्यिका गणनी पात्री, विदुषी लेखिका ज्ञान दात्री।। (6) जननी.....

गर्भपात व फैशन व्यसन, अश्लीलता व कामुक भाव,

ईर्ष्या झगड़ालु निंदक भाव, बातूनी स्पर्द्धा कुनारी भाव।। (7) जननी.....

आधुनिकता का मद तुम त्यागो, शील सुगन्धता तुम फैलाओ,

संस्कार पाओ संस्कार दो, शरीर मोह तुम न पालो।। (8) जननी.....

कुभाव त्यागो सुभाव धारो, सम्यक्त्व युक्त व्रत भी पालो,

परम्परा से मोक्ष भी वरो, आध्यात्म सुख तुम भी पा लो।। (9) जननी.....

स्व-पवित्र भाव ही स्वधर्म तथा स्व-अपवित्र भाव ही विधर्म (25)

(स्वधर्म से शान्ति-विधर्म से अशान्ति)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज- यमुना किनारे श्याम.....)

अपवित्र भाव कभी किया न करो, अशान्ति को निमन्त्रण दिया न करो

अपवित्र भाव से तीव्र संक्लेश होता है, जिससे पाप का आस्रव होता है

जिससे तन-मन-आत्मा अस्वस्थ होते हैं, अनेक समस्याएँ सहनी होती हैं... (टेक)

पवित्र भाव सदा किया ही करो, शान्ति से जीवन को जीया ही करो

पवित्र भाव से आल्हादित मन होता है, जिससे पुण्य का आस्रव होता है

जिससे तन-मन-आत्मा स्वस्थ्य भी होते हैं, इहलोक परलोक सुखी होते हैं..(1)

ईर्ष्या द्वेष घृणा लोभ कामुक भाव हैं, आसक्ति तृष्णा मोह अपवित्र भाव हैं

अपवित्र भाव त्याग से पवित्र भाव हैं, दोनों भाव परस्पर विरोधी भाव हैं

दोनों भावों का कर्त्ता-भोक्ता स्वयं जीव है, भाव ही भाग्य भविष्य का निर्माता है..(2)

अपवित्र भाव जब जहाँ भी होता है, उपरोक्त फलों का भोक्ता भी होता है

पवित्र भाव भी जब जहाँ भी होता है, उपरोक्त फलों का भोक्ता भी होता है

धर्मस्थल कर्मस्थल भजने भोजने, भाव ही फलदायक प्रमुख सर्व में..(3)

धर्म साधना में यदि भाव अशुद्ध है, अशुद्धता का फल मिलना भी सिद्ध है

अशुद्ध भाव सर्वथा होता अधर्म है, पवित्र भाव सदा होता सुधर्म है

स्वयं को पवित्र करना सर्वोच्च/(सर्वत्र) स्वधर्म, स्वधर्म ही सुधर्म है अन्य है कुधर्म ..(4)

स्वधर्म ही सुधर्म है, सुधर्म ही सुख, अधर्म ही विधर्म है, विधर्म ही दुःख

स्वधर्म स्वयं में तथा स्वयं ही सुधर्म, स्वयं को पवित्र करना धर्म का है मर्म

इसलिए स्वधर्म है सरल-सहज, धन जन आडम्बर बिना भी सुलभ..(5)

अधर्म संक्लेशकारी विधर्म कुधर्म, परावलम्बी परतन्त्रकारी है कुकर्म

अतएव सर्वथा त्यजनीय है कर्म, यह है सुख प्राप्ति के सर्वोच्च मर्म

'कनकनन्दी' सर्वदा स्वधर्म साधक, आत्मिक शान्ति के लिए विधर्म बाधक...(6)

टोकर (राज.), दि. 14-6-2011 मध्याह्न - 3.27

यदि यह कर न सको तो वह करो (26)

(तर्ज - दुःख से घबराओ... (2) वह शक्ति हमें ....)

आचार्य कनकनन्दी

त्याग तपस्या यदि कर न सको तो, ईर्ष्या द्वेष भी मत करना।

ईर्ष्या द्वेष यदि नहीं करते तो, यह ही बड़ा तप ग्रंथ कहता।। (टेक)

पूजा पाठ यदि कर न सको तो, वैर-विरोध नहीं करना,

शान्ति समता से यदि रहते तो, यह ही बड़ा धर्म श्रुत कहता।। (1)

पर्व तीर्थयात्रा यदि न कर सको तो, शोषण भ्रष्टाचार नहीं करना,

सदाचार सन्तोष पालन करो यदि, सबसे बड़ा पुण्यकर्म कहा।। (2)

धर्म ग्रंथ साहित्य यदि पढ़ न सको तो, गुणग्राही तुम सदा बनना,

सत्य अनुभव के मार्ग पे चलके, शान्तिमय जीवन तुम वरना।। (3)

धन त्याग यदि कर न सको तो, तन मन से सेवादान करना,

तन मन से साधु धर्म हैं करते, तुम भाव से न पीछे हटना।। (4)

उपकार यदि तुम कर न सको तो, अपकार भी नहीं करना,

पानी यदि न पिला सको तो, जहर कभी न पिला देना।।(5)

हित मित प्रिय बोल न सको तो, मौनव्रत धारी सदा बनना,

वचन पालन कर न सको तो, झूठा वचन कभी न देना।। (6)

विश्व समाज सुधार न सको तो, स्वयं का सुधार तुम करना,

स्वयं का सुधार करके तुम ही !, विश्व सुधार हिस्सा बनना।। (7)

आत्महित सहित परहित करना, पहले स्वयं को सही बनाना,

जो दीपक स्वयं प्रज्ज्वलित होता, अन्य प्रकाशित स्वयं ही होता।।(8)

तीर्थंकर बुद्ध महापुरुष आदि, पहले पवित्र स्वयं बनते,

उनके निमित्त विश्व पवित्र होता, 'कनकनन्दी' वही मार्ग चले।।(9)

केजड़ 31-5-2011, मध्याह्न 1:56

सुभाव से जीवन निर्माण एवं निर्वाण (27)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - चौपाई....)

(जीव है जिनवर सम, जिनवर है जीव समान।

एक है भूत अवस्था, दूजी भावी (आगामी) जान।।) (दोहा)

बीज में वृक्ष होता सुप्त-गुप्त, चतुष्टय प्राप्त से होता वृक्ष।

द्रव्य क्षेत्र काल भाव सु जान, चतुष्टय से वृक्ष होता महान्।। (1)

तथाहि जीव में जिन है सुप्त, चतुष्टय प्राप्त होता प्रगट।

आध्यात्मिक क्रमविकास के द्वारा, होते आत्मगुण प्रगट सारा।। (2)

चतुष्टय में भाव प्रधान जान, बीज की शक्ति यथा है जान।

पृथ्वी जल वायु बाह्य कारण, बीज की शक्ति अन्तरंग कारण।। (3)

भाव से भाग्य भावी निर्माण, जीवन निर्माण व निर्वाण।

भाव करना स्व-आत्म आधीन, बाह्य कारण पर द्रव्य आधीन।। (4)

इसलिये सुभाव करो सुजान, जिससे सहज हो विकासमान।

कभी भी कुभाव न करो सुजान, जिससे अवरूद्ध हो विकासमान।। (5)

क्रोध मान माया लोभ को त्याग, जिससे बनेगा उत्तम भाग्य।

पुरुषार्थ करो सुभाग्य सहित, जिससे होगा आत्मा का हित।।(6)

आत्म-विकास ही श्रेष्ठ विकास, जिससे मिले अनन्त सुखवास।

इसे ही कहते निज अवस्था, जिन अवस्था ही निज अवस्था।। (7)

'कनकनन्दी' सदा प्रयासरत, अन्य प्रयास तो आनुसंगिक।

प्रत्येक जीव करे आत्मप्रयास, जिससे मिलेगा मोक्ष निवास।। (8)

सराडा दि. 2-6-2011, मध्याह्न - 3:34

विश्व शान्ति पाठ पढ़ाते हैं भारतीय सूत्र (28)

(वैश्विक ज्ञान-विज्ञान है भारतीय ज्ञान)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - क्या मिलिये ऐसे लोगों से... (2) आत्म ज्ञान की ज्योति जलाले....)

भारतीय महानता के सूत्र अपनाओ, वैश्विक समस्या का समाधान पाओ।

'अहिंसा' सिखाती विश्वशान्ति पाठ, उदारता सिखाती विश्वमैत्री पाठ ।।1।। (टेक)

'परस्पर उपग्रह' सिखाता हमें, पर्यावरण की रक्षा करना,

वैश्विक कानून 'पंचव्रत' सिखाते, 'सत्य समता' संविधान गाते।। (1)

'जीओ और जीने दो' लोकतंत्र बताता, 'अपरिग्रहवाद' समाजवाद सिखाता।
'सर्व जीव समान' जीवाधिकार को बताता, 'क्षमाधर्म' निरस्त्रीकरण बताता। (2)
'सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितं' सह अस्तित्व बताता, 'आध्यात्मवाद' वैश्विक बनाता,
'अनेकान्त सिद्धान्त' व्यापक बनाता, 'स्याद्वाद' सहचर्या जो सिखाता।। (3)
'शाकाहार' से त्रस जीवों की रक्षा, 'निर्व्यसनी' से स्वास्थ्य सुरक्षा.
'सादा जीवन उच्च विचार', 'विनम्रता' गुणग्राही व्यवहार।। (4)
'पंच अजीव' से विज्ञानी बनते, 'पुद्गल' से भौतिकवादी बनते।
'लोकालोक' से विश्वविज्ञानी बनते, 'अगुरुलघु' से एम-थ्योरी जानते।।(5)
'नयप्रमाण' से तर्क के ज्ञाता, 'लेश्याज्ञान' से मनोज्ञाता,
'गुणस्थान' आत्मविकास सिखाता, 'ध्यान' आत्मबल को जगाता।।(6)
'स्वावलम्बन' सिखाये श्रमशील होना, 'श्रमण' से समताचारी बनना,
'चारों आश्रम' जीवन प्रबन्ध सिखाते, 'चारों पुरुषार्थ' उद्यमी बनाते।। (7)
'महान्पुरुष' हमारे आदर्श होते, 'धार्मिक ग्रंथ' विश्वकोष होते,
'संस्कृति' हमारी आत्मिक होती, 'परम्परा' हमारी शिक्षाप्रद होती।। (8)
इसलिये भारत 'विश्वगुरु' कहलाया, विज्ञान-गणित 'आद्यगुरु' कहाया,
अब हमें स्वयं को जगाना पड़ेगा, तब विश्व में अग्रस्थान बनेगा।। (9)
'कनकनन्दी' सनम्र प्रयासरत है, जगकर जगाने का प्रयास सतत है,
अमृत पुत्र हम अमृत पीयेंगे, 'विश्व हित' हेतु अमृत बाटेंगे।। (10)

केजड़ 31-5-2011, मध्याह्न 3:30

प्रो. विटनी बॉमन से भेंट की स्मृति में आचार्य कनकनन्दी द्वारा रचित उक्त कविता

आ. कनकनन्दी के पास प्रायः ढाई घण्टे रहे। आचार्य श्री ने उन्हें प्रायः डेढ़ घण्टे पढ़ाया, जिसमें से आधा घण्टा इस (विश्वशान्ति पाठ...) कविता के माध्यम से अंग्रेजी में पढ़ाया।

प्रो. विटनी का अभिमत

Thanks for this poetry. It is a tribute to planetary becoming a recognition that we human being live in a multi-perspectival world, evolving toward an unknown future.

Your work on "religion & science" is truly inspiring me to work harder toward a better planetary future for all life on the planet.

In search of the many truths, May I never fall into the Slumber of ignorance & blind faith" whatever form it may take In gratitude.

Whitney Bauman, Ph.d

Assistant professar of religion and science

FUIB FLORIDA INTERNATIONAL UNIVERSITY

Religious studies

11200 S. W. 8th St, University park, DM-301 A.

Miami, FL 33199

Tel - 305-348-3348. Fax : 305-348-1879

wbauman@flu.edu www.religion.fiu.edu

परिच्छेद -2

आध्यात्मिक की महानता से प्राप्त शिक्षाएँ

रवीन्द्र संगीत (शास्त्रीय राग)

(रागः रख लाज मेरी श्रीपति)

आध्यात्मिक प्रार्थना

अन्तर मम विकसित करो (1)

-आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - 1. हमको मन की शक्ति देना... 2. बच्चों तुम निर्माता हो...)

अन्तर मम विकसित करो, अन्तरतम हे !
निर्मल करो पावन करो निर्भय करो हे ! (टेक/स्थायी)
शत्रु-मित्र भेद-भाव रह न सके मन/(भाव) में,
ख्याति पूजा लाभ हानि से अप्रभावी बने,
दुःख शोक दीन हीन से हो जाऊँ परे,
सांसारिक बन्धन भी टूट जायें पूरे।।... अन्तर मम...(1)
बाधा विघ्न मान काम कट जाये सारे,
लोभ क्रोध ईर्ष्या द्वेष हट जाये सारे,
संकीर्ण के जञ्जीर भी टूट जाये सारे,
नभ सम विस्तार भी हो जाऊँ पूरे।। ...अन्तर मम (2)
आत्म ज्योति जग उठे मोहतम हो दूर,
सत्य न्याय पथ पे चलकर आगे ही बढ़ूँ,
अन्याय व अत्याचार संसार से दूर करूँ,
वैश्विक सुख व शान्ति हो जग में भरपूर।। ... अन्तर मम (3)
वज्र सम कठोर व फूल से भी कोमल,
अग्नि से भी ताप व चन्दन से शीतल,

मेरू सम धैर्य व नभ सम निर्मल
सर्वजीव साम्य भाव होऊ मैं सरल।।... अन्तर मम (4)
अनेकान्त दृष्टि होऊ परस्पर प्रेम पले,
पर दुःख कातरता सब जीव धरें,
आत्म सम सर्व जीव दूसरों से भाव धरें,
'कनक' का भाव सदा सत्य पे चलें।। ... अन्तर मम (5)
(विहार में रात्रि विश्राम) मीणावाडा ढाणी, दि. 29-4-2011 रात्रि 2.02

स्वात्म स्मरण : अध्यात्म रमण (2)

(तर्ज - रघुपति राघव...हूँ स्वतन्त्र निश्चल...आतम दर्शन विरला)

मैं हूँ शुद्ध चिन्मय स्वरूप, नित्यानन्द नय मेरा रूप।
सत्य साम्य हूँ सुख स्वरूप, चिज्ज्योति मय मेरा रूप।। (1)
अनन्तवीर्य हूँ ज्ञान स्वरूप, अव्याबाध है मेरा रूप।
ऊर्ध्वगामी हूँ चैतन्य रूप, सूक्ष्मातिसूक्ष्म अमूर्त रूप।। (2)
निर्विकार हूँ सिद्ध स्वरूप, ज्ञानानन्दमय मम स्वरूप।
विश्व का हूँ मैं साक्षी स्वरूप, ज्ञाता-दृष्टा है मेरा रूप।। (3)
जन्म-मरण से रहित है रूप, निराकार मय ध्रुव स्वरूप।
चिच्चमत्कार है मेरा रूप, सत्यं शिवं मय सुन्दर रूप।। (4)
हानि-लाभ परे पूर्ण स्वरूप, अव्यय, अविकारी ब्रह्म स्वरूप।
शरीर मन से रहित है रूप, भेद-भाव बिन साम्य स्वरूप।। (5)
हिंसादि वर्जित अमृत रूप, रत्नत्रयमय मेरा स्वरूप।
क्रोध, मान, माया रहित रूप, क्षमा शौचमय मेरा स्वरूप।। (6)
दृश्य-श्राव्य-रस रहित स्वरूप, आकाश सम हूँ अमूर्त स्वरूप।

अनन्त गुण के खान स्वरूप, अनन्त वैभव स्वामित्व रूप।। (7)

नर-वानर से रहित स्वरूप, इन्द्रिय यन्त्र से अज्ञ है रूप।

पवित्र भाव से ज्ञात स्वरूप, ज्ञानानन्दमय सर्वोच्च है रूप।। (8)

स्वात्म स्मरणमय आध्यात्म रूप, सम्पूर्ण धर्म का अन्तिम रूप।

अन्यथा भाव हैं विकार रूप, दुःख समूह के कारण भूत।। (9)

सिद्ध स्वरूप है भावी रूप, नर तिर्यंचादि भूत स्वरूप।

सर्व शुद्ध है निश्चय रूप, व्यवहार सापेक्ष अनन्त रूप।। (10)

भावी रूप है लक्ष्य स्वरूप, नारक तिर्यंच त्याज्य स्वरूप।

साधनभूत है मानव रूप, आध्यात्म साधना कारण भूत।। (11)

इन्द्रादि वन्दित है शिवरूप, सर्वज्ञ प्रत्यक्ष है मेरा रूप।

मोहान्ध अदृश्य विराट रूप, अनुभवगम्य दिव्य स्वरूप।। (12)

'कनकनन्दी' का लक्ष्य स्वरूप, साध्य, साधन भाव रूप।

ध्यान, ध्येय व ध्याता रूप, सच्चिदानन्द है मम स्वरूप।। (13)

आध्यात्म वन्दना (3)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - मिलो न तुम तो हम.....)

पल-पल आतम (आध्यात्म) ज्योति जगा दो (जला दो)

मंगलमय समभाव करूँ मैं वन्दना हो ऽऽ करूँ मैं वन्दना

मन वीणा के मधुर स्वरों में, निशदिन गाऊँ गान, करूँ मैं वन्दना हो ऽऽ करूँ.. (टेक)

ओ मेरे आतमभाव सेवा करूँ मैं भक्ति भाव से हो ऽऽ

हरपल तुमको मैं ध्यान धरूँ निज भाव में हो ऽऽऽ

ज्ञानानंद भाव मुझको भाये मेरा स्वरूप दरसाये।। करूँ.....

तेरे बिना मैंने अनंत दुःखों को पाया है हो ऽऽऽ

तेरा स्वरूप जाने बिन पर को अपनाया है हो ऽऽऽ

पर को अपना मानकर मैंने रागद्वेष अपनाया।। करूँ.....

अब तुझको ही पाकर मैंने अपना स्वरूप पाया है हो ऽऽऽ

तेरी कृपा ने ही मुझको निहाल बनाया है हो ऽऽऽ

तेरी कृपा से सब दुःख नशे हो जावे बेड़ा पार।। करूँ.....

मेरा विश्वरूप (4)

(तर्ज - बिन गुरु ज्ञान नहीं है.....)

मैं ही शुद्ध चिन्मय रूप, भेदाभेद पूर्ण अभेद रूप।

अखण्ड पिण्ड हूँ यथा नभ रूप, असंख्य प्रदेशी हूँ एक रूप।। (1)

नित्य अनित्यमय ध्रुव स्वरूप, स्वात्म स्थित सर्वगत रूप।

कर्त्ता-अकर्त्ता निष्काम रूप, भोक्ता-अभोक्ता हूँ विराग रूप।। (2)

ज्ञाता भी हूँ मैं ज्ञेय स्वरूप, निर्विकल्पमय विज्ञान रूप।

ध्याता भी हूँ मैं ध्येय स्वरूप, स्वयं में स्थित आनन्द रूप।। (3)

आदि भी हूँ मैं अनादि रूप, आदि अन्त शून्य शाश्वत रूप।

बन्ध भी हूँ मैं अबन्ध रूप, आकाश सम में निर्लिप्त रूप।। (4)

निराकार हूँ अमूर्त रूप, ज्ञान घन मय अभेद्यरूप।

अजन्मा हूँ मैं सत्य स्वरूप, अनन्त गुणघन एक रूप।। (5)

निर्विकार उत्पाद व्यय रूप, एकानेक हूँ विश्व स्वरूप।

विश्व प्रतिबिम्बक ज्ञानादर्श, स्वलीनता मेरा है आदर्श।। (6)

चौरासी लाख योनि विकार रूप, अनन्त चतुष्टय मेरा स्व-स्वरूप।

विकार स्वरूप में ही मेरा रूप, कर्म सापेक्ष व विशुद्ध रूप।। (7)

अपूर्वकरण का स्वागत

वन्दे आत्म आनन्दम् (5)

आचार्य कनकनन्दी

(बंगला रागः संस्कृत निष्ठ)

आनन्दं आनन्दं वन्दे आत्म-आनन्दम्.....2
आनन्दं ही नाशे है, कर्म बन्ध सततम् ऽऽऽ.....
आनन्दं आनन्दं वन्दे ज्ञान-आनन्दम्.....2
आनन्दं है सत्यं, शिवं तथा सुन्दरम्/मंगलम्/मांगल्यम् ऽऽ.....
आनन्दं आनन्दं जय शान्ति-आनन्दम्....2
आनन्दं है सत् चित्, सत्य युक्त आनन्दम्.....
आनन्दं आनन्दं नमः परम आनन्दम्.....2
आनन्दं ही जीव का, निज परम स्वभावम्.....
आनन्दं आनन्दं प्रणम्य निज आनन्दम्.....2
आनन्दं ही निमित्तं, मम सर्व साधनम्.....
आनन्दं आनन्दं नमो नित्य-आनन्दम्.....2
आनन्दं विना है, सर्व सुख निष्फलम्/विफलम्.....
आनन्दं आनन्दं नमः सत्य-आनन्दम्.....2
आनन्दं विना है, सर्व तत्त्व निर्जीवम्.....
आनन्दं आनन्दं वन्दे प्रेम/(भक्ति) आनन्दं.....2
आनन्दं अतिरिक्तं, अन्य सर्व शवत्वम्.....
आनन्दं आनन्दं नमो दया-आनन्दम्.....2
स्व-पर की रक्षा में, शुभ हे ! आनन्दम्.....
आनन्दं आनन्दं दया दान-आनन्दम्.....2

स्व-पर के उपकारे, पुण्य है आनन्दम्.....
आनन्दं आनन्दं त्याग है आनन्दम्.....2
परवस्तु विसर्जने, निज हे ! आनन्दम्.....
आनन्दं आनन्दं कर्म क्षये/(नाशे) आनन्दम्.....2
नित्य मुक्त स्वभावे, शुद्ध हे ! आनन्दम्.....
आनन्द घन है रूप, ज्ञानानन्द मूर्तिम्
सच्चिदानन्द है, आत्म विभूतिम्।
सत्य शिव सुन्दरं, विज्ञान धनम्,
'कनकनन्दी' के, परम हे ! लक्ष्यम्।।

धन्य हमारे भाग्य जगे हैं (6)

मेरी (आचार्य कनकनंदी की) भावना एवं कार्य पद्धति

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - रात कली इक.....)

धन्य हमारे भाग्य जगे हैं, आत्म शुद्धि में सतत लगे।
छोड़ के राग-द्वेष मोह ममत्व, निज आतम में रमण करें।। (टेक)
अनादि काल के विषय-वासना, त्याग करके शान्ति को वरें,
विकथा विसंवाद निन्दा व प्रपंच, कटुक विष सम अरुचि लगे।। धन्य.....
ख्याति पूजा लाभ माइक मंच भी, छाया समान सहज चले,
धर्म प्रभावना शिविर संगोष्ठी, साहित्य प्रकाशन सहज चले।। धन्य.....
संकीर्ण पंथवाद धार्मिक क्रियाकाण्ड, राष्ट्र मतवाद परे,
वैश्विक उदारता प्रगतिशीलता, आध्यात्मशीलता ध्येय मेरे।। धन्य.....
कोई न अपना कोई न पराया, कोई न शत्रु न मित्र,

विश्व बन्धुत्व व आध्यात्म भाव से, सबके लिये ही समत्व।। धन्य.....

शरीर निमित्त भोजन औषधि, साधना निमित्त साधन,

आचार्य निमित्त आचार पद्धत्ति, व्यवहार से भी ग्रहण करें।। धन्य.....

कमल सम निर्लिप्त भाव से, संसार मध्य में निवास करे,

'कनकनन्दी' न मेरा नाम है, मम स्वरूप है सबसे परे।। धन्य.....

झाडोल (स.) 20-5-2011, मध्यान्ह 1:58

मन विजयी सो विश्वजयी (7)

(सूत्रात्मक आध्यात्मिक रहस्यवादी कविता)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - बड़ा नटखट है रे कृष्ण कन्हैया.....)

बड़ा नटखट ये मन है मेरा, वैराग्य से इसे संवारा

चञ्चल स्वभावी ग्राहक वाला, आकांक्षा करने वाला ऽऽ हो.... (स्थायी/टेक)

मनएव मनुष्याणां बन्ध मोक्ष के, सुख दुःख कारण भाव अभाव के

भोगाभोग कारण इच्छा अनिच्छा के, ऐसा है मेरा द्विविधा मन के..... बड़ा.... (1)

एकाग्र मन है ध्यान भाव के, व्यग्रता मन है कर्म बन्ध के

असंज्ञी भाव है मिथ्यादृष्टि के, मन से अतीत है पूर्ण ज्ञान के..... बड़ा.... (2)

मन है देखता स्वप्न नींद में, मन है देखता स्वप्न दिन में

मन है देखता स्वप्न भाव में, मन है देखता स्वप्नाभाव में..... बड़ा.... (3)

मन वश का उपाय स्वयं में, मनावश का उपाय स्वयं में

ज्ञान वैराग्य है उपाय वश के, अभाव इनके मनावश के..... बड़ा.... (4)

मन वश वाला है शाहनशाह, मनावश वाला है नौकरशाह

मन के अभाव कुज्ञान वाला, मन के परे है सर्वज्ञ वाला..... बड़ा.... (5)

मन से उत्कृष्ट जीव मानव, मन से उत्पन्न मनोविज्ञान

मन के तन्त्र से होता है मन्त्र, मन जय से है विजय तन्त्र..... बड़ा.... (6)

मन विजयी सो विश्व विजयी, मन के वश से विश्व के दास

'कनकनन्दी' है मोह से उदास, आध्यात्म ज्योति से सर्व प्रकाश..... बड़ा.... (7)

झाड़ोल (स.) 21-5-2011, रात्रि 1:03

स्वात्म चिंतन (8)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - बहुत प्यार करते है तुमको... 2. गुरु तेरे चरणों में स्वर्ग पा...)

स्वामी तेरे चरणों में शान्ति पा रहा हूँ।

धन व मान क्या मैं तुम्हें पा रहा हूँ।। (टेक)

तुम्हीं मेरे माता-पिता व सखा हो,

तुम्हीं मेरे मोक्षमार्ग तुम्हीं मोक्षदा हो,

तुम्हीं मेरे सत्य साम्य, तुम्हीं मेरे प्राप्य हो।। स्वामी.....

तेरे चरणों के बिन स्वर्ग में ना सुख है।

तेरी संगति के बिन न सम्पदा से सुख है,

तेरे बिना शक्ति-शिक्षा से दुःख पा रहा हूँ।। स्वामी.....

आत्मा तुम्हीं स्वामी तुम्हीं मेरे सर्वस्व

अनन्त गुणों के स्वामी तुम बिन निस्व,

मोह में क्यों निज को भूला जा रहा हूँ।। स्वामी.....

तेरे चरणों से दूर होता गया जो,

देव-दानव राजा, निस्व हो गया वो

इन सब दुःखों से मैं घबरा रहा हूँ।। स्वामी.....

तेरी ही प्राप्ति हेतु, ज्ञान-ध्यान-पूजा
तेरी प्राप्ति बिना इन कार्यों में हर्जा
स्वात्मोपलब्धि शान्ति अपना रहा हूँ।। स्वामी...

दोहा - आत्मा का मैं भक्त हूँ, बनने हेतु भगवान्।
भव्य भक्त ही बनता है, निश्चय से भगवान्।।

मेरा अन्तिम लक्ष्य : सच्चिदानन्द (9)

(तर्ज - वीतराग सर्वज्ञ नमस्ते...अनन्तनाथ)

- आचार्य कनकनन्दी

आत्मशान्ति है अन्तिम लक्ष्य, उसके निमित्ते तप है व्रत।
सत्य प्राप्ति है अन्तिम लक्ष्य, उसके निमित्ते धर्म व ग्रन्थ।।
दोनों लक्ष्य के प्राप्ति निमित्त, ध्यान अध्ययन समता भाव।
पाँचों ही व्रत इसे साधते, समिति गुप्ति संयम साथे।।
षड् आवश्यक इसके परिकर, दशधर्म है इसके सरदार।
परीषहजय इसके परिवार, विशेष सप्त गुण कर्मकार।।
धार्मिक क्रिया काण्ड नौकर चाकर, सहयोगी हैं वे उपकारक।
अनुभव है मार्ग प्रदर्शक, विवेक युक्त सच्चा शिक्षक।।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव निमित्त, अनुभव जन्मे कषाय रहित।
पवित्र भाव सब का राजा, अन्य सब है उनकी प्रजा।।
प्रजा वत्सल हमारा राजा, उनकी सेवा करती प्रजा।
सोलह भावना मन्त्री परिकर, अनुप्रेक्षा है रक्षा परिकर।।
बारह तप योद्धा परिकर, विभाव शत्रु का करे संहार।
पुण्य पाथेय लक्ष्य साधने, पुरुषार्थ है मार्ग प्रयाणे।।

सच्चिदानन्द है लक्ष्य की प्राप्ति, जिसे कहते हैं आत्मा की मुक्ति।
'कनकनन्दी' की पूर्णता प्राप्ति, सर्वोदय है आत्मिक शान्ति।।

मेरा लक्ष्य : सत्य-शिव-सुन्दर (10)

(तर्ज - पिंजरे के पंछी रे...)

आ. कनकनन्दी

इस तन के पंछी रे ऽऽऽ, तेरा लक्ष्य न जाने कोय रे...
तेरा सत्य न जानें कोय...तेरा भाव न जानें कोय... टेक...
शरीर को तेरा स्वभाव माने, जन्म-मृत्यु मध्ये होय।
माता-पिता को जनक माने रे, भाई बन्धु प्रिय होय रे।।(1)
तेरा लक्ष्य... इस तन के पंछी....
आहार निद्रा मैथुन भय है काम क्रोध मद होय रे।
इस विकृति को प्रकृति है माने, पाले पोसे सब कोय रे।। (2)
तेरा लक्ष्य... इस तन के पंछी
सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि लाभ से, मान अपमान होय रे।
इसी से सुखी व दुःखी भी होय है, सच्चिदानन्द खोय रे।। (3)
तेरा लक्ष्य... इस तन के पंछी
शरीर वृद्धि स्ववृद्धि माने रे, क्षीण से खिन्नता होय रे।
आत्म वैभव भूला हुआ मूढ, मोह मदिरा पीये रे।।(4)
तेरा लक्ष्य... इस तन के पंछी
बाह्य शत्रु को शत्रु ही माने रे, मित्र ही मित्र जो कोय।
अन्तर शत्रु मित्र न जाने, माया से मूर्च्छित होय।। (5)
तेरा लक्ष्य... इस तन के पंछी
मोह छोड़कर देह को त्यागो, मुक्तात्मा तब होय रे।

चिदानन्दाकाशे विहार कर तू, सच्चिदानन्द तू होय।। (6)

तेरा लक्ष्य... इस तन के पंछी

कनकनन्दी तो भावना भाये रे, यह दशा कब होय रे।

समस्त प्रपञ्च त्याग करूँ मैं, सत्य शिव सुन्दर होय रे।। (7)

तेरा लक्ष्य... इस तन के पंछी

आत्म द्रव्य है मेरा – सत्य धर्म है मेरा (11)

(तर्ज – जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा...)

राग-द्वेष से रहित निराकुल, आतम द्रव्य है मेरा।

वह सत्य भाव है मेरा, वह आत्म धर्म है मेरा।

मेरे कण कण पर पवित्र अहिंसा, क्षमा है करती बसेरा..

वह सत्य भाव है मेरा, वह आत्म धर्म है मेरा ...जय आत्मन...शुद्धात्मन्... ।। टेक।।

मुझ में ही त्याग सहज सरलता धैर्य है करता बसेरा,

वहाँ न अपना न कोई पराया, विश्व का रहता बसेरा...2

मेरे कण कण पर पवित्र अहिंसा, क्षमा है करती बसेरा।।

वह सत्य भाव है मेरा, वह आत्म धर्म है मेरा।। (1)

जहाँ द्रव्य भाव व नोकर्म भी, करता नहीं बसेरा,

नर नारक देव तिर्यञ्च गति, न डाले जहाँ पर डेरा..2

मेरे कण कण पर पवित्र अहिंसा, क्षमा है करती बसेरा

वह सत्य भाव है मेरा, वह आत्म धर्म है मेरा।। (2)

जाति पंथ मत भाषा राष्ट्र से, रहित भाव है मेरा,

सत्य शिव सुन्दर सच्चिदानन्दम्, मेरा स्वाभाविक डेरा..2

मेरे कण कण पर पवित्र अहिंसा, क्षमा है करती बसेरा

वह सत्य भाव है मेरा, वह आत्म धर्म है मेरा।। (3)

स्वात्मा ही सुख का भण्डार (12)

(तर्ज – मेरो मन नन्त कहाँ सुख पावे – सूरदास)

मेरा मन आतम कहाँ सुख पावे...2

जैसे मधुप सुमन के बिना, मधु कहाँ से पावे।। टेक।।

मधु न होत कागज के फूल में, सुख न जड़ में होय,

सुख के भण्डार मेरा आतम ही, चिदानन्द कहलाये...2

कस्तूरी मृग ज्यों नाभि में, बाहर ढूंढता जाये।। मेरा मन आतम।। (1)

तिल में तैल है, दूध में घृत है, अग्नि काष्ठ में होय,

मर्दन घूर्णन घर्षण द्वारा, तीनों ही प्राप्त होय...2

सुख के कारण स्व आतम ही, अन्यथा हेतु न होय।। मेरा मन आतम।।(2)

राग-द्वेष मोह संक्लेश भाव ही, दुःख के कारण होय,

जो रागादिक मर्दन करे हैं, दुःख नशे सुख होय..2

सुख के भ्रम से दुःख मिले सदा, मोह नाशे सुख होय।। मेरा मन आतम।।3।।

मृग मरीचिका भ्रम के कारण, सुख का पीछा होय,

भ्रम नशे तो सुख प्रगटे है, आत्मिक जागृति होय..2

चैतन्य भाव से अनुभव हुए बिना, सुख कहाँ से होय।। मेरा मन आतम।।4।।

पवित्र चाहूँ हे! देव मम अन्तर (13)

(तर्ज – 1. शांति के सागर अरू... 2. हर-2 महादेव शिवशंकर... 3. रवीन्द्र संगीत...)

जय-जय जिनदेव जय-जय जिनेश्वर

पवित्र चाहूँ हे देव मम अन्तर।। -2 (टेक)

न चाहूँ मैं ख्याति पूजा न चाहूँ मैं वर,
भिखारी के सम तुम्हें माँगू नहीं वर।। जय...
मैं हूँ भक्त प्रभु तुम मेरे स्वामी,
तुम्हारा स्वरूप मैं चाहूँ जगस्वामी।। जय...
तुमने त्यागा सब ख्याति पूजा लाभ,
मैं क्यों चाहूँ तेरे परित्यक्त भाव।। जय...
तुम थे कामदेव चक्रवर्ती राजा,
इन्द्र द्वारा पूजनीय सार्वभौम राजा।। जय...
त्रयज्ञानधारी द्वय कल्याणक युत,
आत्मकल्याणक हेतु सर्व किया त्यक्त।। जय..
मैं भी तेरा जब पथ अनुगामी,
तुम्हारी त्यक्त वस्तु का क्यों बनूँ स्वामी।। जय..
तुमने जो प्राप्त किया वह मेरा प्राप्य,
वन्दे तद्गुण लब्धये मेरा है लक्ष्य।। जय..
कामदेव चक्रवर्ती देवों के भी राजा,
तुम्हारे वैभव सम और नहीं दूजा।। जय...
मैं भी अद्वितीय तुम सम ही बनूँ,
अन्य वैभव को परित्यक्त मानूँ।। जय..
'कनकनन्दी' न चाहे कनक पूजा,
स्वआत्म वैभव बिन नहीं चाहूँ दूजा।। जय...
अन्य के वैभव जो प्राप्त करे हैं,
सो निश्चय से चोर ही हुये हैं।। जय...

मेरा स्वभाव एवं विभाव (14)

(तर्ज - चौपाई आदि..2 बिन गुरु ज्ञान नहीं... नहीं है..)

मैं हूँ शुद्ध, सिद्ध स्वरूप, स्वकर्म दोष से आबद्ध रूप।
सच्चिदानन्द है मेरा रूप, कर्मबन्ध से दुःख स्वरूप।।(1)
सत्य शिव सुन्दर चिन्मय रूप, विभाव भाव से विकृत रूप।
अनन्त नभ सम निर्मल रूप, कर्माभ्र निमित्ते मलिन रूप।। (2)
अनन्त ज्ञान है मेरा स्वरूप, ज्ञानावरण से अज्ञान रूप।
अनन्त शक्ति का भण्डार रूप, अन्तराय से निर्बल रूप।। (3)
ऊर्ध्वगामी हूँ निर्बाध रूप, नाम गोत्रादि से बाधित रूप।
ब्रह्मस्वरूप हूँ आनन्द रूप, काममोहादि विभाव रूप।। (4)
मैं हूँ कर्त्ता व भोक्ता स्वरूप, सुख-दुःख या है मुक्त स्वरूप।
शुभ अशुभ या शुद्ध स्वरूप, मेरे ही भाव के विभिन्न रूप।। (5)
नर नारक या देव का रूप, मेरे ही भाव के बाह्य है रूप।
मेरे ही भाव के व्यक्त स्वरूप, चौरासी लाख योनि स्वरूप।। (6)
चिन्मूर्ति अमूर्ति शुद्ध रूप, मन शरीरादिक भौतिक रूप।
भौतिक द्रव्य प्रति ममत्व रूप, भौतिकता के जनक स्वरूप।। (7)
स्व शुद्धात्मा में रमण यह रूप, भौतिकता से निवृत्त रूप।
यथा भाव तथा भावी स्वरूप, वर्तमान बने भविष्य स्वरूप।। (8)
कनकनन्दी के लक्ष्य स्वरूप, स्वयं की प्राप्ति अन्य से दूर।
साधन साध्य प्राप्य स्वरूप, स्वात्मोपलब्धि है समग्र रूप।। (9)

अपना-पराया व आत्मीय (15)

(तर्ज - तोरा मन दर्पण कहलाए...)

मेरा भाव बीज सम होय रे...2

जैसा भाव वैसा सम्बन्ध, भाव से भावित होय रे! ।।टेक।।

कौन है अपना कौन पराया, कौन आत्मीय होय,

कोई न अपना कोई न पराया, कर्म संयोग से होय।

स्व-आत्मिक गुण है आत्मीय, ज्ञानानन्द ध्रुव होय रे।। मेरा भाव।। (1)

'परस्पर उपग्रह' के भाव से, ब्रह्माण्ड कुटुम्ब होय,

इक दूजे के सहयोग से, जीवन यापन होय।

इसी भाव से कोई न पराया, वृक्ष या मानव होय रे।। मेरा भाव।। (2)

स्व-स्व कर्म से प्रत्येक जीव, सुख-दुःख प्राप्त होय,

मृत्यु मुख से कोई न बचाए, भाई बन्धु वैद्य होय।

स्व-स्वभाव कर्म व मरण भी, स्वयं को भोगना होय रे।। मेरा भाव।। (3)

सत्य चेतना आध्यात्मिक गुण, आत्मा से अभिन्न होय,

किसी भी गति में नष्ट न होता, भले हीनाधिक होय।

आत्मिक गुण ही आत्मीय होत है, शाश्वत सत्य ही होय रे।। मेरा भाव।। (4)

आत्मीय गुणों के विकास हेतु, जो भाव भावना भाये,

वह भाव ही आत्मीय स्वजन, सहयोगी आत्मीय होय।

आत्मीय गुणों के पतन निमित्त से, सो न अपना होय रे।। मेरा भाव।। (5)

भाव से भाग्य एवं भविष्यत (16)

(तर्ज - तोरा मन दर्पण कहलाए रे....)

मेरा मन दर्पण सम होय रे...2

जैसा भाव वैसा प्रतिबिम्ब, मन मेरा झलकाए।। टेक।।

भाव गन्दा तो मन भी गन्दला, वचन भी गन्दा होय,

तीनों गन्दा तो काम भी गन्दला, सब गन्दा हो जाय।

जो भावों को निर्मल करले, सर्वत्र निर्मल होय रे।। मेरा मन।। (1)

भाव से कर्म है, कर्म से भावना, बीज वृक्ष सम होय,

बोये बबूल तो बबूल ही पाए, आम बोय आम होय।

जैसी करनी वैसी भरनी, कारण कार्य से होय रे।। मेरा मन।। (2)

अशुभ भाव से पाप बन्ध तो, शुभ भावे पुण्य होय,

निर्मल भाव से निर्वाण पावे, सत्य शिव सुन्दर होय।

मन चंगा तो कठौती में गंगा, भाग्य समुन्नत होय रे।। मेरा मन।। (3)

भाव भावना सबसे सरल है, दुरूह सबसे होय,

भाव वशीकरण मंत्र है भाव से उच्चाटन तक होय।

जो भावों को वश में करे हैं, जगत् वश में होय रे।। मेरा मन।। (4)

'कनकनन्दी' का भाव सदा है, स्व-पर शान्ति होय,

तीर्थेश साधु-सन्त बुद्ध भी, भावना का फल होय।

शुभ भावों से अशुभ को त्यागो, शुभ से शुद्ध भी होय।। मेरा मन।। (5)

गति-आगति-निर्गति (मुक्ति) (17)

(मेरा संसार परिभ्रमण एवं निर्वाण)

'चौपाई छन्द'

गति-आगति शून्य मेरा स्वभाव, अति कुलषित मेरा ही भाव।
यात्रा का प्रारम्भ निगोदवास, अनन्त भवों के आदि निवास।। (1)
द्रव्य क्षेत्र व काल अरु भाव, विकलत्रय आदि तिर्यंच भव।
परिवर्तन से त्रस पर्याय, नर नारक अरु देव पर्याय।। (2)
मोहशक्ति से चारों ही गति, आत्म श्रद्धा से दुर्गति घटी।
पवित्र भाव से आत्म-उन्नति, कर्मक्षय से यात्रा की पूर्ति।।(3)
समाप्त हुई गति-आगति, स्वात्मोपलब्धि पूर्णता प्राप्ति।
तत्र न होता जन्म-मरण, समस्त दुःखों का होता शमन।। (4)
बाह्य गति संसार प्राप्ति, अन्तर गति से स्वयं की प्राप्ति।
दोनों ही गति स्वयं से होती, दोनों समाप्ति पे मुक्त स्थिति।।(5)
अग्नि संतप्त जल हो प्लावित, संक्लेश भाव से जीव भ्रमित।
संतप्त संक्लेश दोनों रहित, जल व जीव स्थिर अरु मुक्त।। (6)
मैं हूँ संसार-गति-आगति, मैं हूँ कर्म बन्ध अरु मुक्ति।
द्रव्य-क्षेत्र-काल की संगति, सबसे प्रमुख है भाव की शक्ति।। (7)

वह भाव है सच्चा महान् (18)

(तर्ज - आराम है हराम... मेरा मन मुझमें...भारत देश महान्)

जिस भाव के हर कण से है; सदा झरते रहे पावन..2
वह भाव है सच्चा महान्...2

वह भाव है सच्चा प्रमाण....2
उस भाव को सदा प्रणाम...2 ।।टेक।।

(1) इस भाव से प्रेरित सदा होता है; सच्चे अच्छे पुण्य काम...2
वह भाव है सच्चा महान्-प्रमाण-प्रणाम..

(2) इस भाव के पावन स्पर्श से; मूर्ति का होता यजन...2
वह भाव है सच्चा महान्-प्रमाण-प्रणाम..

(3) सोलहकारण भावना से ही; तीर्थेश होते महान्-2
वह भाव है सच्चा महान्-प्रमाण-प्रणाम...

(4) पावन भाव पावक समान है; जलाय सारे कर्म...2
वह भाव है सच्चा महान्-प्रमाण-प्रणाम....

(5) सच्चा भाव ही पूज्य सदा है; सच्चा ही होता अच्छा.....2
वह भाव है सच्चा महान्-प्रमाण-प्रणाम....

(6) इस भाव बिना अच्छा भी काम; कभी न होता सच्चा.....2
वह भाव है सच्चा महान्-प्रमाण-प्रणाम....

(7) 'कनकनन्दी' की प्रार्थना है; हो भाव मेरा सच्चा.....2
वह भाव है सच्चा महान्-प्रमाण-प्रणाम....

मेरी बड़ी दिव्य कहानी (19)

(तर्ज - सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों बापू की ये अमर कहानी.....)

सुनो सुनो रे दुनियाँ वालों, ये हमारी दिव्य कहानी।
अकथनीय, अभूतपूर्व यह कथा है बहुत पुरानी।।
सुनो-सुनो हे-, जय जिनवाणी-परमवाणी-आत्मकहानी
सबसे पास सबसे दूर, सबसे सच्ची सबसे अच्छी

तो भी कोई नहीं सुने है, सुनाने पर भी लगे न अच्छी सुनो-सुनो... ।।1।।
मैं ही भ्रमा अनन्त भवे, अनन्त जन्म-मरण भरे।
प्रत्येक द्रव्य क्षेत्र काल में, भव धारण भाव भी करे।। सुनो-सुनो...।।2।।
मेरे भाव से ही जन्मा है ये अनन्त संसार,
मेरे भाव से ही हुआ है इस भव का विस्तार।
भाव से भावित होकर ही, होता बन्ध व मोक्ष संचार।। सुनो-सुनो....।।3।।
अनन्त ज्ञान अनन्त सुख, अनन्त वीर्य युत मेरा स्वरूप।
मेरा ही शुद्ध गुण भण्डार, अक्षय अमूर्त ज्ञान स्वरूप।। सुनो-सुनो...।।4।।

मेरा मन आत्म चिन्तने सुख पावे (20)

-आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - 1. टूटे ना प्रीत तिहारी... 2. यशोदा हरि पालने झुलावे..3... हलरावे दुलरावे जोई सोई भी गावे...)

मेरा मन आत्म चिन्तने सुख पावे ऽऽऽ
उसे ही भावे, उसे ही गावे, उसे ही सदा पावे।।टेक।।

मेरे तो माता पिता बन्धु तुम्हीं हो, धन मान गुरु सखा सभी हो।
कर्त्ता हर्त्ता भी धाता तुम्हीं हो, सुख-दुःख के साथी तुम्हीं हो
चतुर्गति के साथी तुम्हीं हो, मोक्ष में भी साथ तुम्हीं हो...मेरा मन...(1)
तेरे रूठे से नरक निगोद है, पशु-पक्षी भी कीट-पतंग है
तेरे आशीर्वादे सुर नर प्राप्त है, तेरी ही तृप्ति से अमृत प्राप्त है
तेरे अभिशापे दुःख ही दुःख है, तेरे सानिध्य में सुख ही सुख है...मेरा मन...(2)
इसी हेतु मैं तुम्हें ही ध्याऊँ, तुम आशीर्वाद प्राप्त ही चाहूँ
तुम सानिध्य कभी न त्यागूँ, इस निमित्ते तुम्हें मैं भजूँ
इस ही कारण प्रार्थना करूँ, शोध-बोध व खोज भी करूँ....मेरा मन...(3)

तेरा ही गुण सब कोई गाये, इन्द्र नरेन्द्र गणेन्द्र भी गाये
वेद पुराण आगम भी गाये, गीता उपनिषद भी गाये
गीता अष्टावक्र दर्शन गाये, तुम्हारे आशीष सब कोई चाहे... मेरा मन...(4)
तुम्हारे नाम गाम है न काम, रंग रूप वर्ण जाति न मान
अभेद्य अछेद्य अजीर्ण अमूर्त, कालातीत तुम चिदानन्द भाव
चिज्ज्योतिज्ञायक स्वरूप, 'कनकनन्दी' के हे सत्य स्वरूप...मेरा मन..(5)

कभी है मेरा लक्ष्य पूरण होगा (21)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - कब ये पापी मन पावन होगा...)

कब ये मेरा लक्ष्य पूरण होगा, मुझे ही मैं ही प्राप्त करूंगा
लक्ष्य प्राप्ति में बाधक शत्रु दूर करूंगा...कब ये मेरा... (टेक/धत्ता)
मेरे ही मोह को निर्मम गदा से, क्रोध अरि को क्षमा खड्ग से
लोभ कषाय को त्याग के शर से, मान वैरी को मृदुता भाल से
सरलता से माया शत्रु विनाश करूंगा...मुझे ही मैं ही प्राप्त करूंगा (1)
इसी लक्ष्य की प्राप्ति में, अन्य लक्ष्य पाऊँगा
परम लक्ष्य पाये बिना, आत्म सुख नहीं मिला
सत्ता व सम्पत्ति से नाश हुआ मैं...मुझे ही मैं ही प्राप्त करूँगा (2)
रावण कंस व हिटलर सम, कुलक्ष्य न पाऊँ
मेरा ही प्रण निज आतम साधूँ
आत्म कल्याण तब सहज ही होगा.....मुझे ही मैं ही प्राप्त करूँगा (3)
उदय जब है रवि का होगा, अन्धकार क्या दूर न होगा
'कनकनन्दी' का परम लक्ष्य है, परम सुख परम प्राप्य है
अध्यात्म विकास तब ही होगा.....मुझे ही मैं ही प्राप्त करूँगा (4)

कब आदर्श जीवन होगा (22)

– आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज – 1. तुम ही मेरा उद्धार करो... 2. नगरी नगरी द्वारे द्वारे...बंगला)

सर्वज्ञ जाने मानव का कब, आदर्श जीवन होगा.....3

पशुत्व त्याग से दिव्य भाव को, स्वेच्छा से स्वीकृति देगा.....3।।टेक।।

संकीर्णता को त्याग करके, उदारता को ही भायेगा.....2

भौतिकता से ऊपर उठकर, आध्यात्मिकता को चाहेगा....2....सर्वज्ञ जाने... (1)

देहेन्द्रिय मन से परे, आत्म द्रव्य को मानेगा.....2

आत्मिक शान्ति प्रगति हेतु, उत्तम भाव को भायेगा....2....सर्वज्ञ जाने... (2)

स्व प्रगति के निमित्त कभी भी, प्राणी को पीड़ा न देगा.....2

धर्म जाति राष्ट्र सीमा के कारण, संघर्ष से परे होगा....2....सर्वज्ञ जाने... (3)

आक्षेप विक्षेप संक्लेश रहित, शान्तिमय जीना होगा.....2

सहअस्तित्व व सहयोगात्मक, मानव जीवन होगा....2....सर्वज्ञ जाने... (4)

मन वच काय कृत कारिता से, सरल सहज जीवन होगा.....2

सत्य शिव सुन्दर अनुभवमय, आदर्श जीवन होगा....2....सर्वज्ञ जाने... (5)

मेरा जीवन आदर्श बने है, ऐसी भावना भाता हूँ।

'कनकनन्दी' की भावना है ये, स्व-पर-विश्व कल्याण होऊ।।

मधुरं-मधुराति मधुरम् (23)

– आचार्य कनकनन्दी

धाम मधुरं भोज्य मधुरं, मधुराति मधुरं उदक मधुरम्।

शब्द मधुरं वाक्य मधुरं, मधुराति मधुरं वचन मधुरम्।। (1)

शरीर मधुरं मनस मधुरं, मधुराति मधुरं भाव मधुरम्।

भाव मधुरं सुभाव मधुरं, मधुराति मधुरं स्वभाव मधुरम्।। (2)

नीति मधुरं सुनीति मधुरं, मधुराति मधुरं न्याय मधुरम्।

न्याय मधुरं सत्य मधुरं, मधुराति मधुरं साम्य मधुरम्।। (3)

साम्य मधुरं शान्ति मधुरं, मधुराति मधुरं धर्म मधुरम्।

धर्म मधुरं सुधर्म मधुरं, मधुराति मधुरं आत्म मधुरम्।। (4)

आत्म मधुरं शुभात्मा मधुरं, मधुराति मधुरं शुद्धात्मा मधुरम्।

शुद्धात्मा मधुरं अध्यात्म मधुरं, मधुराति मधुरं ज्ञानात्मा मधुरम्।। (5)

ज्ञानात्म मधुरं सुखात्म मधुरं, मधुराति मधुरं सिद्धात्मा मधुरम्।

पुण्य मधुरं सुपुण्य मधुरं, मधुराति मधुरं शुचिता मधुरम्।। (6)

तत्त्व मधुरं जीव मधुरं, मधुराति मधुरं सज्जन मधुरम्।

सज्जन मधुरं साधु मधुरं, मधुराति मधुरं शिवात्म मधुरम्।। (7)

व्यवहार एवं निश्चय मोक्षमार्ग (24)

रचयिता – आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज – लक्ष्य न ओझल.....)

रत्नत्रय ही मोक्षमार्ग है, मोक्ष भी है रत्नत्रय।

सम्यक्दर्शन प्रारंभ जिसका, पूर्ण है चारित्रमय।। जय 6-8 रत्नत्रय जय 6-8 मोक्षमार्ग

सम्यग्ज्ञान है मध्य दीप सम, दोनों को देता सम्बल
देव शास्त्र गुरु बाह्य निमित्त, अंतर भाव है निर्मल (1) जय 6-8 रत्नत्रय
द्रव्य क्षेत्र काल भव निमित्त, प्रमुख भाव है कारण
करण लब्धि से ही प्राप्त, होता है सम्यग्दर्शन (2) जय 6-8 रत्नत्रय
संवेग वैराग्य आस्तिक्य सहित, अनुकम्पा जीवे जानो
अष्ट अंग युत मद से रहित, मूढ़ता रहित मानो (3) जय 6-8 रत्नत्रय
सर्व जीव में मित्रता भाव, गुणी में प्रमोद भाव
दुःखी जीवों में अनुकम्पा युत, विपरीते साम्य भाव (4) जय 6-8 रत्नत्रय
सम्यक्दर्शन सहित से ज्ञान, होता सम्यग्ज्ञान
जीव-अजीव का हो परिज्ञान, आगम युक्ति प्रमाण (5) जय 6-8 रत्नत्रय
भेद-विज्ञान से जाने हम, जीव हैं चैतन्यवान्
षडद्रव्य नव पदार्थ मध्ये, जीव प्रमुख है जान (6) जय 6-8 रत्नत्रय
दर्शन ज्ञान से युक्त होता, सम्यग्चारित्र महान्
सो चारित्र है विविध प्रकार, भाव व्यवहारे जान (7) जय 6-8 रत्नत्रय
अन्तरंग भाव विशुद्धि युक्त, बहिरंगे जीव रक्षा
बाह्य द्रव्य में विरक्त भाव, अन्तरंगे आत्म रक्षा (8) जय 6-8 रत्नत्रय
हिंसादि विरक्ति कषाय निवृत्ति, त्रियोग सम्यग्वृत्ति
कर्म विमुक्ते ध्यान प्रवृत्ति, सम्यग्चारित्र वृत्ति (9) जय 6-8 रत्नत्रय
समस्त कर्म से रहित अवस्था, सो ही मोक्षावस्था
चिदानंदमय शुद्धावस्था, शाश्वत स्थिरावस्था (10) जय 6-8 रत्नत्रय जय 6-8 मोक्षमार्ग

ओ हो मेरी भावना (25)

(मैं आगे-पीछे शून्य हो जाऊँ)

(तर्ज - 1. ओ मेरे बन्धु रे..... 2. मधुबन के मन्दिरों में..... 3. जनम जनम का साथ.....)

ओ हो मेरी भावना.....sss
मेरी भावना से ही मैं..... आगे बढ़ता जाऊँ रे.....ss
आगे ऊपर नीचे भी, गिरता मैं जाऊँ रे.... ओ हो मेरी.... (टेक)
मेरी भावना है मैं ही, सबसे आगे रहूँ....2
सबसे पीछे और नीचे, सबसे शून्य रहूँ.....2.....मेरी भावना से ही मैं..... (1)
सत्य शान्ति समता से मैं, सबसे आगे बढ़ूँ.....2
किसी को पीछे न करूँ, आगे ही बढ़ता चलूँ.....2.....मेरी भावना से ही मैं...(2)
वैर किसी से भी न करूँ, नीच किसे न मानूँ.....2
स्पर्द्धा न हो किसी से, हार कभी न मानूँ.....2.....मेरी भावना से ही मैं..... (3)
क्षमा मार्दव आर्जव भाव में, रहूँ मैं सबसे आगे.....2
संकीर्ण भाव व्यवहार को मैं, छोड़ूँ सबसे आगे....2....मेरी भावना से ही मैं... (4)
उदारता व्यापकता में, रहूँ मैं सबसे आगे.....2
यश ख्याति और पूजा में, रहूँ मैं सबसे पीछे....2.....मेरी भावना से ही मैं..... (5)
काम क्रोध मद लोभ से, हो जाऊँ निवृत्त.....2
शोध-बोध अरु आत्मशुद्धि, में हो जाऊँ प्रवृत्त....2....मेरी भावना से ही मैं....(6)
सच्चा अच्छा व पक्का में, सबसे आगे रहूँ.....2
छोटा खोटा कच्चा में, सबसे पीछे रहूँ.....2.....मेरी भावना से ही मैं..... (7)
भौतिकता व कर्मबन्ध से, शून्य मैं हो जाऊँ.....2
आध्यात्मिक ज्ञानानन्द में, पूर्ण मैं हो जाऊँ.....2.....मेरी भावना से ही मैं..... (8)

नाम अहं वर्चस्व भाव से, शून्य मैं हो जाऊँ.....2

सच्चिदानन्द सिद्ध स्वभाव, पूर्ण मैं हो जाऊँ...2.....मेरी भावना से ही मैं..... (9)

जनम-मरण व कर्मबन्ध से, हो जाऊँ मैं शून्य.....2

उत्पाद व्यय ध्रौव्य स्वरूप, चिदानन्द हो पूर्ण....2...मेरी भावना से ही मैं....(10)

आदि मध्य अरु अन्त में, मैं ही मैं रह जाऊँ.....2

अतुल अवर्णनीय रूप, निरापेक्ष हो जाऊँ.....2.....मेरी भावना से ही मैं.....(11)

मेरा स्वभाव आकाश सम, सर्वत्र व्यापी भिन्न.....2

सब समाहित अलिप्त रहे, नाम रूप विछिन्न.....2.....मेरी भावना से ही मैं.....(12)

मेरा स्वभाव आगम गोचर, इन्द्रिय से नहीं गोचर.....2

मुझे न जाने अज्ञानी, भौतिक रूप को माने.....2.....मेरी भावना से ही मैं.....(13)

मैं ही मैं मुझसे ज्ञात, नभ में नभ समाय.....2

अणु के सम अणु ही हुए, सिद्ध के सम ही सिद्ध...2...मेरी भावना से ही मैं...(14)

मेरी भावना भाऊँ मैं ही, मेरी भावना गाऊँ.....2

अन्य भाव से होऊँ भिन्न, भिन्नता से हूँ पूर्ण....2...मेरी भावना से ही मैं..... (15)

मेरा भाव ही मेरा स्वभाव, अन्य भाव विभाव.....2

विभाव ही तो जग का भाव, स्वभाव ही मुक्त भाव...2...मेरी भावना से ही मैं...(16)

हम अनन्त आकाश के पंछी (26)

(रहस्यवादी आध्यात्मिक कविता)

- आचार्य कनकनन्दी

हम अनन्त आकाश के पंछी, देह पिञ्जर में न सुख पायेंगे।

भोग वैभव पिञ्जर सीमा में, आबद्ध होकर दुःख पायेंगे।।

हम निराकुल सुख पाने वाले, राग-द्वेष से दुःख पायेंगे।

हम तो शरीर रहित आत्मन्, देह पिञ्जर में दुःख पायेंगे।।

कर्म शृंखला के बंधन में, ऊर्ध्वगमन शक्ति भूल गये हैं।

बस भावना में भा रहे हैं, अनन्त शक्ति पाने के लिए।।

ऐसे हैं अरमान अभी है, मोह माया का बन्धन तोड़ूँ।

ख्याति प्रसिद्धि लाभ को त्यागूँ, वैर विरोध का भाव न रहे।।

संकीर्णता का पिंजरा टूटे, पराधीनता का ममत्व छूटे।

कषाय कल्मष अन्धेरा घटे, आत्मज्योति का प्रकाश फैले।।

अनन्त आत्मलोक प्राप्त मैं करूँ, आत्मवैभव का भोग मैं करूँ।

सच्चिदानन्द रूप को पाऊँ, 'कनकनन्दी' मैं मुक्त हो जाऊँ।।

सेमारी (राज.) दि. - 8-4-2011 प्रातः 6:00

सुध्यान के लिए स्व-प्रेरणा (27)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - कब ये पापी मन पावन होगा.....)

कब ये चञ्चल मन निश्चल होगा, संकल्प विकल्पों से मुक्त रहेगा।

क्रोध मान माया लोभ त्याग कर ध्यान करेगा.....कब ये.....।।टेक।।

अनादिकाल से तुझे क्रोधादि है भाया, संकल्प विकल्पों ने तुम्हें है सताया

आर्त्त रौद्र ध्यान मय कुध्यान है ध्याया, विषय-कषायों में मन को लगाया

इसी में ही तुमने आचार्यत्व पाया, आचरण किया और आचरण कराया

क्रोध मान माया.....कब ये चञ्चल..... (1)

इसी हेतु यह ध्यान सरल सहज है, निम्नगामी यथा पानी सहज है

इसी से ही तेरा पतन हुआ रे, नरक पशु में दुःख बहु पाया रे

आत्म स्वरूप को अभी तुम ध्याओ, आत्मिक सुख को अभी तुम पाओ

क्रोध मान माया.....कब ये चञ्चल..... (2)

तेरा अनन्त सुख तुझ में ही सुप्त है, यथा बीज में वृक्ष सुप्त है
समता खाद व ध्यान रश्मि से, सुख रूपी वृक्ष जगाओ निज में
इस वृक्ष में फलेंगे ज्ञान आत्मिक शक्ति, अलौकिक शक्ति अनन्त प्रमाण
क्रोध मान माया.....कब ये चञ्चल..... (3)

ध्यान पद्धति एवं फल (28)

– आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज – 1. अच्छा सिला तूने..... 2. छोटी छोटी गैया.....)

ध्यान करो भाई तुम ध्यान करो रे, सुख शान्ति को पाया करो रे
राग–द्वेष मोह त्याग करो रे, ध्यान का शुभारम्भ किया करो रे..... (टेक)
तामस राजस भोजन त्याग करो रे, प्रशस्त स्थान में ध्यान करो रे ऽऽ
आकर्षण विकर्षण त्याग करो रे, समता भाव से जीया करो रे
सुखासन में बसा करो रे, तन मन वच सब साम्य करो रे..... (1)
प्रभु का नाम ध्यान करो रे, वस्तु स्वरूप का ध्यान धरो रे ऽऽ
गुण–दोष दोनों का भेद करो रे, आत्म स्वरूप का ध्यान करो रे
आत्मा में चित्त को स्थिर करो रे, आत्मशक्ति को प्राप्त करो रे.... (2)
ध्यान से पाप कर्म आना रुक जाते हैं, तनाव रोगों से मुक्ति मिल जाती है ऽऽ
पुण्य के आगमन तीव्र होते जाते हैं, पाप के निर्गमन शीघ्र होते जाते हैं
स्वयं को सुख/(स्वास्थ्य) शान्ति शीघ्र मिल जाते हैं, बिना धन खर्च से यह मिल जाते हैं..... (3)
क्रोध मान माया लोभ क्षीण होते जाते हैं, भाव विशुद्धता में वृद्धि होती जाती है ऽऽ
लीनता स्वयं में शीघ्र आती जाती है, आध्यात्मिक शान्ति वृद्धि होती जाती है
सर्वकर्मक्षय धीरे धीरे होते जाते है, सच्चिदानन्दमय स्वयं बन जाते हैं..... (4)

आत्मिक धर्म मुझे प्राण से भी प्यारा (29)

– आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज – चुप–चुप खड़े..... गहरी गहरी.....)

आत्मिक धर्म मुझे प्राण से भी प्यारा है, तेरा ही सहारा प्रभु तेरा ही सहारा है।
तेरे बिना प्रभु मैंने संसार में भ्रमा है, चौरासी लाख योनी में बहुदुःख पाया है।
पंच परिवर्तन भी बहुबार किया है, हर कण खाया और हर देशे जन्मा है,
हर जीव से मैंने शत्रु मित्र किया है, सांसारिक भोग–भोगा मारा और मरा है।। आत्मिक...
कभी नर भव पाया आत्म धर्म भूला है, पंथ मत जाति राष्ट्र बन्धन में बन्धा है।
सदा सत्ता सम्पत्ति को स्वरूप भी माना है, देह पुत्र पत्नी को निज रूप माना है।। आत्मिक...
इन्हीं के कारण मैंने बहु पाप किया है, पापों को करते भी अहंकार किया है।
इन्हीं की कमी से मैं दीन हीन बना था, इन्हें ही सर्वस्व मान तुमको भूला था।। आत्मिक....
इन्हीं कारणों से मैं तेरे भक्तों को, तुच्छ मानकर निरादर भी किया था।
सत्ता सम्पत्ति व प्रसिद्धि वालों को, महान् मानकर पूजन भी किया था।। आत्मिक...
उन्मत्त भ्रमित व मोहित होकर, सत्य को असत्य मैंने सर्वथा माना था।
स्वप्न की अवस्था में यथा स्वप्नदर्शी, स्वप्न के विषयों को यथार्थ माने यथा।।
अभी तो मोह निद्रा भंग के अनन्तर, संसार मिथ्या स्वप्न हुआ है चूर–चूर।
आत्मिक सूर्य के उदय अनन्तर, संसार कालरात्रि हो गई बहुदूर।। आत्मिक...
अभी तो तेरा मुझे स्वरूप ज्ञात हुआ, तुम तो अविकारी निर्मल ज्ञान धारा।
सच्चिदानन्दमय समता रस भरा, सत्य, शिव, सुन्दर पवित्र है रूप तेरा।। आत्मिक...
तुम तो स्वयं पूर्ण विज्ञान घनमय, चैतन्य रूप तेरा टंकोत्कीर्णमय।
स्वयंभू सनातन अक्षय अविनाशी, तुम्ही मेरा रूपमें तव स्वरूपी।। आत्मिक...
तुम्हारा सहारा जो अभी मुझे मिला है, संसार समुद्र तो निश्चय खाली हुआ है।
'कनकनंदी' अभी संसार पारकर, तुझे ही प्राप्त कर होगा सिद्धेश्वर।। आत्मिक...

दूसरों से प्रभावी हुआ न करो (30)

(दूसरों से अप्रभावी रहने की कला)

(तर्ज- यमुना किनारे श्याम जाया न करो...)

दूसरों से प्रभावी हुआ न करो। (अप्रभावी हुआ ही करो)
दूसरों के कुभाव को त्याग ही करो... (स्थायी/टेक)
छोटे-खोटे (खोटे-छोटे) भाव वाले होते बहुसंख्य रे,
दूसरों के अनुसार जीया न करो रे
कौआ के समान क्या कोयल होता है,
बक के समान क्या हंस होता है... दूसरों ...(1)
नीम के समान क्या चन्दन भी होता है,
बबूल के समान क्या आम भी होता है
गीदड़ के समान क्या शेर भी होता है,
डूँगर के समान क्या सुमेरू भी होता है.. दूसरों ...(2)
पापी के समान क्या पावन भी होता है,
संसार के सम क्या मोक्ष भी होता है
नाना जीव नाना कर्म संसार में होते हैं
नाना कर्म अनुसार भाव भी होते हैं/(घनेरे)...दूसरों...(3)
कोई सम्यक् दृष्टि कोई मिथ्यादृष्टि होता है
कोई तो वैरागी कोई भोगी भी होता है
कोई राजा कोई रंक कोई त्यागी होता है,
शरीर के हर अंग सम नहीं होते हैं.. दूसरों..(4)
संसार में समभाव असम्भव होता है,
नवम गुणस्थान से पहले न होता है,

मोक्ष अवस्था में पूर्ण समभाव होता है,
सर्व निगोद में नहीं समभाव सदा है...दूसरों...(5)
विषमता से ही संसार परिभ्रमण होता है,
समता से ही भ्रमण विनाश होता है
दूसरों से विषमता भाव न करो रे,
दूसरों के कारणों से दुःख न वरो/(भरो) रे... दूसरों..(6)
दूसरों के मरण से मरा न करो रे,
मोक्ष के लिए तुम मरण वरो रे
दूसरों के हेतु मरा अनन्त वार रे
स्वयं के उद्धार हेतु मरण वरो रे...दूसरों...(7)
'कनकनन्दी' ने बहु अनुभव किया रे,
विषमता के मध्य में समता में जीया रे
गिरगिट के सम छद्मवेश/(रूप) घनेरे
चित पट दोनों में मायाचारी घने रे
सत्य साम्य पथ में दृढ़ता से चलो रे,
अविकारी ज्ञानानन्द स्वरूप को वरो रे...दूसरों..(8)
सेमारी (राज.) दि. 9-4-2011, रात्रि 1-40

वह शुद्ध भाव है मेरा ? (31)

(आध्यात्मिक चिन्तन)

(राग - जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़िया...)

जहाँ राग द्वेष से रहित निराकुल आत्म द्रव्य है मेरा वह शुद्ध भाव है मेरा..2
जहाँ ज्ञान दर्शन सुख वीर्य अनन्त करते बसेरा... वह आत्म धर्म है मेरा

वह निज धर्म है मेरा
वह सत्य धर्म है मेरा
(टेक/स्थायी)

जहाँ द्रव्यकर्म व भावकर्म भी, करते नहीं बसेरा...2
जहाँ अपना पराया भेदभाव भी, करते नहीं बसेरा...2 जहाँ ज्ञान...(1)
जहाँ जन्म-मरण व रोग शोक भी, करते नहीं बसेरा...2
जहाँ हानि-लाभ व सुख-दुःख भी, करते नहीं बसेरा..2... जहाँ ज्ञान..(2)
जहाँ ऊँच-नीच के भेद-भाव भी, करते नहीं बसेरा..2
जहाँ जाति पंथ व राष्ट्र भेद भी, करते नहीं बसेरा...2..जहाँ ज्ञान...(3)
जहाँ क्रोध मान व माया लोभ भी, करते नहीं बसेरा...2
जहाँ जय-पराजय हर्ष-विषाद भी, करते नहीं बसेरा...2... जहाँ ज्ञान...(4)
जहाँ शंका भय व कटुता भाव भी, करते नहीं बसेरा..2
जहाँ संकल्प विकल्प संक्लेश भाव भी, करते नहीं बसेरा...2..जहाँ ज्ञान...(5)
जहाँ शान्ति समता क्षमा भाव ही, क्षण क्षण करते बसेरा...2
जहाँ सत्य शिव सुन्दर भाव ही, पल पल करते बसेरा...2 जहाँ ज्ञान...(6)
जहाँ सहज स्वाभाविक सरलभाव ही, कण कण करते बसेरा...2
जहाँ अक्षय अव्यय निर्मल भाव ही, सदा ही करते बसेरा...2
जहाँ उत्पाद व्यय व ध्रौव्य भाव भी, सतत करते हैं बसेरा...2.. जहाँ ज्ञान (7)
(बड़गाँव (राज.) दि. 2-5-2011, प्रातः 8.13)

क्रिया की प्रतिक्रिया के बिना विकास (32)

(विकास के आध्यात्मिक नियम)

(तर्ज - 1. आओ बच्चों तुम्हें... 2. पावन है इस देश...(3) भला किसी का....)

संसार चक्र परिभ्रमण की यदि है नहीं तेरी भावना।
क्रिया की प्रतिक्रिया नियम को कर ले तू अवहेलना।। वन्दे साम्यभाव
वन्दे आत्मभाव
वन्दे मोक्षभाव-2

गति से गति की होती उत्पत्ति, क्रिया शून्ये नहीं क्रिया।
जैसा बोयेगा वैसा पायेगा, बिना बोये क्या पायेगा,
अग्नि में ईंधन डालने से, अग्नि की है होती वृद्धि
ईंधन यदि निकाल डाले, अग्नि की न होती वृद्धि।। वन्दे...

कर्म उदय से विभाव होने से, कर्म होता है बन्ध।
कर्म उदय से समता आने पर, कर्म का न होता है बन्ध,
'जीव जीवस्य भक्षण' कारणे संसार चक्र की होती वृद्धि,
'जीव जीवस्य रक्षण' कारणे संसार चक्र की न होती वृद्धि।। वन्दे..

'जैसे को तैसा' ईंट को पत्थर, यह है बर्बर कानून।
'प्रतिशोध नहीं' 'परिशोधन' हो, यह सन्मति का है कानून
बर्बरता से नाश हुये कमठ, रावण कंस हिटलर
परिशोधन से महान् हुए हैं, राम कृष्ण पार्श्व व महावीर।। वन्दे..

मत्स्यन्याय व्यवहार होता, डार्विन का है विकासवाद।
अहिंसा परमो धर्म करता, आत्म संस्कृति शंखनाद
चार्ल्स का विकासवाद, जब भी अपनाता है मानव,
पर्यावरण का विनाश होता, दानव होता है मानव।। वन्दे..

आत्म संस्कृति के विकास से, मानव होता है पावन।
पर्यावरण की सुरक्षा होगी, सुखमय होगा तब जीवन
कूटनीतिज्ञ मंथरा शकुनी, दुर्योधन व रावण,

सत्यनीति के समक्ष सबका, हो गया था मर्दन।। वन्दे...

सत्य में होती अनन्त शक्ति, असत्य में कहाँ है दम।

'सत्यमेव जयते' सदा सत्य है, असत्य में होता है भ्रम।

विश्व इतिहास साक्षी जग में, अन्यायी का होता नाश,

न्यायवन्तों का विकास अन्त में, पहले भले न होवे आश।। वन्दे...

तीर्थंकर बुद्ध ऋषि-मुनि भी, इसी हेतु चले सत्य के पथ।

भोग-वैभव रागद्वेष त्यागे, त्यागे चार्ल्स का विकासपथ

इसे ही कहते त्याग तपस्या, क्षमा समता आत्म साधना,

इसी मार्ग से मिले है शान्ति, आत्मिक शक्ति पूर्ण कामना।। वन्दे...

कनकनन्दी की भावना सदा, सत्य पथ पर सब चले।

अन्त में निश्चय सुख मिलेगा, पहले दुःख है भले मिले।। वन्दे...

बड़गाँव 2-5-2011 मध्याह्न 4.27

परपीड़क का विनाश एवं साम्यभावी का विकास (33)

(साम्यभाव की महिमा)

- आचार्य कनकनन्दी

(राग- यमुना किनारे श्याम....)

दूसरों को कष्ट कभी दिया न करो,

दुःख के बदले दुःख पाया न करो।

दुःख देने वाला पापी होता है निश्चय,

पाप से पतन होता यह है निश्चय।

दुःख के बदले जो दुःख नहीं देता है,

निश्चय से वह सुखी होता जाता है। (1)

दूजों को कष्ट देने के भाव मात्र से,

पाप का बन्ध निश्चय होता तब से।

तनाव अशान्ति का भी होता प्रहार,

प्रतिक्रिया रूप से भी होता प्रहार।

साम्यभावी प्रतिक्रिया यदि न करे,

स्वकर्म पाप से दुःख ही भरे। (2)

मरूभूति को कमठ ने दुःख ही दिया,

दश भव तक प्रतिशोध ही लिया।

तथापि मरूभूति क्षमा धारण किया,

दश भव तक साम्यभाव धारण किया।

अन्त में मरूभूति बने पार्श्व तीर्थेश,

दश भव तक कमठ पाया संक्लेश। (3)

कौरवों ने पाण्डवों को कष्ट ही दिया था,

अन्त में कौरवों का नाश ही हुआ था।

कंस ने कृष्ण को सदा मारना चाहा,

अन्त में कृष्ण द्वारा मारा ही गया।

सिकन्दर, हिटलर, सद्दाम, ओसामा

जो दूसरों को कष्ट दिए हुआ खातमा। (4)

बड़े-बड़े राजा महाराजा क्रूर नरेश,

परपीड़क जनों का हुआ विनाश।

मय-राक्षस सभ्यता या राजवंश,

अन्त में सब का हुआ विनाश।

हिंस्र पशु-पक्षियों की संख्या बताती,

जो दूसरों को खाये उसकी संख्या घटती। (5)

प्रहार सहने वाली मूर्ति पूज्य बनती है,

प्रहारक हथौड़ी न पूज्य बनती है।

अलंकार मुकुट व मिट्टी के घड़े,

प्रहार सहन करने से शिर पर चढ़े।

अन्य धातु, शिला, मिट्टी नीचे रहती,

दूसरों के पैर तले मर्दित होती। (6)

मर्दन गुण वर्द्धन नीति है प्रसिद्ध,

क्षमा वीरस्य भूषणं सूत्र है सिद्ध।

क्षमा बड़न को छोटन को उत्पात,

लौकिक उक्ति भी जग विख्यात।

'कनकनन्दी' तो चाहे सदा सद्भाव,

सत्य समता से ही होवे कल्याण। (7)

झाडोल (सराडा) दि. 6/5/2011 अक्षय तृतीया मध्याह्न - 3.30

ध्यान सूत्र (संकीर्तन) (34)

(नित्य स्मरणीय - आचरणीय स्तोत्र)

- आचार्य कनकनन्दी

सर्व व्यापी सनातन परम सत्याय नमो नमः 2 परम सत्याय नमो नमः

सर्व अधिष्ठाता सार्वभौम सत्याय नमो नमः 2 ,, ,,

सच्चिदानन्दाय सत्य शिव मंगलाय नमो नमः 2 ,, ,,

आनन्द रूपाय (घनाय) अनन्त स्वरूपाय नमो नमः 2 ,, ,,

घाती विनाशाय अनन्त चतुष्टाय नमो नमः 2 ,, ,,

दिव्योपदेशाय विश्वगुरुवे नमो नमः 2 ,, ,,

आचरण निष्ठाय आचार पालकाय नमो नमः 2 ,, ,,

स्व-पर ज्ञाताय स्व पर सम्बोधनाय नमो नमः 2 ,, ,,

स्वमत ज्ञाताय परमत ज्ञाताय नमो नमः 2 ,, ,,

अध्ययन रताय अध्ययन कारिताय नमो नमः 2 ,, ,,

आत्मध्यान रताय साम्य धराय नमो नमः 2 ,, ,, ,,

मौन साधकाय मौन धराय नमो नमः 2 ,, ,, ,,

विमुक्ति मार्गाय रत्नत्रय रूपाय नमो नमः 2 ,, ,, ,,

विमुक्ति मार्गाय रत्नत्रय रूपाय नमो नमः 2 ,, ,, ,,

दश धर्माय षोढष भावनाय नमो नमः 2 ,, ,, ,,

मंगल रूपाय उत्तम रूपाय नमो नमः 2 ,, ,, ,,

शरण भूताय शुद्धात्म रूपाय नमो नमः 2 ,, ,, ,,

नमो नमः सर्व नमो नमः... आनन्द रूपाय नमो नमः

पवित्र रूपाय नमो नमः सर्व सुखाय नमो नमः विश्वशान्त्याय नमो नमः

कुध्यान के कुफल तथा सुध्यान के सुफल (35)

(तर्ज - भवन बावन प्रतिमा नमौं सुखकरं... नंदीश्वर जयमाल)

योग व लीनता एकाग्र मन को, ध्यान कहते हैं समाधिभाव को।
लक्ष्य में लीनता समता भाव से, आत्म पुरुषार्थ स्वात्म के विकास के।।1।।
आर्त व रौद्रध्यान अनादि काल से, किया है हर जीव पतन हेतु से।
शुभ व शुक्ल ध्यान जो जीव करता, निश्चय से स्वास्थ्य शान्ति को वरता।।(2)
क्रोध व मोह लोभ मान व माया से, अवेशित भाव है काम व क्षोभ से।
सो सब आर्त व रौद्र ध्यान है, पाप रोग व तनाव के हेतु है।। (3)
इसके कारण तनाव होता है, संक्लेश भाव से दुःख भी होता है।
कलह आत्महत्या आतंकवाद है, युद्ध व गृहयुद्ध इससे होता है।। (4)
चोरी व जमाखोरी भ्रष्टाचार है, हत्या व मिलावट असत्यवाद हैं।
व्यसन फैशन मद व भय है, इसके कारण उत्पन्न होते हैं।। (5)
अशुभ यह है आर्त व रौद्रध्यान, इसी के त्याग से होता है शुभध्यान।
इसी ध्यान से होता है पाप रोध, तनाव रोग व संक्लेश भाव दूर।। (6)
पुण्य का संचय प्रसन्न भाव सदा, अहिंसा नम्रता सरल व सहजता।
क्षमा व पवित्रता उदार सत्यनिष्ठा, शुभ ध्यान की होती है विशेषता।। (7)
शुभ ध्यान की होने से पराकाष्ठा, शुक्लध्यान की आती है पात्रता।
इसी ध्यान से, कषाय क्षीणता, कर्मों के नाश की आती है योग्यता।। (8)
इसी से आती है आत्मा की शुचिता, निर्विकल्प व विकार रहितता।
इसी से होता है कर्मों का सर्व क्षय, समस्त दुःखों के प्रमुख हेतुमय।। (9)
ध्याता तो होता है सच्चिदानंदमय, अजर अमर व निरज निरामय।
सत्य शिव सुन्दर शुद्ध व बुद्धमय, होता है ध्याता स्वयं ज्ञान सुखमय।। (10)

'कनकनंदी' भी इसी का ध्यान करें, इसकी प्राप्ति हेतु सदा चेष्टा करें।
जो जीव सुख जाहे सुध्यान सदा करें, सहज सुलभ है अमोघ सदा खरें।। (11)

भाव-गीत

शुभ भाव से अशुभ त्याग एवं शुद्ध की प्राप्ति (36)

(तर्ज - नरेन्द्र छन्द.... जय-जय भारती... आओ बच्चों तुम्हें...)

अशुभ शुभ व शुद्ध भेद से, भाव के त्रिविध जानो।
शुभ भाव से अशुभ त्याग है, शुद्ध के निमित्त मानो।। (1)
अशुभ भाव हैं मोह राग-द्वेष, कामादि विकार भाव।
पञ्च पाप और सप्त व्यसन, अष्टमद घातक भाव।। (2)
इन भावों के त्याग से युक्त, पवित्र जो परिणाम।
तत्वज्ञान व श्रद्धा से युत, विनम्रता दया दान।। (3)
स्व-पर-विश्व कल्याण के भाव, हित मित प्रिय वचन।
उदारता युक्त अन्याय रहित, शरीर मानस वचन।।(4)
शुभ भाव हैं दीप समान, जो पापतम करते हरण।
करें प्रकाश पुण्यमय ज्योति, शुद्धभाव का करे वरण।। (5)
शुद्ध भाव हैं चिदानन्दमय, सत्यं शिवं सुन्दरम्।
अनन्त ज्ञान वीर्यादि युक्त, अविकारी सिद्ध स्वरूपम्।। (6)
अशुभ भाव हैं तनाव से युक्त, स्व-पर दुःख कारण।
रोगजनक व विनाशकारक, सर्वथा हेय आगम प्रमाण।। (7)
शुभ भाव हैं फूल समान, शुद्ध फल के कारण।
सुपक्व फल से फूल त्यक्त है, शुद्ध भाव से पूर्व जान।। (8)
शुभ से मिले हैं सुख-सम्पत्ति, सत्ता-विभूति व प्रसिद्धि।

परम्परा से मोक्ष प्राप्ति हो, वैभव से युक्त सिद्धि।। (9)

'कनकनंदी' का परम लक्ष्य है, शुद्ध भाव को पाना।

अशुभ भाव नव कोटि से त्यागूँ, सतत है मेरी भावना।। (10)

सार्वभौम नैतिक – आध्यात्मिक सूत्र (37)

धर्म न होता है वहाँ, जहाँ जीवन में नैतिकता नहीं,

आध्यात्मिकता नहीं होती है वहाँ जहाँ समता नहीं।

शान्ति न होती है वहाँ, जहाँ निराकुलता नहीं,

न्याय न होता है वहाँ, जहाँ सत्यनिष्ठा नहीं।। (1)

राष्ट्र का विकास नहीं होता वहाँ जहाँ एकता नहीं,

एकता वहाँ नहीं होती है, जहाँ समन्वय नहीं।

समन्वय नहीं होता है वहाँ, जहाँ उदारता नहीं,

उदारता नहीं होती है वहाँ, जहाँ सम्वेदना नहीं।। (2)

विकास नहीं होता है वहाँ, जहाँ पुरुषार्थ नहीं,

पुरुषार्थ नहीं होता है वहाँ, जहाँ उत्साह नहीं।

उत्साह नहीं होता है वहाँ, जहाँ श्रेष्ठ लक्ष्य नहीं,

श्रेष्ठ लक्ष्य नहीं होता है वहाँ, जहाँ महानता नहीं।। (3)

अहिंसा नहीं होती है वहाँ, जहाँ पवित्रता नहीं,

पवित्रता नहीं होती है वहाँ, जहाँ अकषाय नहीं।

अकषाय नहीं होती है वहाँ, जहाँ समता नहीं,

समता नहीं होती है वहाँ, जहाँ साक्षीभाव नहीं।। (4)

सात्विक भोजन नहीं होता है, जो शाकाहार नहीं,

शाकाहार नहीं होता होता है, जो न्याय से अर्जित नहीं।

न्याय नहीं होता है, जो परपीड़ा रहित नहीं,

परपीड़ा रहित नहीं होती है, जो शोषण रहित नहीं।। (5)

विश्व शान्ति नहीं होती है वहाँ, जहाँ एकात्मवाद नहीं,

एकात्मवाद नहीं होता है वहाँ, जहाँ साम्यभाव नहीं।

साम्यभाव नहीं होता है वहाँ, जहाँ आत्मज्ञान नहीं,

आत्मज्ञान नहीं होता है वहाँ, जहाँ भेद-विज्ञान नहीं।। (6)

वह शिक्षा नहीं है जिसमें संस्कार नहीं,

वह संस्कार नहीं है जिसमें सदाचार नहीं।

वह सदाचार नहीं है जिसमें शालीनता नहीं,

वह शालीनता नहीं है जिसमें विनय नहीं।। (7)

वह परिवार नहीं है जिसमें प्रेम नहीं,

वह प्रेम नहीं है जिसमें निःस्वार्थता नहीं।

वह निःस्वार्थता नहीं है जिसमें निराकांक्षा नहीं,

वह निराकांक्षा नहीं है जिसमें त्यागभाव नहीं।। (8)

वह विज्ञान नहीं है जिसमें सत्य नहीं,

वह सत्य नहीं है जिसमें शिव (शाश्वतिकता) नहीं।

वह शिव नहीं है जिसमें मंगल नहीं,

वह मंगल नहीं है जिसमें आनन्द नहीं।। (9)

वह धर्म-पुरुषार्थ नहीं है जो आत्मलक्ष्य से रहित होता,

वह अर्थ-पुरुषार्थ नहीं है जो धर्म रहित होता।

वह काम-पुरुषार्थ नहीं है जो शील रहित होता,

वह मोक्ष-पुरुषार्थ नहीं है जो आत्मशुद्धि से रहित होता।। (10)

वह राजनीति नहीं है जिससे राष्ट्र की उन्नति नहीं होती,

वह उन्नति नहीं है जिससे सुख-शान्ति नहीं मिलती।
वह सुख-शान्ति नहीं है जिससे दूसरों का शोषण होता,
वह विकास नहीं है जिससे विषमता समाप्त नहीं होती।।(11)

वह ज्ञान नहीं है जिससे स्व-अज्ञान का ज्ञान नहीं होता,
वह गुण नहीं है जिससे गुणी से गुण नहीं लेता।
वहमहान नहीं है जिससे छोटों का आदर नहीं होता,
वह गमन नहीं है जिससे नियन्त्रण नष्ट हो जाता।। (12)

कृषक नहीं होता है मानव कमतर,
कृषक ही होता है सबका पालनहार।
वह पर्यावरण रक्षक है और कृषि विज्ञानी,
पशु पक्षी व घास तक का करता है उपकार ।। (13)

बच्चा नहीं है कच्चा वह तो दिल का सच्चा,
वह व्यवहार से सिखाता है सदाचार अच्छा।
प्राकृतिक जीवन और प्राकृतिक मुस्कान,
उसके समान कहाँ जानता है मूढ़ इन्सान।। (14)

भोग विलासिता और शृंगार प्रिय जीवन,
नहीं होता है सच्ची नारी का निर्माण।
वात्सल्य त्याग व सेवा का पैमाना,
नारायणी को करता है, नर से भी महान्।। (15)

केवल पुस्तक रटने से कोई नहीं होता है विद्यार्थी,
सतत सीखे स्व-पर से वह होता है शिक्षार्थी।
नम्रता जिज्ञासा युत शिष्य होता है अनुसन्धानी,
फैशन व्यसन व नकल युत होता है अज्ञानी।। (16)

सत् साहित्य वह दर्पण होता है जिससे मानव मुखड़ा देखता है,
लेखक वह चित्रकार है जो सत्य का चित्रण करता है।
वह साहित्य शस्त्र समान है जो संस्कृति का हनन करता है,
वह लेखक कलाल समान है जो समाज में नशा फैलाता है।। (17)

जिस दर्शन से सत्य का दर्शन हो, वह सत्य दर्शन कहलाता है,
जिस श्रद्धा से आत्मा में रुचि हो, उसे सच्ची श्रद्धा आगम कहता है।
जिस दर्शन से मिथ्याज्ञान हो, उसे मिथ्यादर्शन कहा जाता है,
जिस श्रद्धा से अन्ध भक्ति हो, उसे मिथ्या श्रद्धा कहा जाता है।। (18)

लोकेषणा वह आग है जो प्रसिद्धि से बढ़ती ही जाती,
खुजली वह रोग है जो खुजाने से बढ़ती ही जाती।
विद्या वह सम्पत्ति है जो दान से बढ़ती ही जाती,
तृष्णा वह प्यास है जो पूर्ति से बढ़ती ही जाती।। (19)

लोकेषणा वह आग है जो निस्पृह घृत से होती है शान्त,
संसार भ्रमण वह गति है जो आत्मप्रवृत्ति से होती है शान्त।
परदोष दर्शन वह दूरदर्शन है जो आत्मदर्शन से हो जाता है शान्त।
कर्म के विरुद्ध में वह युद्ध है जो स्व की अकर्मता से होता है शान्त।। (20)

दुनियाँ के दबाव से परे (38)

(आध्यात्मिक-दार्शनिक-वैज्ञानिक रहस्यवादी कविता)

आचार्य कनकनन्दी

(राग - दुनियाँ हँसे हँसती रहे..., 2. अच्छा सिला..., 3. जीना यहाँ...)

दुनियाँ बोले, बोलती रहे ऽऽ दुनियाँ से मैं आगे बढ़ता चलूँ..
मैं हूँ विद्यार्थी विद्या लेता ही रहूँ...

मैं हूँ शिक्षार्थी शिक्षा लेता ही रहूँ...

मैं हूँ शान्ति पथिक बढ़ता रहूँ..

मैं हूँ मोक्ष पथिक मुक्त हो जाऊँ...

गुरु से लहूँ मैं तो ग्रन्थ से लहूँ, अच्छे से लहूँ मैं तो बुरे से लहूँ...

.... दुनियाँ से मैं आगे बढ़ता चलूँ... (टेक)

किसी से न भेद भाव किसी से न बैरी,

किसी से न स्वार्थ सिद्धि किसी से न चोरी।

दुनियाँ मुझे अनाड़ी/(गँवार)/(भोला) मानती रहे,

दुनियाँ हँसती है हँसती रहे... 2...दुनियाँ (1)

ना मैं हूँ मानव ना मैं पशुक्रूर,

ना मैं दानव ना मैं सुर असुर

ना मैं हूँ भारतीय ना हूँ विदेशी

मैं तो हूँ इससे परे समदर्शी....2.... दुनियाँ (2)

मैं हूँ समस्त पन्थ मत से परे,

मैं हूँ समस्त छुद्र सीमा से परे

संकीर्ण सीमा मुझे न बान्ध पायेगी,

गगन को सीमा/(रस्सी) क्या बान्ध पायेगी..2 ... दुनियाँ (3)

दुनियाँ के ईर्ष्या द्वेष से मुझे क्या लेना,

किसी भी जीव को मुझे दुःख क्यों देना

दुनियाँ की घृणा ज्वाला मुझे न जलायेगी,

आकाश को अग्नि ज्वाला क्या जला पायेगी...2 दुनियाँ.(4)

आकाश को आँखें न देख पाने से,

अमूर्तिक आकाश क्या होगा दोषी

दुनियाँ मुझे यदि न जान पाये तो,

चिदाकाश मैं क्यों बन जाऊँ दोषी..2.. दुनियाँ..(5)

मैं तो एकला चला चलता रहूँगा,

जिसको चलना है मेरे साथ चलेगा

चरैवेति चरैवेति अनन्त तक चलना,

सम्पूर्णता के पूर्व/(पहले) कभी न रूकना...2.. दुनियाँ..(6)

तीर्थंकर बुद्ध ऋषि ईसा आदि,

दुनियाँ को छोड़ने से हुए प्रभावी

भागते चलो छाया दौड़ आयेगी,

पकड़ने पर ही बैठ जायेगी..2.. दुनियाँ..(7)

जड़ दुनियाँ प्रतिध्वनि समान होती,

क्रिया की प्रतिक्रिया समान होती

निष्क्रिय निष्कम्प मेरी गति होगी

दुनियाँ की प्रतिक्रिया नहीं होगी..2.. दुनियाँ (8)

पानी के दबाव को जो पार करता,

पानी के ऊपर वह ही तैरता

दुनियाँ के दबाव को जो भी पार करता,

दुनियाँ के ऊपर वह चढ़ जाता..2.. दुनियाँ..(9)

आध्यात्मिक रहस्य का यह सारतत्त्व,

सर्वज्ञों के द्वारा यह ज्ञात सत्य

इस रहस्य का जो वेदन करेगा

दुनियाँ के दबाव को वो पार करेगा..2..दुनियाँ (10)

'कनकनन्दी' अमूर्तिक आत्मा के प्रेमी,

सच्चिदानन्द स्वात्मा के कामी

भौतिक दुनियाँ क्या जाने मेरा स्वरूप,

जन्मान्ध व्यक्ति जाने क्या सूर्य स्वरूप..2..दुनियाँ (11)

सेमारी (राज.) दि. 19/4/2011 रात्रि - 1.27

विकास के हेतु मुझ से ही मेरी प्रतिस्पर्द्धा (39)

(तर्ज - छोटी छोटी गैया....., अच्छा सिला दिया.....)

मेरी ही प्रतिस्पर्द्धा मेरे ही साथ....2

विकास करूँ सदा मेरे ही साथ,

उन्नति करने की सर्वोच्च है राह।...2

आत्मजयी वन्दे विश्वजयी...

स्वयं जयी वन्दे सर्वजयी..... (टेक)

मेरे दुर्गुणों के साथ मैं ही लडूँ,

सुगुणों के बल पर आगे ही बढूँ।...2

मेरी कमियों को मैं पछाड़ डालूँ,

उन्नति के मार्ग पर आगे ही बढूँ।।

आत्मजयी वन्दे विश्वजयी...

स्वयंजयी वन्दे सर्वजयी.... (1)

'आदहिदं कादव्वं' वीर ने कहा, आददीप भवो है बुद्ध ने कहा,

आत्मजयी होता है विश्व विजयी, आत्म विनाशी होता सर्व विनाशी।

आत्म के उद्धार करो कृष्ण ने कहा,

सर्वज्ञ होने पर अन्धेरा कहाँ।।...2

निर्वाण होने पर पतन कहाँ

आत्मजयी वन्दे विश्वजयी...

स्वयंजयी वन्दे सर्वजयी....(2)

सूर्य सम स्व प्रकाशी जो होता है, अन्धेरा उससे दूर होता है,

वज्र सम कठोर जो होता है, उसका काट तो वह स्वयं होता है।

सिद्ध के समान सिद्ध ही होगा,

अणु के समान अणु ही होगा।

आत्मजयी वन्दे विश्वजयी..

स्वयंजयी वन्दे सर्वजयी... (3)

दूसरों से प्रतिस्पर्द्धा करे जो कोई, निश्चय से पराजयी होता है वही,

जहाँ प्रतिस्पर्द्धा वहाँ ईर्ष्या व गर्व, अतएव प्रतिस्पर्द्धी होता है खर्व।

कछुआ व खरगोश राम-रावण

पाण्डव-कौरव कृष्ण-कंस समान।।...2

आत्मजयी वन्दे विश्वजयी...

स्वयंजयी वन्दे सर्वजयी... (4)

धन मान सत्ता शक्ति के हेतु, किया प्रतिस्पर्द्धा पतन हेतु,

अनन्तकाल की यह प्रवृत्ति, विलोम से करूँ आत्म-उन्नति।

अव्यवस्थित लोह कणों की स्थिति,

व्यवस्थितपने चुम्बकीय शक्ति।।...2

आत्मजयी वन्दे विश्वजयी...

स्वयंजयी वन्दे सर्वजयी... (5)

तीर्थंकर बुद्ध ईसा मसीह आदि, स्व-प्रतिस्पर्द्धा से हुई प्रसिद्धि.

स्व-प्रतिस्पर्द्धा से शक्ति जागृति, अन्य प्रतिस्पर्द्धा से शक्ति की क्षति।

अणु-विखण्डन से ऊर्जा की स्फीति,

अणु-प्रति अणु द्वन्द्वे ऊर्जा की क्षति।।...2

आत्मजयी वन्दे विश्वजयी...

स्वयंजयी वन्दे सर्वजयी... (6)

'परस्पर उपग्रहो' मुझे सिखाता, दूसरों का सहयोग करो बताता,

'वसुधैव कुटुम्बकम्' मुझे बताता, विश्व मैत्री भाव रखो मुझे सिखाता।

समता व ध्यान मुझे प्रेरणा देते,

स्वयं से युद्ध करो, जय निमित्ते।।...2

आत्मजयी वन्दे विश्वजयी...

स्वयंजयी वन्दे सर्वजयी... (7)

सीपुर- शीतऋतु

सत्य व साम्य हमें प्राणों से प्यारा (40)

(तर्ज - मन्त्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा)

सत्य व साम्य हमें प्राणों से प्यारा

ये है वो उपाय ऽऽऽ कि जिसने भव्यों को तारा ऽऽऽ।।टेक।।

अरिहन्त व सिद्ध हुए वे, सत्य-साम्य जो पालन किये।...2

अनन्त सुख को प्राप्त करके, अक्षय अविनाशी धर्मी हुए।।...2

भव्य भी उनके ऽऽऽ मार्ग पे चलके, प्राप्त करे हैं सुख अपारा

सत्य व साम्य हमें प्राणों से प्यारा।।1।।

आचार्य पाठक साधु परमेष्ठी, जिसकी साधना करते जो।..2

अन्य जीवों को मार्ग दिखाकर, शान्ति की प्रार्थना करते जो।।..2

इसी के कारण ऽऽऽ सुख प्राप्ति का, अनेक उपाय बनते जो

सत्य व साम्य हमें प्राणों से प्यारा।।2।।

इसके बिना जो अन्य उपाय, दुःखों के कारण बनते जो।..2

आकाश के बिना अन्यत्र कहाँ है, विश्व को स्थान मिले जो।।..2

शान्ति के इच्छुक ऽऽऽ मोक्ष के साधक, सदा ही आश्रय लेते जो

सत्य व साम्य हमें प्राणों से प्यारा।।3।।

'कनकनन्दी' की भावना है ये, सर्वत्र ही सत्य-समता प्रसारे।..2

इस ही मार्ग पे स्व-पर-विश्व का, मंगल शान्ति श्रीरथ विहारे।।..2

जीव ही जिनवर ऽऽऽ भव्य भगवन्, पतित भी पावन रूप संवारे

सत्य व साम्य हमें प्राणों से प्यारा।।3।।

उत्थान-पतन तथा शाश्वतिक उत्थान (41)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - 1. दे दी हमें आजादी बिना... 2. हो दीनबन्धु श्रीपति करुणा निधानजी..3. जय जय श्री अरिहन्त देव...)

संसार में उत्थान पतन होता ही रहेगा,

गलन पूरन पुद्गल/(जड़) का होता ही रहेगा।

पुद्गल के सम्बन्ध जीव जब है करेगा,

उसका स्वभाव जीव में अवश्य आयेगा।।

इसलिए जड़ से जीव जो आबद्ध होता,

उसका पतन व उत्थान भी होता।

बहुआरम्भ व परिग्रह धारी जो होता,

नरक में जाकर उसका भी पतन होता।।

रावण कंस व हिटलर सम ही है जो,

भौतिकता से ही निज उत्थान/(विकास) करे जो।
उसका पतन तो निश्चय ही होगा,
उछाला गया पत्थर तो नीचे ही गिरेगा।।
पुद्गल से सम्बन्ध जो विच्छेद करेगा,
ऊर्ध्वगामी स्वभावी वह निश्चय ही बनेगा।
गुरुत्व से परे जो यान दूर जायेगा,
उसका पतन प्यारे कभी भी न होयेगा।।
तीर्थंकर केवली जो जड़/कर्म मुक्त हुए हैं,
वे ऊर्ध्वगामी बनकर मोक्ष में गये हैं।
अनन्त वैभवधारी लोकाग्रे निवासी,
तथापि पतित कभी न होंगे वे निर्विकारी।।
चक्रवर्तित्व वैभव के त्यागी हुए तीर्थंकर,
तीर्थंकरत्व वैभव त्याग के हुए सिद्धेश्वर।
आकर्षण विकर्षण रहित वे सिद्ध हुए हैं,
पौद्गलिक भाव से सर्वथा/(सदा) मुक्त हुए हैं।।
अंशअंशी भाव से जो जितना मुक्त हुए हैं,
उतने ही उत्थान अवश्य उनके हुए हैं।
अंश अंशी भाव से जितना प्रकाश होता है,
उतना ही अन्धकार अवश्य दूर होता है।।
प्रकाश से होता है पूर्ण अन्धकार नाश,
मुक्ति होने पर होता है पूर्ण पतन का नाश।
'सत्यं शिवं सुन्दरं' इसे ही कहते हैं,
'कनकनन्दी' का सर्वोच्च लक्ष्य उत्थान रूप/(भाव) है।।

सेमारी (उदयपुर) राज. दि. 2/4/2011 रात्रि 3.11

मेरा ही मुझसे महासंग्राम (42)

– आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज – 1. छोटी-छोटी गैया, 2. अच्छा सिला दिया...)

महासंग्राम महासंग्राम, विश्व का सबसे है महासंग्राम।
मुझसे मेरा ही है महासंग्राम, अविरल गतिशील महासंग्राम।।
महासंग्राम-महासंग्राम...।।टेक।।

अनादिकाल से स्व वैभव हारा, कर्मशत्रु ने मुझे बहुत मारा।
विभिन्न गति में बान्धा व सर्वस्व हारा, इसलिए बदले में संग्राम छेड़ा।।
महासंग्राम...महासंग्राम...।।(1)।।

ज्ञान दर्शन सुख वीर्य अनन्त, ज्ञानावरणादि ने लूटा सर्वस्व।
अभी और मैं न हार मानूँगा, एक भी शत्रु को नहीं छोड़ूँगा।।
महासंग्राम....महासंग्राम...।।(2)

आत्मविश्वास से मोह को हनूँ, समता के बल पर कषाय हनूँ।
ध्यान की अग्नि से घाति जलाऊँ, रत्नत्रय शक्ति से शत्रु विनाशूँ।।
महासंग्राम....महासंग्राम...।।(3)

मोह से विपरीत ज्ञान हुआ था, मेरा शत्रु बाह्य में मैंने सोचा था।
इसलिए बाह्य युद्ध अनन्त लड़ा, अनन्तशत्रुओं को तैयार किया।।
महासंग्राम....महासंग्राम...।।(4)

भरत व बाहुबली युद्ध जो हुआ, राम व रावण का संग्राम हुआ।
स्पार्टा व विश्वयुद्ध जितने हुए, मेरे बाह्य युद्धके रूपक हुए।।
महासंग्राम....महासंग्राम...।।(5)

अन्तरंग शत्रु के नाश होने से, बहिरंग संग्राम कहाँ है होते।
कर्म के बिना जन्म-मरण कहाँ, बीज के बिना वृक्ष फल भी कहाँ।।
महासंग्राम....महासंग्राम...।।(6)

बहिरंग संग्राम से संग्राम जन्में, शत्रुता से शत्रुता के फल ही फले।
अन्धेरा को अन्धेरा नाश न करे, प्रकाश के द्वारा ही अन्धेरा टले।।
महासंग्राम....महासंग्राम...।।(7)
तीर्थंकर भी चक्रवर्ती भी हुए, तथापि वे अनन्त सुखी न हुए।
स्व-विजय से विश्व विजयी हुए, अनन्त वैभव के स्वामी वे हुए।।
महासंग्राम....महासंग्राम...।।(8)
'कनकनन्दी' सदा स्व संग्राम रत, स्व-शत्रु नाश से बनूँ सम्राट।
अजात शत्रु बनूँ मेरी भावना, सर्वजीवजयी बने ये ही कामना।।
महासंग्राम....महासंग्राम...।।(9)

भाव गीत

भाव ही भाग्य एवं भावी निर्माता (43)

(राग -1. कोयाये स्वर्ग, कोथाये नर्क के बोले ते बहुदूर - रवीन्द्र संगीत 2. तुम ही मेरा उद्धार करो... हे जननी दिव्यवाणी...बंगला राग)

कहाँ है स्वर्ग कहां है नर्क, कोई कहे बहु दूर ऽऽऽ...2।
भाव के मध्य में स्वर्ग नरक, भाव में है सुरासुर ऽऽऽ...2।।
भाव है धर्म भाव अधर्म, भाव में ही पुण्य-पाप..2।
बन्ध व मोक्ष भी भाव में संस्थित, अग्नि में यथा है ताप..2।।
भाव से ही भाग्य निर्माण होता है, भाग्य से भावी निर्माण..2।
भाव का निर्माण जो यथा करे है, तथा ही भावी निर्माण...2।।
जब ही भाव का पतन होता है, तब से भाग्य पतन...2।
भाग्य पतन से भावी भी पतन, सत्य-तथ्य यह जान..2।।
तुम्हारे भाव के तुम ही निर्माता, पोषक व नष्टकर्त्ता...2।
अतएव तुम तुम्हारे त्रिदेव, अन्य न कर्त्ता व धर्त्ता...2।।

ब्रह्माण्ड/(संसार) तुम में तुम ही संसार, संसार तारक तुम...2।
तुम्हारा भाव ही सब में निहित, यथा जलमय हिम..2।।
स्वयं को जानो स्वयं को मानो, स्वयं का करो निकास...2।
भौतिक विकास ही तुम्हारा, नहीं है सर्व विकास..2।।
भौतिक तन-मन-आध्यात्मिक, श्रेष्ठ है उत्तरोत्तर...2।
भौतिकता को ही सर्वस्व मानना, तुम्हारा निम्न विचार...।।
तुम हो अमृत आध्यात्मिक रूप, भौतिक है शव रूप..2।
आत्मा से रहित शव के समान, समस्त भौतिक रूप..2।।
'कनकनन्दी' तो भावना स्वरूप, आध्यात्मिक तव रूप..2
भौतिक शरीर-मन से परे है, तू सच्चिदानन्द स्वरूप...2।।

टोकर, दि./17/6/2011, रात्रि 11.36

आध्यात्म रहस्यवादी कविता

उड़िया-बंगला राग

(आध्यात्मिक कर्म सिद्धान्त, मनोविज्ञान क्वाण्टम भौतिक जीवन प्रबन्धनात्मक रचना)

स्व का विश्वदर्शन (44)

(भाव भाग्य एवं भावी)

आचार्य कनकनन्दी

(राग - वन्दे मातरम्...तुम्हीं हो माता...रख लाज मेरी...प्रभु हमपे कृपा...सत्वेषु मेत्री वन्दे स्वात्मना (निजात्मन)...वन्दे परात्मन...वन्दे विश्वात्मन...कहाँ भी नहीं...यहाँ ही सही...)

सुख-दुख व जन्म मरण...2...
हम ही कर्त्ता, हम ही भोक्ता... हम ही कर्म, हम ही धर्म

मोही न जाने इसका मर्म... भ्रम से करे अनेक कर्म...

जीव का भाव, जीव का कर्म.... कर्मानुसार मिलता जन्म

परिणाम से परिणाम मिलता....भावानुसार भाग्य बनता

भाग्यानुसार भावी बनता... तुम (जीव) ही भावी निर्माण कर्त्ता...

स्वर्ग भी तू ही, नर्क भी तू ही... बन्ध भी तू ही, मोक्ष भी तू ही

जो तू ही देता, वो तू ही पाता...अच्छा देने से अच्छा ही पाता

प्रतिबिम्ब व प्रति छाया तू... बिम्ब व वस्तु रूप ही तू...

बीजानुसार वृक्ष बनता... वृक्षानुसार बीज बनता

तुम ही सुप्त, तुम जागृत... तुम ही शक्ति तुम ही व्यक्ति

तुम ही शून्य, तुम ही पूर्ण... तुम ही ब्रह्म, परम ब्रह्म...

स्वयं का ज्ञान, विश्व विज्ञान...स्व विश्वास, आत्म विश्वास

स्वयं की प्राप्ति सम्पूर्ण लब्धि... स्वयं की सिद्धि सर्वार्थसिद्धि

स्वयं की शान्ति विश्व की शान्ति... स्व निर्माण, परिनिर्माण..

स्व-अमित्र विश्व अमित्र... आत्म पतन सर्व पतन

आत्म-संक्लेश आत्म की हत्या...आत्म विकृति सर्व विकृति

आत्मा से भ्रष्ट समग्र भ्रष्ट... स्वयं विशेष स्वयं वैशिष्ट्य...

भौतिक अणुमय यथा ब्रह्माण्ड...तथा ही ब्रह्म/(जीव) स्वयं ब्रह्माण्ड

स्कन्ध से अणु पृथक् यथा...शुद्ध भाव से जीव ही तथा

'कनकनन्दी' का समग्र भाव.... स्व-पर-विश्व में हो सद्भाव

सेमारी, दि. 1-8-2011, रात्रि 12.48

प्रसिद्धि से अशान्ति तो सिद्धि से शान्ति (45)

- आचार्य कनकनन्दी

(राग - बंगला... तुम ही मेरा...)

प्रसिद्धि और सिद्धि में, होता है महत् (महान्) अन्तर

प्रसिद्धि है अशान्ति सागर, सिद्धि है शान्ति सागर..स्थायी...

सिद्धि के हेतु चक्रवर्ती भी, त्यागे विशाल साम्राज्य।

तीर्थंकर, बुद्ध, ऋषि, मुनि आदि, इसके दृष्टान्त प्रसिद्ध।।

आदेय व यशकीर्ति नामकर्म (है), प्रसिद्धि के कारण।

सिद्धि है स्वात्मोपलब्धि, अनन्त शान्ति कारण।।

प्रसिद्धि के बिना सिद्धी से ही, मिलती है अनन्त शान्ति।

शान्ति के बिना करोड़ों प्रसिद्धि, नहीं दे पाती है तृप्ति।।

प्रायः प्रसिद्धि मिलती है, मृत्यु के ही अनन्तर।

ऐसी प्रसिद्धि से क्या लाभ है, जो मिले मृत्यु अनन्तर।।

जीते जी जो प्रसिद्धि चाहते, वे चाहते दुःख अपार।

प्रसिद्धि प्राप्ति हेतु वे करते, विविध विचित्र आचार।।

ढोंग-पाखण्ड मायाचार से, करते अहं का विस्तार।

इसके हेतु धन-जन द्वारा करते बाह्य प्रचार।।

प्रसिद्धि के बाद और भी शान्ति, हो जाती है दूर/(नदारत)।

प्रसिद्धि की रक्षा, वृद्धि हेतु, करता है मिथ्याचार।।

इसके कारण जीवन सारा, हो जाता है रस हीन।

अस्त-व्यस्त सन्ताप ग्रस्त, विवेक विकासहीन।।

सुगुण व सुकृत से मिलती है स्वयं प्रसिद्धि।

सुगन्धित पुष्प से यथा फैलती स्वयं सुगंधी।।

ऐसी प्रसिद्धि सहज होती, इससे न होता है मान।
सुगुण सुकृत वृद्धि करो, प्रसिद्धि का बढ़े मान।।
इससे अन्यथा जो चाहे, प्रसिद्धि वो अभिमानी।
सुनाम न हो तो क्या हुआ, कुनाम चाहे अज्ञानी।।
रावण कंस व दुर्योधन सम, जो है बने अभिमानी।
स्व-पर दुःखदायी वह है, सो न माने (जाने) अभिमानी।।
इसलिए तो आत्मिक शान्ति, विकास करने हेतु।
ख्याति पूजा व लाभ रहित, साधना मोक्ष के हेतु।।
इसलिए मैं सिद्धि चाहूँ, न चाहूँ मैं प्रसिद्धि।
एक सिद्धि के समक्ष व्यर्थ, करोड़ों प्रसिद्धि।।
'कनकनन्दी' स्व रचना द्वारा, सुव्यक्त करे स्वभाव।
शान्ति के प्रार्थी महामानव, करो है निष्काम भाव।।

सेमारी, दि. 4-8-2011, मध्याह्न - 2.24

सम्पूर्ण विकास के सूत्र (46)

(समग्र स्वतन्त्रता से ही समग्र विकास)

- आचार्य कनकनन्दी

(राग - सुनो सुनो है दुनियाँ वालों...)

सुनो सुनो है ! दुनियाँ वालों, सर्व संन्यास का सच्चा रहस्य।
जिससे प्राप्त होता है सत्य, आत्मिक शान्ति श्रेष्ठ विकास।। स्थायी..
सर्व संन्यास में होता है त्याग, बहिरङ्ग अन्तरङ्ग बन्धन।
धन जन व ख्याति पूजा लाभ, क्रोध मान माया लोभ बन्धन।।
विवाह से पति-पत्नी बन्धन, जिससे जन्म से अन्य बन्धन।

सन्तान परिवार समाज कृषि व्यापार से नौकरी बन्धन।।
संकीर्ण पन्थ-मत-शिक्षा कानून, राजनीति सरकारी बन्धन।
लौकिक शिक्षा व भौतिक ज्ञान, परम विकास में बाधक जान।।
इन बन्धनों से जकड़ा मानव, न कर पाये पूर्ण विकास।
शिक्षा संस्कार सदाचार शान्ति, सत्य विज्ञान व आत्म विकास।।
इसी हेतु तो तीर्थंकर बुद्ध गणधर साधु हुए संन्यासी।
राजवैभव व सत्ता सम्पत्ति सर्व बन्धों से हुए विरागी।।
शान्ति, कुन्थु व अरहनाथ जो चक्री कामदेव तीर्थंकर थे।
तीनों ही पद के त्याग के कारण, सर्वोदय से युक्त हुए थे।।
इससे सिद्ध होता स्वयमेव, बन्धन में नहीं पूर्ण विकास।
यथा यथा बन्धन है त्याग, तथा तथा बढ़े आगे विकास।।
लेखक, चिन्तक, कवि, वैज्ञानिक, साधु, कलाकार, न्यायाधीश।
बन्धन में जो बन्धा होता, न कर पाये सही विकास।।
हेम पिञ्जर में बद्ध यथा ही, पक्षी न उड़ पाये विशेष।
तथा ही बन्धन आबद्ध मानव, न कर पाये सही विकास।।
अतएव सम्पूर्ण विकास प्रेमी, करो है बन्धन सर्व विनाश।
'कनकनन्दी' तो करे प्रयास, जिससे मिले है पूर्ण विकास।।

सेमारी, दि. 1-9-2011, रात्रि 12.53

आधुनिक सन्दर्भ में नारायण श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(नारायण श्रीकृष्ण की 16 कलाओं का विश्लेषणःआधुनिक-वैज्ञानिक दृष्टि से)

मेवाड़ की सुरम्य वादियों में स्थित सेमारी ग्राम में जन्माष्टमी पर्व का वास्तविक आनन्द तब आया जब शान्ति और क्रान्ति के समन्वयक विश्व दृष्टा वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ने स्थानीय विद्या निकेतन विद्यालय के सभागृह में उपस्थित छात्र-छात्राएँ-शिक्षकवृन्द एवं ग्राम के मान्य नागरिकगण-महिलाओं आदि को नारायण श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भों से जोड़ते हुए कहा गोरक्षा-पशुरक्षा-पर्यावरण-विज्ञान-कला-क्रान्ति-शान्ति आदि बहुआयामी दृष्टि से वर्तमान युग के लिए अत्यन्त अनुकरणीय, प्रासंगिक बताया। आज से 5249 वर्ष पहले नारायण श्रीकृष्ण का जन्म हुआ उस समय चन्द्र उदित हो रहा था। इस क्रान्तिकारी महापुरुष का जन्म जेल में हुआ। इस सन्दर्भ को वर्तमान में जेल में जीवन बिताने वाले नेलसन मण्डेला, गाँधी, अण्णा आदि से जोड़कर शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से बताया मात्र रटन्त शिक्षा से कोई महान् कार्य नहीं कर सकता, इसके लिए महान् लक्ष्य, प्रगतिशीलता, कर्मठता, प्रामाणिकता, सादगी आदि सद्गुणों के माध्यम से ही व्यक्ति-परिवार-समाज-राष्ट्र-विश्व में शान्ति-क्रान्ति एवं प्रगतिशीलता सम्भव है। नारायण श्रीकृष्ण के गोपालक, गोवर्धन स्वरूप को गौरक्षा, पेड़-पौधों एवं पर्यावरण सुरक्षा से, उनके नटखटी स्वभाव से आउटडोर गेम खेल, स्वास्थ्य आदि का सम्बन्ध जोड़ा। आधुनिक विज्ञान जिस दूध को पूर्ण आहार (फुल फूड) व स्वास्थ्य बुद्धिवर्धक माना है उस दूध-मलाई का प्रयोग बाल श्रीकृष्ण मटकों से करते थे। गुरुदेव ने उपस्थित बालकों व माताओं को इस सन्दर्भ में उनके कर्त्तव्य व अधिकारों से अवगत कराया। नारायण श्रीकृष्ण के जीवन के अन्य भी प्रसंग जैसे कंस व पूतना

का वध, जरासंध वध, कालिया नाग मर्दन द्वारा जल प्रदूषण दूर करना, रासलीला, सुदामा के चावल खाकर मैत्री, पतितोद्धार, सर्वोदय, अन्त्योदय का सन्देश दिया। श्रीकृष्ण ने बांसुरी वादन के माध्यम से शान्ति बुद्धि शब्द प्रदूषण रहित वातावरण संगीत चिकित्सा की शिक्षा दी। आधुनिक महान् वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटीन ने प्रयोग में लाकर $E=MC^2$ एवं सापेक्षता के सिद्धान्त दिये। इस अवसर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य श्री सिद्धार्थ कुमार जैन व विद्यानिकेतन के प्रधानाध्यापक श्री देवेन्द्र जी चौबीसा ने भी अपने विचार रखे। विद्यालय के बालक-बालिकाओं ने भी प्रार्थना-गीत-नृत्य के माध्यम से अच्छी प्रस्तुति दी।

दि. 23-8-2011 शुभाकांक्षा सह - मुनि सुविज्ञसागर, संघस्थ - आ. श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

फ्लोरिडा वि. वि. अमेरिका से आगत प्रो. डॉ. बिटनी बॉमन की धर्म एवं दर्शन सम्बन्धी चर्चा

आचार्य श्री कनकनन्दी जी से

आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव जैनधर्म एवं भारतीय संस्कृति को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भारत के विश्वविद्यालय से लेकर विश्व स्तर पर प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रयासरत है जिसके अन्तर्गत धार्मिक एवं वैज्ञानिक स्वशिष्यों को प्रशिक्षण देकर उनके माध्यम से भारत के वि. वि. से लेकर विदेश के वि.वि. व विश्व धर्म संसद तक धर्म प्रचार कार्य में प्रयासरत हैं, इसके अन्तर्गत आज (दि. 4-6-2011) फ्लोरिडा अन्तर्राष्ट्रीय. वि. वि. अमेरिका से डॉ. प्रो. बिटनी बॉमन तथा डॉ. नारायणलालजी कछारा (आ. श्री के स्वशिष्य) सेमारी ग्राम में आकर साधुओं की आहार चर्या के अवलोकन के बाद आचार्य श्री से जैन धर्म के विभिन्न पक्षों को लेकर जिज्ञासा प्रगट की एवं आ. श्री ने उनके प्रश्नों का उत्तर सविस्तार, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक पद्धति से समाधान किया। डॉ. बामन ने अमेरिकन अंग्रेजी में प्रश्न किया एवं आ. श्री ने भारतीय अंग्रेजी में समाधान किया। मध्य-2 में डॉ. कछारा द्विभाषी का कार्य करते रहे।

सबसे पहिले आ. श्री ने उन्हें अंग्रेजी में ही भारत आने का एवं साधु-सन्तों के दर्शन करने हेतु उन्हें आशीर्वाद व धन्यवाद दिया फिर उन्हें आ. श्री ने उनके उद्देश्य एवं कार्य के बारे में जानकारी ली, विशेषतः प्रो. बिटनी की जिज्ञासा जैन धर्म के आध्यात्मिक-वैज्ञानिक-पर्यावरण सम्बन्धी रही जिसका समाधान आ. श्री ने वैज्ञानिक-आध्यात्मिक दृष्टिकोण से दिया। आ. श्री ने भी उन्हें पाश्चात्य संस्कृति की विशेषताओं के बारे में प्रश्न किया और उन्होंने उसका समाधान भी किया। आ. श्री ने उन्हें यह बताया कि विज्ञान सत्य के मार्ग पर होने पर भी परम सत्य में पहुँचा

नहीं है तथा वैज्ञानिक भी कोई परमज्ञानी नहीं है तथा धर्म विशेषतः जैन धर्म परम विज्ञान है तथा सच्चे साधु परम वैज्ञानिक है और वैज्ञानिक प्राथमिक साधक स्वरूप साधु है तथापि प्रायोगिक रूप में विज्ञान व वैज्ञानिक अधिक विनम्र, प्रगतिशील, उदार हैं किन्तु अधिकांश धार्मिक लोग आध्यात्मिक सत्य तथ्य से रहित रूढ़िवादी, संकीर्ण हैं, इसलिए अभी की आवश्यकता धर्म एवं धार्मिकों को विज्ञानमय एवं वैज्ञानिकों को धर्ममय बनना।

जब डॉ. कछारा से कुछ दिन पहिले पता चला कि प्रो. बिटनी आ. श्री से चर्चा करने के लिए आ रहे हैं तब आ. श्री ने ''विश्व शान्ति पाठ पढ़ाते हैं-भारतीय सूत्र'' (वैश्विक ज्ञान-विज्ञान है भारतीय ज्ञान) नामक कविता की रचना की थी जिसके माध्यम से आ. श्री ने उन्हें प्रायः आधा घण्टा तक अंग्रेजी में जैन धर्म के बारे में तथ्यात्मक जानकारी दी जिससे वे बहुत प्रसन्न एवं प्रभावित हुए एवं ई-मेल के द्वारा सम्पर्क करने के लिए कहा एवं अभिभूत होकर निवेदन पूर्वक पुनः पधारने का मानस दर्शाया।

आ. श्री ने स्व एवं स्व वैज्ञानिक शिष्यों द्वारा रचित अंग्रेजी साहित्य डॉ. विटनी को प्रदान किया जिससे वे बहुत आनन्दित हुए।

प्रो. डॉ. बिटनी का अभिमत

Thanks for this poetry. It is a tribute to planetary becoming a recognition that we human being live in a multi-perspectival worte, evolving toward an unknown future.

Your work on "religion & science" is truly inspiring me to work haider toward a better planetary future for all life on the planet.

In search of the many truths, May I never fall into the Slumber of ignorance & blind faith" whatever form it may take. In gratitude,

Whitney Bauman, Ph.d

Assistant professar of religion and science

FUIB- FLORIDA INTERNATIONAL UNIVERSITY

आचार्य श्री कनकनन्दी – साहित्य कक्ष की सूची

अ. भारत के 14 प्रदेशों के 57 विश्वविद्यालयों में साहित्य कक्ष की स्थापना अभी तक हो चुकी है आगे प्रायः 100 वि. वि. में स्थापना होगी। विश्व विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर साहित्य स्थापित होने की सूची–

1. श्री दि. जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, कविनगर, गाजियाबाद (उ. प्र.)
2. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, शास्त्रीनगर, गाजियाबाद (उ. प्र.)
3. श्री दि. जैन मन्दिर, दादरी, गाजियाबाद (उ. प्र.)
4. श्री दि. जैन मन्दिर, ऐल्लकजी, मण्डोला, गाजियाबाद (उ. प्र.) (श्री विज्ञानसागर द्वारा स्थापित)
5. श्री दि. जैन मन्दिर, बुलन्दशहर (उ. प्र.)
6. प. पू. मुनि श्री विहर्षसागरजी
7. श्री सिद्धान्त तीर्थक्षेत्र, शिकोहपुर, गुड़गाँव (हरियाणा)
8. श्री दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, वसुन्धरा, गाजियाबाद (उ. प्र.)
9. श्री दि. जैन मन्दिर, शंकरपुर, शाहदरा, दिल्ली
10. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, वहलना, मुजफ्फरपुर (उ. प्र.)
11. डॉ. (पं.) ताराचन्द्र पाटनी ज्योतिषाचार्य, 1132, मनिहारों का रास्ता, जयपुर (राज.)
12. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन पुस्तकालय, गोरेगाँव, मुम्बई (महा.)
13. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर लाईब्रेरी, सेक्शन–16, फरीदाबाद (हरियाणा)
14. श्री एल. डी. जैन, अनिल जैन, श्री महावीर भगवान् दि. जैन मन्दिर, हरिनगर, घण्टाघर, दिल्ली

15. ऋषभाञ्चल जैन मन्दिर, ध्यान केन्द्र, मोरटा, गाजियाबाद (उ. प्र.)
16. श्री वासुपूज्य पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, वांधला, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)
17. श्री दि. जैन मन्दिर, सासनी, अलीगढ़ (उ. प्र.)
18. श्री दि. जैन मन्दिर, राधोपुरा, शाहदरा, दिल्ली
19. श्री दि. जैन मन्दिर, कैलाशनगर, गली-12, शाहदरा, दिल्ली
20. श्री दि. जैन मन्दिर, कैलाशनगर गली-12, शाहदरा, दिल्ली
21. श्री दि. जैन मन्दिर, राधोपुरा
22. श्री दि. जैन मन्दिर, रघुवरपुरा, दिल्ली
23. श्रीमती कुंकुम जैन, श्री विनोद कुमार जैन I-3/9 कृष्णानगर, दिल्ली
24. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, सूरजमल विहार, दिल्ली
25. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, सूरजमल विहार, दिल्ली
26. श्री रूप कुमार जैन, A-236, सूरजमल विहार, दिल्ली
27. श्री अनिल कुमार अग्रवाल जैन, दिलशाद गार्डन मन्दिर, दिल्ली
28. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर, घण्टाघर, गाजियाबाद (उ. प्र.)
29. श्री दि. जैन मन्दिर, त्रिलोकधाम तीर्थ, बड़ागाँव, बागपत (उ. प्र.)
30. श्री चन्द्रवती जैन महिलाश्रम, बड़ागाँव, बागपत (उ. प्र.)
31. श्री दि. जैन मन्दिर, सञ्जयनगर, गाजियाबाद (उ. प्र.)
32. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, मुनीम कॉलोनी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)
33. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, पंचायती मन्दिर, अनुपुरा, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
34. श्री हस्तिनापुर तीर्थ क्षेत्र पुराना मन्दिर, हस्तिनापुर, मेरठ (उ. प्र.)
35. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, जनरलगंज, कानपुर (उ.प्र.)
36. श्री दि. जैन मन्दिर, मसूरी रोड, देहरादून (उत्तरांचल)

37. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, अशोकनगर Phase I, नई दिल्ली
38. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली
39. श्री भगवान महावीर दि. जैन मन्दिर, N-10 ग्रीनपार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली
40. श्री दि. जैन मन्दिर, नोएडा सेक्टर 29, नोएडा (उ.प्र.)
41. श्री दि. जैन मन्दिर, सेक्टर 7, अहिंसा विहार, नई दिल्ली (रोहिणी)
42. उत्तर प्रदेश भवन लाईब्रेरी, शिखरजी, जि. गिरीडीह (झारखण्ड)
43. श्री दि. जैन मन्दिर, मुंगाणा, जि. उदयपुर (राज.)
44. श्री दि. जैन मन्दिर, श्री महावीरजी पुस्तकालय, श्री महावीरजी (राज.)
45. श्री दि. जैन मन्दिर लाइब्रेरी, चूलगिरी, जयपुर (राज.)
46. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर लाइब्रेरी, सेठी कालोनी, जयपुर (राज.)
47. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, साहिबाबाद, गाजियाबाद
48. श्री दि. जैन मन्दिर, जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर, मेरठ (आ. ज्ञानमति माताजी)
49. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, पुस्तकालय, जैन मोहल्ला, पानीपत (हरियाणा)
50. श्री दि. जैन मन्दिर, अहियागंज, लखनऊ (उ.प्र.)
51. श्री दि. जैन मन्दिर, मुन्नालाल कागजी धर्मशाला, लखनऊ (उ.प्र.)
52. श्री दि. जैन मन्दिर, विवेक विहार, शाहदार, दिल्ली
53. श्री रतनलाल जैन लाइब्रेरी, युसूफ सराय, नई दिल्ली
54. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर (पुराना), बड़ागाँव, बागपत